मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा

डॉ. मो. गं. दीक्षित, पीएच. डी.
सागर विद्यापीठ

मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा

लेखक
डॉ. मोरेश्वर गं. दीक्षित, Ph. D.
पुरातत्त्व–विभाग
सागर विश्वविद्यालय

शक १८७६] मूल्य छः रुपिया [इ. स. १९५४

निवेदन

मध्य प्रदेशीय पुरातत्त्व-विषयक पुस्तक में विषय-प्रवेश के लिये विपुल शब्दावली अनावश्यक है। कतिपय विगत वर्षों तक ऐसा समझा जाता था कि इस राज्य में कोई महत्त्वपूर्ण प्राचीन अवशेष नहीं हैं, परन्तु कुछ अंशों में इसका कारण पुरातत्त्व विभाग की यह वैमुखी नीति थी, जिसके द्वारा इस राज्य को दो पृथक् मण्डलों में विभक्त कर दिया गया था और जिनके केन्द्र एक दूसरे से बहुत दूर पटना एवं पूना में थे। हाल ही में सुविधाजनक एवं समीपस्थ केन्द्र भोपाल में एक नये मण्डल की स्थापना से यह कठिनाई अब दूर कर दी गई है। पिछले पश्चिमी और पूर्वीय मण्डलों के अधिकारियों को अपने क्षेत्रों में अपने कर्तव्य-भार के साथ इस राज्य के पुरातत्त्वान्वेषण के समीचीन कार्य के लिये समय-लाघव रहता था। श्री कनिंघम के प्रारंभिक निरीक्षणों के उपरान्त कज़िन्स ने पूर्वकालीन अवशेषों की एक कार्यवाहक सूची बनाई। श्री राखलदास बानर्जी ने त्रिपुरी के हैहय राजाओं एवं उनके भग्नावशेषों पर एक खोज-विवरण प्रकाशित कर कल्चुरि-राजवंश के संबंध में बहुत कुछ काम किया, किन्तु उनका कार्य मुख्यतया रीवाँ-राज्य और मध्यप्रदेश की उत्तरी सीमाओं तक ही सीमित रहा। डॉ० भाण्डारकर ने छत्तीसगढ के कई शिलालेख सूचीबद्ध किये; परन्तु तब से पुरातत्त्व-सर्वे के अधिकारियों के द्वारा इस दिशा में कोई विशेष कार्य किया गया नहीं प्रतीत होता। इस प्रान्त के पुरातत्त्व के विषय में हमारा जो भी ज्ञान है, वह मुख्यतया उन विद्वानों के वैयक्तिक प्रयत्न-फल से है, जो अपने जन्म अथवा व्यवसाय के किसी रूप से इस क्षेत्र से संबंधित रहे हैं। इसमें अत्युक्ति नहीं है कि भूतपूर्व डिप्टी कमिश्नर डॉ० हीरालाल के प्राकार्यों ने बड़ी योग्यता से इस विषय का प्रकाश-दीप वहन किया। उन्होंने मध्यप्रान्त और बरार के लेखों की वर्णनात्मक सूची दो बार प्रकाशित की और तत्संबंधी ज़िला गॅज़ेटियरों में पुरातत्त्व के पूर्णांश को स्वयं लिखा। इस प्रशस्त विद्वान् ने मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व के लिये बहुत अध्यवसाय से कार्य किया और जन गणना अधिकारी के रूप में जनता एवं इस सेवा का घनिष्ट ज्ञान होने के कारण उन्हें पुरातत्त्व की पृष्ठभूमि तथा सामान्य रूप-रेखा के ज्ञान में अधिक सहायता मिली। उनके कार्य की प्रत्येक सीढ़ी पर ऐसा प्रतीत होता है कि इस परिज्ञान-शाखा की अज्ञात छिन्न-शृंखला के विषय में उनसे अधिक और किसी को ज्ञात नहीं था। तथापि वे मुख्य रूप से इतिहासकार थे। प्रागैतिहासिक गवेषण के क्षेत्र में स्वर्गीय रायबहादुर मनोरंजन घोष तथा कर्नल डी० एच० गॉर्डन जैसे स्वच्छन्द गवेषकों को अधिक श्रेय प्राप्त है। विशेष रूप से श्रेय है कर्नल गॉर्डन को, जिन्होंने उन अनेक गुहाश्रयों में प्राप्त तथाकथित प्रागैतिहासिक चित्रों के समय को सुदृढ आधार पर निर्धारित करने में बहुत कार्य किया, जो बहुत पहले से ज्ञात थे। भारतीय पुरातत्व विभाग के वर्तमान प्रमुख संचालक श्री अमलानन्द घोष ने पचमढ़ी और उसके चतुर्दिक् नवीन कतिपय गुहाश्रयों की खोज करके बड़ी योग्यता से यह स्थिर किया कि इस कार्य का एक बहुत बड़ा क्षेत्र यहाँ पर है। स्वर्गीय डॉ० जायसवाल के प्रयत्न न्यूनाधिक उस उत्साही के समान रहे हैं; जिन्होंने विशेषतया गुप्त-वाकाटक काल के इतिहास की व्याख्या करने में अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन करने का अच्छा प्रयत्न किया। परन्तु दान-पत्रों और शिलालेखों जैसी मूल सामग्री के आधार पर महत्वपूर्ण विवरण प्रस्तुत करने का वास्तविक श्रेय महामहोपाध्याय प्रो० वा० वि० मिराशी को है। उन्होंने अबतक प्राप्त लगभग सभी वाकाटक लेखों का सम्पादन किया है। शीघ्र ही नागपुर के संग्रहालय के समक्ष सीरपुर के अल्प-स्थान संग्रहालय से अतिरिक्त रायपुर, बिलासपुर तथा यवतमाल के नये संग्रहालय प्रस्तुत हुए। परन्तु यह कहना आवश्यक है कि अधिकारियों के द्वारा प्रकाशित कार्य स्वच्छन्द गवेषकों के कार्य की अपेक्षा बहुत कम है। निस्सन्देह नागपुर संग्रहालय ने दो विवरण-पुस्तकें तथा राज्य में प्राप्त सिक्कों

के वार्षिक विवरण प्रकाशित कर इस कार्य का अच्छा श्रीगणेश किया। वार्षिक विवरण प्रकाशित करने की दृष्टि से नागपुर संग्रहालय देश में अब भी अग्रगण्य है। फिरभी न्यूनाधिक रूप में यह कार्य संग्रहालय में कार्य करने वाले अधिकारियों की योग्यता पर निर्भर करता है और संग्रहालय से संबंधित मुद्रा-विशेषज्ञ श्री सुवूर ने बहुत से विशेषतया मुस्लिम मुद्रा-शास्त्र से संबंध रखने वाले लेख प्रकाशित कर बहूमूल्य सेवायें की हैं। छत्तीसगढ़ में, जो अबतक उपेक्षित प्रान्त था, पं. लोचनप्रसाद पाण्डेय ने पथ-प्रदर्शक सेवायें की। उन्होंने समय समय पर बहुत से लेख, सिक्के, दान-पत्र एवं अन्य प्राप्त पुरातत्त्व-सामग्री प्रकाशित की और यह गर्व का विषय है कि अपनी अवस्था एवं सीमित कार्य-शक्ति पर भी वे यह कार्य कर रहे हैं। भारत-सरकार ने कलचुरि-चेदि सम्वत में अंकित बहुत से लेखों का एक संग्रह प्रकाशित करने की उपयोगिता का सुन्दर विचार किया है और इस के लिये प्राचीन लेखान्वेषक प्रो० मिराशी से अच्छा और किसी का भी चुनाव नहीं हो सकता, क्योंकि उन्होंने पहले ही भारतीय संस्कृति के विभिन्न अंगों विशेषतया उपलब्ध शिलालेखों एवं सिक्कों पर गवेषण-कार्य के प्रकाशन से बहुमूल्य सेवायें की हैं। यवतमाल के शारदाश्रम, छत्तीसगढ़-गौरव-समिति, मध्यप्रान्त-संशोधन-मण्डल एवं अन्य परिशोध-संस्थाओं के द्वारा बहुत उपयोगी कार्य हुआ है, यद्यपि इनका कार्य-क्षेत्र सीमित रहा है।

उनके प्रयत्नों के होते हुए भी, मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की वर्तमान स्थिति अद्यापि असन्तोषप्रद है। यद्यपि इस विषय की स्थूल रूपरेखा विदित है, तथापि कुछ ऐसी विस्तार की बातें हैं, जो परीक्षण और निरीक्षण की आवश्यकता रखती हैं। इसीलिये इस रेखाचित्र के उपस्थित करते हुए लेखक को जो कतिपय श्रृंखला कड़ियों की विश्रृंखलता, गत्यवरोध तथा पथगर्त्त प्राप्त हुए हैं, उनके लिये क्षमायाचना अनावश्यक है। पाठकों के सम्मुख इस पुस्तक को रखते समय मध्यप्रदेश की वर्तमान राजनैतिक सीमायें ही लेखक की दृष्टि में रही हैं, किन्तु प्राक्प्रकाशनों में इस बात के न होते हुए ऐसे कतिपय विवरणों के छूट जाने की संभावना है। मेरा उद्देश्य एक स्पष्ट चित्र के उपस्थित करने का है, जो ऐसी प्राप्त सामग्री के आधार पर उपस्थित किया जा सके, जिसपर सन्निवेश स्पष्टतया पुस्तकान्त में दिये गये विभाजन चित्रों और पुस्तक-सूची में किया गया है। समस्त प्रान्त के परिभ्रमण से अत्रोल्लिखित प्रत्येक वस्तु के यथेष्ट परिचय और पूर्ण प्रान्त के परिभ्रमण न कर सकने से मेरी ज्ञानोनता आश्चर्य का विषय नहीं। एतदर्थ और अन्य भूलों के लिये, जो इस छोटी पुस्तिका में आ गई हैं, मैं पाठकों से इस क्षेत्र में कार्य करने तथा अपने यथेष्ट निरीक्षण के द्वारा ऐसी त्रुटियों के दूर करने का आग्रह करता हूँ। वास्तव में इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य ही यही है। पुरातत्त्व की उन्नति यथासाध्य ऐसी ही सामग्री पर अवलम्बित है और यदि पाठकों को इस पुस्तक से पुरातत्त्व के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा मिल सकी, तो मैं अपने परिश्रम को पुरस्कृत समझूँगा। इस पुस्तक का यही लक्ष्य है कि यह पुरातत्त्वान्वेषी को उपेक्षित सामग्री की ओर इंगित करे और इसी प्रकार हमारे ज्ञान का निश्चितीकरण, संशोधन एवं विकास संभव है। बड़े हर्ष की बात है कि मध्यप्रदेश की सरकार एवं विश्वविद्यालय दोनों ही इस समस्या की ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं और उनकी दृष्टि में पुरातत्त्व विभाग केवल सजावट की वस्तु नहीं है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में मुझे कई महानुभावों से सहायता मिली है। यह पुस्तक मूलतः अंग्रेजी में लिखी गई थी और यदि हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान् डॉ० रामशंकर शुक्ल "रसाल" अपना अमूल्य समय देकर इसे सुन्दर हिन्दी में प्रस्तुत करने में सहायता न देते, तो इसे इतना आकर्षक एवं उपयोगी स्वरूप न प्राप्त हो पाता। मैं इस कृपा के लिये "रसाल" जी का हृदय से आभार मानता हूँ। पुरातत्त्व-विभाग के शोध-विद्यार्थी ने भी मेरे भार को बहुत हलका किया है। मैं सागर विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्रद्धेय डॉ० त्रिपाठी जी का बहुत कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपने गम्भीर दायित्व एवं अन्यान्य कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी इस

पुस्तक के लिये प्रभावोत्पादक भूमिका लिखने की कृपा की है। मध्यप्रदेश में सर्व प्रथम पुरातत्त्व की दृष्टि से होनेवाले त्रिपुरी- उत्खनन--कार्य के जन्मदाता वे ही हैं और उन्हीं की प्रेरणा से सागर विश्वविद्यालय में पुरातत्त्व विभाग की स्थापना भी हुई है।

इस पुस्तक से संबंधित कई बातों के विषय में मुझे भारत सरकार के पुरातत्त्व-विभाग के वर्तमान महासंचालक श्री अमलानन्द घोष के साथ विचार–विनिमय करने का लाभ मिला है। भारत सरकार के पुरातत्त्व-विभाग के सौजन्य से इस पुस्तक के कई चित्र, जिनके ब्लॉक विभाग के अधिकार में हैं, प्रकाशित हो सके हैं। नागपुर संग्रहालय के उत्साही अधीक्षक डॉ० पटवर्धन ने वहाँ की सामग्री का उपयोग करने में मुझे सदैव सहायता दी, जिसके लिये मैं उन्हें एवं उसी संग्रहालय के अन्य अधिकारी श्री रोडे को धन्यवाद देता हूँ। सागर विश्वविद्यालय के डॉ० चिपलूनकर अपने भूगर्भ--शास्त्र के असाधारण ज्ञान के द्वारा मध्यप्रदेश के प्रागैतिहासिक पुरातत्त्व के विभिन्न तत्वों पर उचित परामर्श देने की सदैव कृपा करते रहे हैं। वे सागर के निकट देवरी नामक स्थान पर पूर्व--पाषाणकालीन सामग्री का परीक्षण करने में लेखक के साथ गये थे। सामान्य पाठकों की सुविधा का ध्यान रखकर तद्विषयक शास्त्रीय पक्ष, जिसमें हमारी अभिरुचि रही है, का समुचित उपयोग नहीं किया जा सका। महामहोपाध्याय वा. वि. मिराशी का मैं बहुत अनुगृहीत हूँ, जिन्होंने मुझे कई अप्रकाशित ताम्र--लेखों के संबंध में सूचनायें और सम्मतियाँ प्रदान कीं। इसीभाँति पं० लोचनप्रसाद पाण्डेय ने भी छत्तीसगढ़ संबंधी विवरण--प्रकाशन में मेरी बड़ी सहायता की है। अतएव मैं उनका एवं महाकोशल ऐतिहासिक--समिति का विशेष रूप से आभारी हूँ। उन्होंने 'आपिलक' का सिक्का तथा 'बालकेसरी' की मुद्रा प्रकाशित करने में मुझे सहायता दी है। "सुषमा" सम्पादक ने 'काटा' शिलालेख का ब्लॉक भेजकर तथा शारदाश्रम, यवतमाल के श्री डी. वी. महाजन ने उसे यहाँ प्रकाशित करने की अनुमति देकर मुझे उपकृत किया है। श्री. जी. एन. जोशी, पूना, डॉ० वाय. के. देशपाण्डे, डॉ. महेशचंद्र चौबे, जबलपुर, तथा भारत इतिहास संशोधक मण्डल, पूना ने भी इसीभाँति पट्टनगर ताम्र--लेख का ब्लॉक एवं कुछ अन्य ब्लॉक देने की कृपा की है। भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग तथा उपर्युक्त इन महानुभावों तथा संस्थाओं की सहायता के के विना इस अप्रकाशित सामग्री का उपयोग कर सकना मेरे लिये संभव न था। इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट बम्बई, के द्वारा पाँच सौ रुपये का पुरस्कार मिला है अतएव मैं उन्हीं ट्रस्ट, के संचालकों का अतीव ऋणी हूँ। सागर विश्वविद्यालय के द्वारा भी इसी प्रकार से समुचित आर्थिक सहाय्यता मुझे प्राप्त हुआी है। पूना से आनन्द मुद्रणालय के व्यवस्थापक श्री. यशवंतराव जोशी ने इस पुस्तक पर विशेष ध्यान देकर यह संस्करण मुद्रित किया है। अतएव मैं पुनः उनके सौजन्य का सधन्यवाद उल्लेख करना उचित समझता हूँ।

अंत में मेरे श्वशुर श्री. धों. सि. पेंडसे का मैं ऋणी हूँ, जिन्होने सागर से मुद्रणालय दूर होने के कारण एतत्संबंधित कार्य का भार बहुत हलका किया है।

पुरातत्त्व विभाग
सागर विश्वविद्यालय
१५ जून १९५४

मोरेश्वर गं. दीक्षित

भूमिका

मध्यप्रदेश के इतिहास और उसकी संस्कृतिपर अद्यावधि यथेष्ट प्रकाश न पड़ने के कारण हताश होकर कुछ लोगों ने यह धारणा बनाली कि ऐतिहासिक दृष्टि से उक्त प्रदेश का कोई महत्त्व नहीं है। भूगोल एवं मानव-शास्त्र के अनुसार मध्यप्रदेश भारत का कटिबन्ध है जहाँ उत्तर और दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम का सम्मीलन स्वाभाविक था। प्राचीन इतिहास की रश्मियां भी संकेत करती हैं कि मौर्य, शातवाहन, गुप्त-वाकाटक कालों में भी मध्यप्रदेश से लोग परिचित थे। उन युगों के चिह्न, सिक्के तथा अन्य अवशेष इतस्ततः इसकी साक्षी देते हैं। यहाँ के कलचुरि वंश ने भारतीय इतिहास में गण्यस्थान भी प्राप्त कर लिया था। इन संकेतों से यह अनुमान होना चाहिए था कि यहाँ की मिश्रित संस्कृति विशेषता एवं मनोरंजकता से विभूषित होंगी। फिर भी दुर्भाग्यवश उपर्युक्त धारणा दृढ़ सी हो गई। फलतः इस प्रदेश के इतिहास और सांस्कृतिक व्यवस्था की उपेक्षा होती रही। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। जिनका प्राक् कथन में विचार करना शायद अनावश्यक और अवांच्छनीय होगा। तथापि दो एक बातों का उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है। इस प्रदेश में जल की कमी तथा जंगलों की अधिकता से इसकी ओर किसी काल में भी किसी ने विशेष ध्यान न दिया। यद्यापि यदा कदा कोई विजेता किसी दिशासे यहाँ पदार्पण करता किन्तु अच्छी तरह आकर्षित करने का कोई विशेष विधान न होने के कारण वह सीमा-प्रान्तों से अधिक दूर जाने के लिए उत्साहित न होता था। यहाँ की खनिज सम्पत्ति तथा वनज पदार्थों से यथेष्ट लाभ उठाने के साधन उनको प्राप्त न थे। इसके सिवा यहाँ की जनता भी तितरी–वितरी और वैभवशून्य सी थी। यहाँ प्रायः किसी राज्य-वंश के पदच्युत अथवा निर्वासित राजकुमार आकर बस जाते और उन्हे जो कुछ मिल जाता उसी में संतुष्ट हो कर निर्वाह करते। विदेशिओं या प्रबल आक्रमणकारिओं से त्रस्त और पीड़ित होकर कुछ स्वातंत्रप्रिय प्रदेश की प्राकृतिक शक्ति की शरण लेते थे। प्रदेश के चारों ओर प्रबल एवं समृद्धिशाली राज्यों की स्थापना होने तथा यहाँ की आर्थिक शक्ति की क्षीणता के कारण कोई प्रबल एक-छत्र साम्राज्य यहाँ स्थापित न हो सका। समय समय पर इस पर सीमोत्तर के राज्य आक्रमण करते रहते थे। संभव है कि इन्हीं कारणों से यहाँ के आदिम निवासिओं का सामाजिक संगठन और उनकी संस्कृति अभीतक सुरक्षित रही। यद्यपि यहाँ छोटे बड़े अनेक राज्य बने बिगड़े किन्तु मध्यप्रदेश के सौभाग्य का इतिहास वस्तुतः आधुनिक काल से ही आरम्भ हुआ-सा प्रतीत होता है।

जो कुछ थोड़े बहुत ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करने साधन हमको मिलते हैं वे भी ऐसे अस्तव्यस्त कष्ट साध्य हैं और दुर्लभ हैं कि विशेष प्रयत्न के बिना उन तक पहुँचना कठिन हैं। इस प्रदेश के शिक्षा–विधान में इतिहास की ऐसी अवज्ञा की गयी है जिसके कारण गंभीर इतिहासज्ञों की संख्या यहाँ बहुत कम है और न इतिहास के प्रति जनता का अनुराग जाग्रत हो सका।

स्वराज्य प्राप्त करने के पश्चात् हमारे आत्मीय शासकों का ध्यान इस ओर स्वाभाविकतया आकर्षित हुआ। श्री द्वारकाप्रसाद जी भूतपूर्व शिक्षा मंत्री तथा हमारे मुख्य मंत्री श्री रविशंकरजी शुक्ल के उत्साह, गुणग्राहकता, सक्रिय संरक्षता और सहायता से सागर विश्वविद्यालयने उस काम को, जो स्वर्गीय हीरालालजी, श्री लोचन प्रसादजा पाण्डेय और श्री. मिराशी जी व्यक्तिगत रूपेण करते थे, विधिवत् करने आयोजन प्रारम्भ किया है। एतदर्थ प्रदेश के शासन ने आर्थिक भार उठाने की कृपा की है। अन्वेषण कार्य अभी बाल्यावस्था में है किन्तु आशा है कि वह उत्तरोत्तर प्रौढ़ता प्राप्त करता जायगा। वार्षिक अन्वेषण का विवरण संक्षेप में प्रकाशित हो गया है। उसकी विशद सांगोपांग रिपोर्ट प्रादेशिक शासन छपाने जा रहा है। इन रिपोर्टों की

सामग्री से हमारे ज्ञान की तो अवश्य उन्नति हुई है किन्तु अभीतक मार्के वाली सनसनी उत्पन्न करनेवाली सामग्री हस्तगत न हो सकी। आशा है कि अनतिदूर काल में प्रदेश के प्राचीन इतिहास पर तीव्र प्रकाश पड़ने लगेगा।

प्रदेश के स्कूली शिक्षा क्रम में जबतक इतिहास विषय को यथेष्ट स्थान न दिया जायगा और शिक्षित जनता में इतिहास के लिये अनुराग उत्पन्न करने का प्रयत्न न किया जायगा तबतक योग्य गवेषकों और अन्वेषकों की चिन्त्य कमी रहेगी और अन्वेषण के कार्य में स्फूर्ति एवं प्रौढ़ता प्राप्त न हो सकेंगी। इन त्रुटियों की ओर शिक्षा विभाग को विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है।

शासन और विश्वविद्यालय और कुछ विशेषज्ञ तो जो करते हैं या करेंगे उसको चलने दिजिए। आवश्यकता इस बात की भी है की हमारे प्रान्त की सामान्य जनता को इसका ज्ञान कराया जाय कि यहाँ की ऐतिहासिक सामग्री की क्या विभूति है। इसी उद्देश्य को रखकर हमारे योग्य सहयोगी डॉ. मोरेश्वर दीक्षित ने प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन किया है। जो मौलिक सामग्री इधर उधर पुरातत्त्वसंबंधी पुस्तकों, रिपोर्टों, पत्रिकाओं और लेखों में इतस्ततः बिखरी पड़ी थी और दुष्प्राप्य थी उसकी सूची आपने एक स्थान पर संग्रहीत कर दिया है। पूर्व-पाषाण कालसे कलचूरी राज्य काल तक की सामग्री विशेष रूपसे और मुसलमानी और मराठों के समय की साधारण रूपसे एकत्रित की गयी है। इस में प्रागैतिहासिक अवशिष्ट वस्तुओं, गुफाओं, शिलालेखों, ताम्रपटों, सिक्कों, मुद्राओं, देवालयों, दुर्गों आदि की तालिकाएँ समाविष्ट हैं। जो सज्जन अध्ययनशील हैं उनके लिए मौलिक साधनों की सूची दे दी गई है। स्थानाभाव के कारण संभवतः प्रत्येक उद्धरणों की विशिष्ट और पूरी सूची न दी जा सकी। यदि ऐसा संभव हो सकता तो पुस्तक की उपादेया बहुत बढ़ जाती और अध्ययन सरल एवं सुलभ हो जाता।

प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री का संकलन युग अथवा काल के अनुसार किया गया है। पाठक जिस किसी काल, वंश या शाखा का अध्ययन करना चाहे तत्सम्बधी साधन उसे एक स्थान पर मिल जाय गा। मेरे सुझाव पर उन्होंने प्रत्येक जन-पद में प्राप्य सामग्री की सूची देने का निश्चय कर लिया। इस प्रकार की सूची से उत्साही पाठक अपने जनपद अथवा निवास स्थान के आसपास प्राप्त होनेवाली सामग्री की मौलिक जाँच कर सकेंगे जिससे उनके ज्ञान और रुचि की वृद्धि होती रहेंगी।

प्रस्तुत पुस्तक में अद्यावधि ज्ञात साधनों का संकलन हुआ है इससे यह न समझना चाहिए कि इसमें मध्यप्रदेशकी सभी ऐतिहासिक साधन आगये और कुछ शेष न रहा। बहूतसी सामग्री और साधनों की ओर संभवतः अभीतक अन्वेषकों का ध्यान आकर्षित न हुआ होंगा। यदि शिक्षित जन सतर्कतासे अन्वेषण करें तो बहूत से अद्यावधि अज्ञात साधनों का पता लग सकता है जिससे ऐतिहासिक शृंखला की खोई अथवा टूटी कडिया जोड़ी जा सकेंगी और इतिहासपर यथेष्ट प्रकाश पड़ सकेंगा। प्रदेशवासिओं का कर्तव्य है की वे इस कार्य में यथाशक्ति भाग लें और सहायतें दे जिससे उनको अपनी ऐतिहासिक विभूति और महत्त्व का स्फूर्तिदायक ज्ञान हो सके।

हिंदी भाषा और उपयोगी साहित्य के प्रेमिओं को प्रस्तुत का आदर करना और उससे लाभ उठाना चाहिए। आशा की जा सकती है कि सागर विश्वविद्यालय के तत्वावधान एवं अन्य योग्य और उत्साही अन्वेषकों के द्वारा जो नवीन सामग्री प्राप्त होगी उसका समावेश भावी संस्करण में हो सकेगा। विश्वविद्यालय अन्वेषण कार्य को आधिक पुष्ट और विस्तृत करने की व्यवस्था कर रहा है। वार्षिक रिपोर्टों में उनका संक्षिप्त विवरण प्रकाशित होता रहेगा।

इस पुस्तक का ध्येय साहित्य, भाषा–विज्ञान तथा आचार–विचार के अध्ययन से प्राप्त सामग्री को एकत्रित करना न था। यदि विद्वान अन्वेषक इस कार्य की पूर्ति करने का प्रयास करें तो वह परिश्रम स्तुत्य होगा। प्रस्तुत पुस्तके के ढंग की भारतीय भाषाओं में ही नहीं, युरुपीय भाषाओं में भी बहुत कम मिलेंगी। हिंदी साहित्य में तो यह अपने ढंग की अद्वितीय पुस्तक है। उसके प्रकाशन का गौरवपूर्ण श्रेय मध्यप्रदेश को प्राप्त हुआ है। संभव है कि अन्य प्रदेशों को इससे उत्साह प्राप्त हो और वहाँ भी इसी के प्रकाशनों का प्रबंध किया जाय। हिंदी साहित्य को डाक्टर श्री मोरेश्वर दीक्षित जी ने पुस्तकाकार जो यह उपहार दिया है उसके लिए वे धन्यवाद और बधाई के आदरणीय पात्र हैं। आशा है हिंदी संसार और विशेषतः मध्यप्रदेश की संस्थाएँ और जनता इस देन का यथोचित सन्मान करेंगे और उससे लाभ उठाएँगें।

सागर विश्वविद्यालय
३०–७–५४

रामप्रसाद त्रिपाठी
उपकुलपति, सागर विश्वविद्यालय

मेरे सन्मित्र

श्री. प्रभाकर वि. पाटणकर को

जिनके

जीवन धारा से मेरा जीवन प्रभावित

हुआ है ।

अनुक्रमणिका

चित्रों की सूची

चित्रफलक

मध्यप्रदेश
स्केल
० ३२ ६४ ९६
मील
सागर
जबलपूर
नरसिंहपूर
होशंगाबाद
मंडला
सिरगुजा
बिलासपूर
मैकल
अमरकंटक
विंध्य
छिंदवाडा
बेतूल
नेमाड
बालाघाट
नागपूर
भंडारा
रायपूर
द्रुग
अमरावती
वर्धा
बुलढाणा
अकोला
यवतमाळ
चांदा
बस्तर
७७°·०
७८°·०
७९°·०
८०°·०
८१°·०
८२°·०
८३°·०
८४°·०
२४°·०
२३°·०
२२°·०
२१°·०
२०°·०
१९°·०
१८°·०
७६°·०

मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा

(१) इतिहासपूर्व काल

पूर्व–पाषाण–कालीन संस्कृतियाँ
(Palæolithic Cultures)

मध्य प्रदेश के पुरातत्त्व का आरम्भ प्रागैतिहासिक तथा पृथ्वी पर मानवाविर्भाव-काल से मानना चाहिये। यह तो सर्वविदित है कि अपनी आदिम अवस्था में मनुष्य और असभ्य वन्य-जन में कुछ अधिक अन्तर न था। वह परिभ्रमणशील जीवन व्यतीत करता था। वह वन्य पशुओं के आखेट अथवा कन्द-मूलादि खाकर ही अपने जीवन का निर्वाह करता हुआ प्रायः नदियों की घाटियों में प्राकृतिक रूप से आश्रय ग्रहण करता था। उसका परिभ्रमण-जीवन अधिकांशतः प्राकृतिक स्थिति एवं भोजन की संप्राप्ति पर ही निर्भर था। मूलादि के खोदने और वन्य पशुओं के मारने के लिये वह स्थानीय पत्थरों से ऐसे भद्दे हथियार बनाता था, जिनका निर्माण नदियों में प्राप्त पत्थरों के टुकड़े कर, उन्हें उपयुक्त आकृति देकर किया जाता था। ऐसे अस्त्र लकड़ी के बेंटवाले या विना बेंट के रहते थे। आदिम व्यक्ति के अस्तित्व–ज्ञान के लिये नर-कंकाल तो साम्प्रत प्राप्त नहीं हो सके हैं किन्तु कुछ भग्न अस्थि-पंजर ही मिले हैं। उसके अस्तित्व का ज्ञान विभिन्न स्थानों में मिलनेवाले अधिकांश पत्थरों के उन भद्दे हथियारों से ही होता है, जिन्हें वह स्थानान्तर करता हुआ वहाँ छोड़ दिया करता था।

इन हथियारों की बनावट के आधार पर प्रागैतिहासिक काल के मनुष्य की प्रारम्भिक खाद्यपदार्थार्जन की अवस्था को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(१) पूर्व–पाषाण–काल (Old Stone Age)
(२) उत्तर–पाषाण- काल (New Stone Age)

अब यह सोचना स्वाभाविक ही है कि मनुष्य के विकास की इन विभिन्न स्थितियों के बीच बहुत समय का व्यवधान रहा होगा। लगभग डेढ़ लाख वर्ष पूर्व पृथ्वी पर मनुष्य के अवतारित होने से पंद्रह हजार वर्षों के पश्चात् उसके अस्त्र–निर्माण करने का अनुमान किया जाता है।

पूर्व–पाषाण–काल के हथियार, जो 'प्राचीन पाषाणयुगीनास्त्र' (Palæolithic Implement) कहलाते हैं, यों तो भारत के अन्य विभिन्न भागों में बिखरे हुए मिलते ही हैं। किन्तु इस मध्यप्रदेश में केवल कुछ ही स्थान ऐसे हैं, जहाँ ये उपलब्ध हुए हैं।

इस युग का विशेष हथियार, जिसे बिना बेंट या लकड़ी के बेंट के साथ प्रयुक्त किया जाता था, हाथ की कुल्हाड़ी (Hand axe) था। इसे एक पत्थर के टुकड़े को नुकीला कर बनाया जाता था। इसके अतिरिक्त चर्मकर्षकास्त्र (Scrapers), करावातक-हथौड़ा (Bouchers) और अवशिष्ट अनुपयुक्त प्रस्तरांश भी, (cores) जो प्रस्तरास्त्र–सूचक हैं, प्राप्त हुए हैं। इन हथियारों के नाम उन स्थानों के नामों पर पड़े हैं, जहाँ वे सर्व प्रथम प्राप्त हुए हैं और इन्हीं से उनकी समानता का बोध होता है।

पूर्व--पाषाण-काल के मनुष्य का अधिकांश जीवन, उन परिस्थितियों पर निर्भर था, जिनमें वह रहता था। अतएव उसके हथियार अब बहुधा प्राचीन एवं प्रसिद्ध नदियों की घाटियों में मिलते हैं। खोज की दृष्टि से मध्यप्रदेश की सभी नदियों का पर्यवेक्षण भली भाँति नहीं किया गया। विगत शताब्दि में यद्यपि भारत सरकार के भू-गर्भ-परिशोध-विभाग के अधिकारियों के कुछ द्वारा इस दिशा में कुछ कार्य तो किया गया है, तथापि यह उनका प्रधान उद्देश्य इस दृष्टि से खोज करना न था। इस भाँति उनके द्वारा लिखे गये विवरणों में जहाँ-कहीं कुछ उल्लेख इस सम्बंध मे मिलते हैं और इस युग की जो भी बातें हमें विदित होती हैं, वे उन्हीं की खोजों के फलस्वरूप हैं।

इस प्रदेश की सबसे प्राचीन नदी नर्मदा से बहुत सी पूर्व-पाषाण-कालीन कर-संचालित कुल्हाड़ियाँ (Hand axes) सन् १८७३ ई० में नरसिंहपुर के निकट भुतरा नामक ग्राम में प्राणियों की हड्डियों के सहित पायी गयी हैं। ऐसी कुल्हाड़ियाँ नर्मदा की घाटी के उत्तर में देवरी, सुखचाई नाला, बुरधना, केडलारी, बरखुरा, संग्रामपुर के पठार पर तथा दमोह के समीप भी पायी गयी हैं। सन् १९३२ ई० में येल-कैम्ब्रिज-अभियान के द्वारा ऐसे हथियारों के संग्रह तथा भूमि-स्तरों के अध्ययन करने का विशेष प्रयत्न किया गया था। होशंगाबाद और नरसिंहपुर के बीच में कार्य करते समय उन्हें बहुत से हथियार अपने मूल-स्थानों पर मिले थे। बनारस-हिन्दु-विश्वविद्यालय की ओर से श्री मनोहरलाल मिश्र ने भी होशंगाबाद के निकट ऐसे कुछ नमूनों का संग्रह किया था। तदुपरान्त सागर-विश्वविद्यालय के द्वारा सन् १९५३ ई० में देवरी नामक ग्राम के समीपवर्ती कुछ क्षेत्र में भी खोज की गयी है।

विदर्भ में वैनगंगा और वर्धा नदी की घाटियों के कुछ स्थानों पर पूर्व-पाषाण-कालीन कुछ हथियार प्राप्त हुए हैं। इन स्थानों में से चाँदा जिले के कुछ ग्राम तथा यवतमाळ जिले के खैर, परसोरा तथा ढोकी जैसे ग्रामों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

रायगढ़ के निकट सिंघणपुर के चित्रित गह्वरों में खोज करते समय रायबहादुर श्री० मनोरंजन घोष को भी ऐसीही पाँच कुल्हाड़ियाँ प्राप्त हुई थी। नागपुर-संग्रहालय में नागपुर के निकटस्थ कळमेश्वर और भंडारा के ज़िलो में नवेगांव से प्राप्त हुए दो हथियार सुरक्षित हैं।

ये केवल कुछ ही उदाहरण हैं। इन उक्त स्थानोंके अतिरिक्त अन्यस्थानों में भी गवेषण-कार्य की आवश्यकता है। विशेषतया इस विचार से कि हमें, हमारे सबसे प्राचीन उन पूर्वजों के सांस्कृतिक जीवन का अध्ययनावसर प्राप्त हो सके, जो पूर्व-पाषाण-कालीन संसार में रहते थे।

उत्तर-पाषाण-कालीन संस्कृतियाँ
(Neolithic Culture)

पशु-पालन तथा कृषि-विधान आदि का यथेष्ट ज्ञान होते ही पूर्व-पाषाण-कालीन आदिम मानव पहिले की अपेक्षा अब कुछ समय के लिये किसी एक ही स्थान पर स्थिर सा होकर जीवन-यापन तो करने लगा था। किन्तु वह विशेष रूप में अधिक समय के लिये किसी एक ही स्थान पर अपना स्थायी निवास न बना सका, क्योंकि उसे यह प्रतीत हुआ कि उसकी कृषि-भूमि कियत्कालोपरान्त कृषि के लिये पूर्ववत् उपयोगी नहीं रही। इसी के साथ यह भी स्मरणीय है कि अब उसे अपने कृषि आदि के कार्य में किसी सहयोगी अथवा सहायक की भी आवश्यकता प्रतीत हुई। फल यह हुआ कि उसे अपने सहयोगी के साथ एक स्थानपर स्थायीसा होकर रहना अधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ। यही मानव के समाज-संगठन और सामाजिक जीवन का श्रीगणेश कहा जा सकता है। ऐसी स्थिति में इस युग के हथियार भली भाँति तराशकर पालिश किये गये हथियार हो गये थे और एतत्पूर्वकालीन

हथियारों के समान तोड़-फोड़कर न बनाये गये थे। इन नये हथियारोंकी आकृतियाँ पहिके हथियरोंकी आकृतियों की अपेक्षा अधिक पूर्ण और रुचिर-रोचक थीं।

वस्तुतः उत्तर-पाषाण-काल के हथियार मध्यप्रदेश में तो अत्यल्प संख्या में प्राप्त हुए हैं, किन्तु यहाँ के उत्तरीय सीमान्त स्थानों, मिर्जापुर की घाटी तथा बाँदा ज़िले में अधिक प्राप्त होते हैं। श्री मनोहरलाल मिश्र ने होशंगाबाद से उत्तर-पाषाण-कालीन हथियारों (Celts) के प्राप्त होने का उल्लेख किया है और भारत-सरकार के भू-गर्भ-परिशोध-विभाग के संग्रहालय में भी कुछ ऐसे हथियार सुरक्षित हैं। इनमें से अधिकांश हट्टा तहसील, सागर के निकटवर्ती गढ़ी मोरिला, बहुतराई, सिहोरा, दमोह, कुण्डम और कटनी के समीप बुरचेंका नामक स्थानों में प्राप्त हुए हैं। नांदगांव में अर्जुनी के पास 'बोन' टीला से एक छेद किया हुआ पत्थर का कराघातक हथौड़ा (Perforated Hammer stone) प्राप्त हुआ है, जो उत्तर-पाषाण-युग का विशेष हथियार माना जाता है। ये हथियार ईसा के पूर्व की कुछ शताब्दियों के माने जा सकते हैं। अनुमानतः ईसा से कम से कम ५००० वर्ष से भी और पहिले के हो सकते हैं। अद्यापि मध्यप्रदेश में उत्तर-पाषाण-काल पर बहुत कम कार्य किया गया है।

लघु-पाषाणास्त्र

(Microlithic tools)

उत्तर-पाषाण-युग में तत्कालीन मानव के द्वारा प्रयुक्त विविधाकार के बहुसंख्यक हथियारों से उनकी नव रचना-शैलियों का परिचय मिलता है। ये अस्त्र अत्यल्पाकार हैं। चाकू के फल के आकार वाले लंबे अस्त्र (Long blades), वाण-फलक (Arrow-heads) और छेद करने के अस्त्र या छिद्रास्त्र (Burins) इत्यादि हथियार स्थानीय पत्थर जैसे अकीक (Agate), गोमेद (Carnelian), गार (Quartz) और दूसरे सफ़ेद पत्थरों (Chalcedony) से बनाये जाते थे। इन हथियारों के संबंध में यह एक विशेष बात है कि वे उन सभी स्थानों में, जहाँ उनका कार्य अथवा प्रयोग होता था, अधिक संख्या में उपलब्ध होते हैं।

मध्यप्रदेश में इस काल की संस्कृति का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान जबलपुर के निकट 'बड़ा शिमला' नाम की पहाड़ी है। भेड़ाघाट और नर्मदा की के घाटी बहुत से नवीन टीलों में, जो सख्त काली मिट्टी (Regur) से बने हुए हैं, ऐसे अल्पास्त्र मिलते हैं। त्रिपुरी के उत्खनन-कार्य म भी बहुत से नमूने प्राप्त हुए हैं। ये पाषाणास्त्र पचमढ़ी के समीपस्थ प्रायः सभी चित्रित गह्वरों में मिलते हैं। कई स्थानों में तो ये बहुत सुंदर ढंग से चित्रित किये गये मृत्पात्रों के साथ उपलब्ध होते हैं। पचमढ़ी की 'डॉरॉथीं डीप' नाम की गुफा मे इन अल्पास्त्रों के साथ एक अस्थि-पंजर भी प्राप्त हुआ था। बहुत से खर्व धारवाले ऐसे हथियार (Pigmy Flakes) जिनका उल्लेख कई लेखकों ने पहले किया है, वास्तव में ऐसे सूक्ष्म-पाषाणास्त्र हैं जिनका महत्त्व उस समय विदित न हो सका था।

अन्यत्र उचित पर्यवेक्षण के अभाव में केवल मध्यप्रदेश के उत्तरीय ज़िलों म ही उनका पता चल पाया है। अभी तक उनके विषय में कोई भी विशेष उल्लेख विदर्भ में नहीं मिला है।

मैसूर राज्यगत ब्रह्मगिरि की खोदाइयों से यह प्रकट होता है कि इन अल्पास्त्रों का उपयोग ईसवी सम्वत् के आरम्भ तक होता रहा था, किन्तु इनके काल का निश्चित् रूपसे निर्णय नहीं किया जा सकता।

चित्रित–गह्वर

(Rock Shelters with Paintings)

मध्य प्रदेश में विन्ध्याद्रि–चट्टाने छोटी छोटी गुफाओं के बनाने के लिये अधिक उपयुक्त हैं। प्रागैतिहासिक काल में, आदिम मनुष्य स्वभावतः ऐसी ही गुफाओं में आश्रय ग्रहण करता था। वह कभी कभी तो प्राकृतिक गह्वरों में और कभी कभी खोदकर बनायी हुई गुफाओं में आश्रय ग्रहण किया करता था और बहुधा कुछ कार्य न होने पर अपने अवकाश-काल के यापनार्थ वह अपनी टिकाश्रयभूता गुफाओं में कभी तो अपने देखे हुए प्राकृतिक दृश्यों और कभी मृगयाखेटादि के चित्र चित्रित करता था। मध्य प्रदेश में ऐसी बहुत सी गुफाएँ मिलती हैं, जो पुरातत्त्व के विद्यार्थी के अध्ययन और अनुशीलन के लिये विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार की बहुत सी गुफाएँ पचमढ़ी स्थान के निकट हैं। इन गुफाओं में से लगभग चालीस गुफायें तो ऐसी हैं जो विविध प्रकार के चित्रों से सुसज्जित हैं और यह प्रकट करती हैं कि वे प्राचीन काल में मानवाश्रय की रम्य स्थलियों थीं। ऐसी एक गुफा होशंगाबाद में है, जिसमें तथाकथित 'जिराफ' का एक चित्र है। पचमढ़ी के तीस या चालीस मील के घेरे में तामिया, सोनभद्र, झलई आदि ग्रामों के निकट ऐसे कई गह्वराश्रय हैं। इन सब के अतिरिक्त जो गुफायें प्राचीनतम हैं, वे रायगढ़ के निकट कावरा पहाड़ तथा सिंवणपुर के नाम से प्रसिद्ध हैं। हट्टा नामक ग्राम के निकट फतेहपुर स्थान में भी कुछ चट्टानों पर कुछ चित्र मिलते हैं।

इन गुहाश्रयों के निर्माण समय के संबंध में मतान्तर है और अब तक इनका कोई भी समय निश्चित रूप से निर्धारित नहीं किया जा सका। अनुमानतः कह सकते हैं कि वे सम्भवतः उत्तर-पाषाण काल की भी नहीं हैं, तब उससे पूर्व की कोई चर्चा ही क्या है!

इन गुफाओं के जो विवरण श्री मनोरंजन घोष तथा कर्नल गॉर्डन ने दिये हैं, वे महत्त्वपूर्ण हैं। श्री. गॉर्डनने उनके काल-निर्धारण के संबंध में बहुत उपयोगी कार्य किया है। महती आवश्यकता न केवल इन गुहाश्रयों के विवरण देने की है, वरन् पूरे अनुसंधान के पश्चात् इनके सर्वांगपूर्ण सचित्र वर्णन की है।

बृहत्पाषाण–कालीन–शव–स्थान

(Megalithic Remains)

भारतीय पुरातत्त्वानुशीलन में बृहत्पाषाण-कालीन-शव-स्थान बहुत बड़ी विशेषता रखते हैं। इन शव-स्थानों में प्रायः लौह और ब्रांजके[१] अस्त्र प्राप्त होते हैं, जिससे यह अनुमान होता है कि ये शव-स्थान लौह और ताम्रयुग के हैं। इन शव-स्थानों में कतिपय ऐसे शव स्थान हैं, जो विशालकाय चट्टानों के द्वारा बृहदावास के रूप में निर्मित किये गये थे। इन आवासों की रचना करते हुए चतुर्दिक् दीवालों के स्थान पर विशाल प्रस्तर-खण्ड खड़े किये जाते थे और उन पर छत के रूप में एक बृहत्प्रस्तर रक्खा जाता था। ऐसे आवास के भीतर प्रायः एक दीवाल में बनाये गये एक छिद्र से विशेष संस्कार सामग्री के साथ सुरक्षित रूप से शव–स्थापन कराया जाता था। यह शव काष्ठ-निर्मित टट्टी के ऊपर रखा जाता था, जिसका आकार बहुधा आयताकार चौकी का सा होता था। इसके निकट कतिपय मृत्पात्र, लौहास्त्र तथा अन्य प्रेत–प्रणति की वस्तुएँ रक्खी जाती थीं। यह मृतकावास साधारणतया अनेक प्रस्तर-खण्डों से वृत्ताकार बना दिया जाता था और फिर

---

१ ब्रांज एक वह मिश्रित धातु है जिसमें ताम्र, लौह तथा टीन आदि धातुयें सम्मिलित होती हैं।
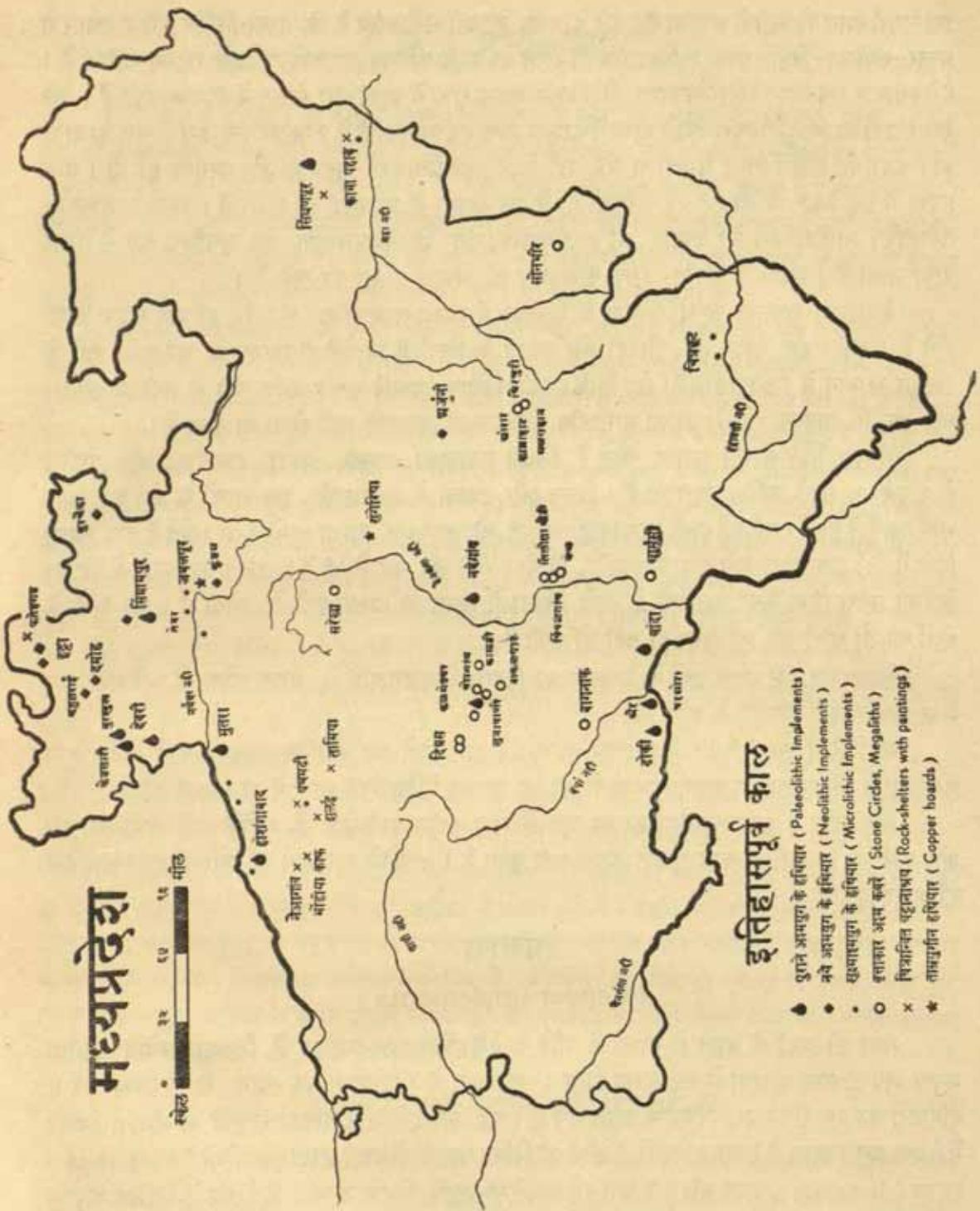
इस सम्पूर्ण स्थान को मिट्टी से पूर्णतया ढँक देते थे। यह भी यहाँ उल्लेखनीय है कि प्रस्तर-निर्मित ऐसे शवावास में प्रस्तर-संयोजन-विधान प्रायः स्वस्तिकाकार ही रहता था, यद्यपि कतिपय पुरातत्त्ववेत्ता इससे सहमत नहीं भी हैं। ऐसे वृत्ताकार शव-स्थान दक्षिणीय भारत, विशेषतया मद्रास राज्य में काफी बड़ी संख्या में उपलब्ध होते हैं। ऐसे शव-स्थानों की श्रृंखला परम्परा रूपसे भारत में काश्मीर प्रान्त तक प्राप्त होती है। अनुमानतः इस परम्परा का प्रादुर्भाव कदाचित् दक्षिण भारत में हुआ था और वहाँ से फिर यह प्रथा उत्तर भारत की ओर प्रसरित हुई थी। मध्य प्रदेश में इस प्रकार के जो शव-स्थान मिलते हैं, वे इस श्रृंखला के उदाहरण हो सकते हैं। बस्तर राज्यान्तर्गत तथाकथित आदिवासियों में अद्यापि इस बृहत्पाषाणकालीन शव-स्थापन-प्रथा का न्यूनधिक रूप में प्रचार पाया जाता है। यद्यपि वे संभवतः इसके मूलस्वरूप को विस्मृत ही सा कर चुके हैं।

हैदराबाद राज्यगत कृष्णा-तुंगभद्रा के अन्तर्वेद में बृहत्पाषाणकालीन कुछ ऐसे ही शव स्थान प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार चाँदा, दुग, सिवनी और भंडारा के जिलों में भी ऐसे ही विस्मयावह शव-स्थान वहाँ के विस्तृत भू-भाग में सम्प्राप्त होते हैं। खेद है कि इनकी गवेषणा अद्यावधि सन्तोषजनक रूप से नहीं हो सकी। यहाँ तक कि सामान्य दृष्टि से उनका धरातलीय निरीक्षण भी अद्यावधि नहीं किया जा सका है।

नागपुर जिले में ऐसे अठारह स्थान हैं, जिनमें जुनापाणी, कामठी, उबाली, टाकलघाट और बाठोरा के शव-स्थान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। दिग्रस और उबाली के बृहत्प्रास्तरिक शव-स्थानों के क्षेत्र कई एकड़ भूमि तक फैले हुए हैं। चाँदा में इनके मुख्य समूह चार्मुसी और वागनाक नामक ग्रामों में प्रात होते हैं तथा भंडारा ज़िले में ऐसे कुछ मृतकावास-वृन्द पिंपलगाँव, तिलोता, खैरी और बम्ह में भी हैं। इन मृतकावासों के विस्तृत क्षेत्र की उत्तरी सीमा कैमूर पहाडियों के नीचे सिवनी में सरेखा के प्रस्तर-वृत्तों से बनती हैं। दुग ज़िले के क्षेत्रों की तो अभी तक पूरी जाँच ही नहीं हो सकी है।

केवल कुछ ऐसे प्रस्तर-वृत्तों के उत्खनन का विवरण साधारण दृष्टि से प्राप्त होता है, जिसमें कुछ मेजर पिअर्स और हिस्लॉप ने खोदे थे।

ब्रह्मगिरि में सन् १९४५ में पुरातत्त्व-विभाग के द्वारा किये गये वैज्ञानिक उत्खनन-कार्य ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बृहत्पाषाण कालीन अवशेषों की यह परम्परा ऐतिहासिक काल में भी चलती रही।

मध्य-प्रदेश में पुरातत्त्वान्वेषण का यह एक नितान्त नवीन कार्य-क्षेत्र है, क्योंकि यहाँ अभी तक इस ओर कोई भी सुव्यवस्थित कार्य सुचारु रूपसे नहीं हुआ है। इसलिये इस कार्य की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

ताम्रास्त्र

(Copper Implements)

गंगा की घाटी के बहुत से स्थानों में ताँबे के ऐसे हथियार उपलब्ध हुए हैं, जिनका उपयोग स्पष्टतया मनुष्य अपनी सभ्य अवस्था में करता रहा होगा। बालाघाट में गुँगेरिया नामक स्थान से उपलब्ध ४२४ हथियारों का एक संचय इस विषय में उल्लेखनीय है। यह ग्राम दक्षिण में ताम्रास्त्र-संस्कृति के सीमान्त स्थानों में से एक प्रमुख स्थान है। इन हथियारों में ताँबे की विविध आकृतियों वाली सपाट कुल्हाड़ियाँ (Flat celts) सब्बल (bar-celts), तथा चाँदी से बनी हुई अन्य ऐसी वस्तुयें, जिनके उपयोग के विषय में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, मुख्यतया उल्लेखनीय हैं।

इसी प्रकार की एक कुल्हाड़ी के जबलपुर के निकट प्राप्त होने का भी उल्लेख किया गया है।

(२) मौर्य-काल

मध्य-प्रदेश में इतिहास का प्रारम्भ वस्तुतः मौर्य-काल से माना जा सकता है, जिसका समय ४०० ईस के पूर्व से लेकर २०० ईसा-पूर्व तक है। इस प्रान्त में मौर्य-कालीन कुछ शिला-लेख और सिक्के प्राप्त हुए हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि इस राज्य में ऐसी अन्य ऐतिहासिक सामग्री पर्याप्त रूप से अन्वेषित हो सकती हैं। इस राज्य में मौर्य-कालीन इतिहासान्वेषण का पुष्कल क्षेत्र तो है किन्तु अद्यावधि यहाँ एतत्संबंधी केवल किंचित् कार्य ही हुआ है। संभव है कि भारतीय मौर्य-कालीन इतिहास की कतिपय अनुपलब्ध श्रृंखला कड़ियाँ प्राप्त भी हो सकें। इसलिये यहाँ गवेषण-कार्य की महती आवश्यकता है।

भारत के महान् सम्राट् अशोक के गौणधार्मिक-शिला-लेख (Minor-Rock Edicts) जबलपुर से तीस मील की दूरीपर रूपनाथ नामक स्थान में अद्यापि अवशिष्ट है, जो संभवतः उसके शासन के अन्तिम समय में उत्कीर्ण हुये थे। इन शिला-लेखों का समय २३२ ईसा से पूर्व माना जा सकता है। तत्कालीन एक अन्य लेख चाँदा ज़िले में देवटेक नामक स्थान से प्राप्त हुआ था, जो लगभग तीन सौ वर्ष ईसा से पूर्व काल में प्रचलित अक्षरों में अंकित हैं। त्रिपुरी नामक स्थान के उत्खनन में उत्तरीय चिकणासित मृत्पात्रों(Northern Black Polished Ware) तथा आहत मुद्राओं से समन्वित मौर्य-कालीन भू-स्तर इतने मोटे हैं कि उनके आकार-प्रकार के निरीक्षण से मौर्य-कालीन मनुष्यों के सुव्यवस्थित जीवन का अनुमान किया जा सकता है। यह अवश्यमेव ठीक है कि त्रिपुरी स्थान में तत्कालीन भवन-भग्नावशेष तो नहीं मिलते। किन्तु उनके स्थानों पर मृत्तिका-राशि ऐसी मिलती हैं जिससे अनुमान किया जाता है कि वे भवन संभवतः कच्ची ईंटों से बने रहे होंगे। सरगुजा राज्यगत रामगढ़ नामक पहाड़ी की गुफाओं में अशोक कालीन रंग-रंजित और उत्कीर्ण दोनों प्रकार के लेख प्राप्त हुए हैं। चूँकि दक्षिण भारत में अशोक के कतिपय शिला-लेख अद्यावधि प्रस्तुत है, इसलिये इसके मानने में कोई विशेष आपत्ति नहीं हो सकती कि समस्त मध्य-प्रदेश निश्चय ही मौर्य-साम्राज्य के अन्तर्गत था। इसी प्रान्त को पार करके सम्राट अशोक ने अपने शिला-लेख दक्षिण-भारत में खड़े किये थे। अन्य स्वतंत्र शासक-शासित मध्यप्रदेश से अशोक का दक्षिण-भारत में जाना स्वाभाविक नहीं प्रतीत होता। यह भी संभव है कि मध्य प्रदेश किसी अन्य शासक से शासित रहा हो और वह शासक सम्राट अशोक का आश्रित राजा रहा हो अथवा मध्य प्रान्त उसके साम्राज्य का एक भाग विशेष ही रहा हो। मध्य प्रदेश के यह भग्नावशेष ऐसे बिखरे हुए मिलते हैं कि वे एक दूसरे से बहुत दूर दूर हैं। इस प्रकार वे विश्रृंखल होते हुए असंबद्ध से प्रतीत होते हैं। यद्यपि यहाँ मौर्य-कालीन अन्य उपयोगी शिला-लेखों के प्राप्त होने की बहुत अधिक आशा तो नहीं है, तथापि उन उत्तरीय चिकणासित मृत्पात्रों के समन्वेषण से, जो विशेषतया मौर्य-काल-निर्मित हैं, कदाचित् यह सिद्ध हो सकेगा कि उक्त बिखरे हुए शिला लेख वस्तुतः असंबद्ध न होकर परस्पर संबंध रखते हैं। इसलिये इन शिला-लेखों के आधार पर ऐतिहासिक भग्नश्रृंखला को संयुक्त करने की अतीव आवश्यकता है।

प्राचीन गण-राज्य की मुद्राएँ

सम्राट अशोक के कुछ ही समय के पश्चात् मध्य-प्रदेश में स्वतंत्र गण-राज्यों का आविर्भाव होता हुआ दिखायी देता है। ऐसे नगर-राज्यों में से एक एरण (प्राचीन ऐरिकिण) नामक राज्य भी था और उसके अपने सिक्के भी प्रचलित थे। एरण में धर्मपाल के नाम से अंकित सिक्के भी मिलते हैं। ऐसी दशा में यह अनुमान करना सर्वथा समुचित है कि वहाँ का राज्य-पाल संभवतः धर्मपाल रहा होगा और उसके पश्चात् ही ऐरिकिण का गण-राज्य स्थापित हो गया होगा।
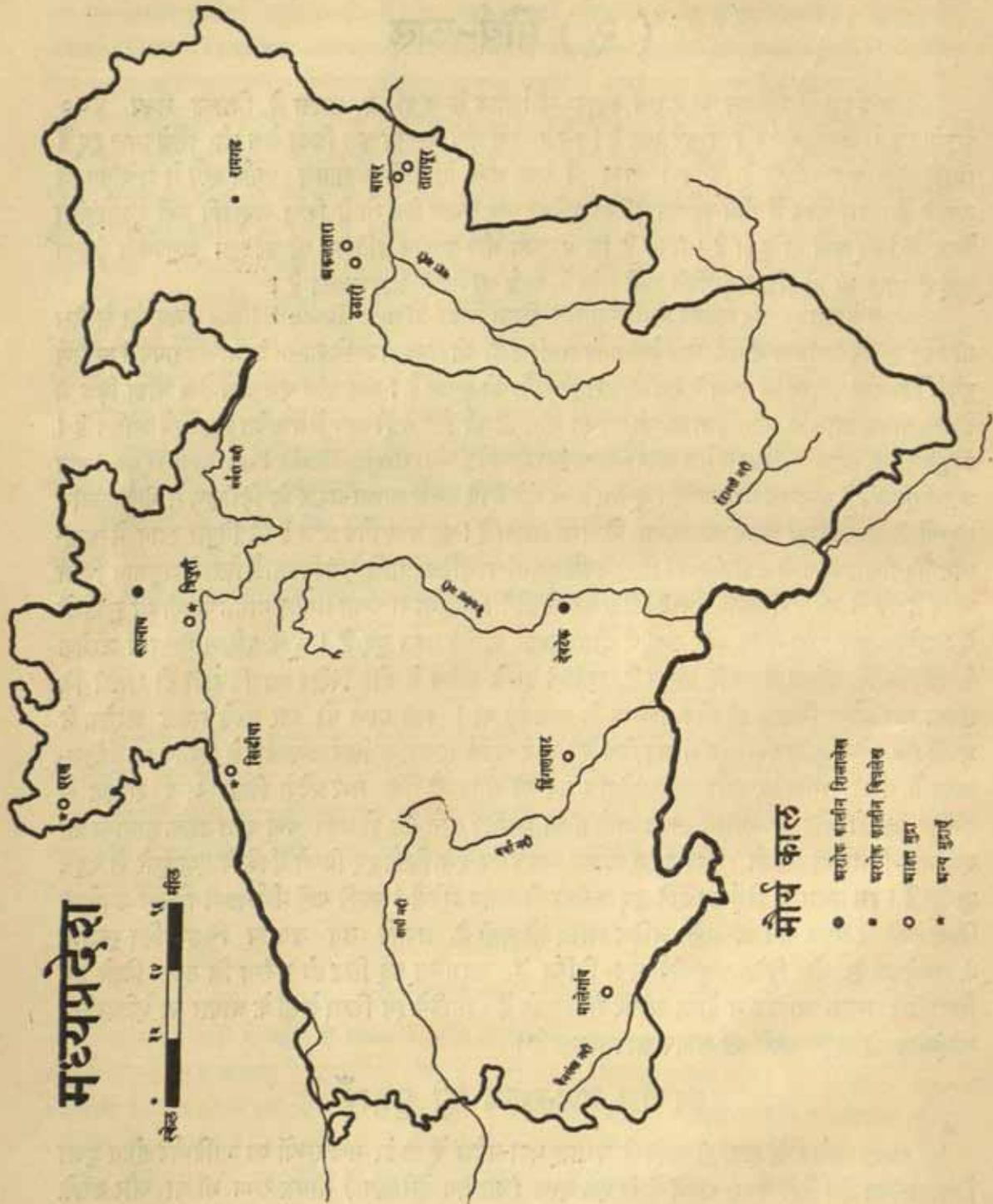
धर्मपाल का यह सिक्का भारत का सबसे प्राचीन उत्कीर्ण सिक्का है। त्रिपुरी नामक स्थान में प्राप्त हुए सिक्कों से यह ज्ञात होता है कि यहाँ एक अन्य नगर-राज्य का विकास हुआ था, क्योंकि इन सिक्कों पर चिह्नों के सहित केवल 'तिपुरी' ही अंकित है। ये सिक्के कदाचित् स्थानीय व्यवहार के ही लिये मुद्रित किये गये थे। इनमें से कुछ सिक्के नर्मदा नदी के तटस्थ होशंगाबाद नामक स्थान तक प्रचलित होते हुए प्रतीत होते हैं।

केवल कुछ ही समय पूर्व होशंगाबाद ज़िले के जमुनियाँ नामक स्थान में जो सिक्के मिले हैं, उनसे यह पता चलता है कि "भागिला" नामक एक अन्य राज्य भी उपर्युक्त नगर-राज्य सा था। अनुमानतः यह नगर-राज्य लगभग दो सौ वर्ष तक स्थित रहा। नगर-राज्यों की यह परिपाटी मौर्य-युग में प्रायः सर्वत्र ही मिलती है, क्योंकि भारत के अन्य भागों में स्थित उज्जयिनी, उदेहिक, कौशाम्बी, वाराणसी, माहिष्मती आदि कतिपय नगरों के नामों वाले सिक्के भी प्राप्त हुए हैं।

आहत मुद्राएँ

(Punch-Marked Coins)

आहत-मुद्रा-प्रथा सब प्रकार के भारतीय सिक्कों की प्रथाओं में सबसे प्राचीन हैं। ये सिक्के चाँदी अथवा ताँबे के टुकड़ों से वर्गाकार या वृत्ताकार बनाये जाते थे और इन पर एक ओर तो अनिश्चित क्रम से पाँच चिह्न और दूसरी ओर कभी एक अथवा एक से अधिक भी चिह्न अंकित किये जाते थे। कभी-कभी एक चिह्न दूसरे चिह्न के ऊपर अथवा उसके इतने निकट अंकित किया जाता था कि दोनों चिह्न मिलकर अस्पष्ट से ही हो जाते थे। यदि चिह्न कुछ ऐसे हुए कि एक दूसरे को आच्छादित न कर सके तो स्पष्ट भी रहते थे। कभी-कभी चिह्न सिक्के के किनारे पर ऐसा लग जाता था कि उसका एक अंशमात्र ही अंकित हो पाता था। बहुधा ऐसे सिक्के कुछ घिसे हुए भी मिलते हैं। ऐसी अवस्था में चिह्नांकन-विधान पर कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता।

ये सिक्के सामान्यतया लगभग पाँच सौ वर्ष ईसा के पूर्व से लेकर लगभग ईसवी सन् के दो सौ वर्ष के बाद तक न्यूनाधिक रूपान्तर के साथ चलते रहे। इसके पश्चात् इनका शनैः शनैः ह्रास हो चला। फिर भी लगभग चार सौ ईसवी तक ये सिक्के यत्र-तत्र प्रचलित ही रहे। इनके आकार-प्रकार में समय-समय पर कुछ थोड़ा-बहुत अन्तर होता हुआ भी प्रतीत होता है। मौर्य-कालीन आहत मुद्रायें प्रायः वृत्ताकार और पतली होती थीं। उनकी अपेक्षा कुछ मोटी मुद्रायें मौर्य-काल के पश्चात् ही प्रचलित होती हुई सी जान पड़ती हैं। इन मुद्राओं पर लगभग पाँच सौ प्रकार के चिह्न अंकित मिलते हैं और क्षेत्रान्तर से इन चिह्नों में भी अन्तर प्राप्त होता है। कुछ चिह्न तो किसी क्षेत्र में और कुछ चिह्न किसी क्षेत्र में विशेष प्रचलित थे। इससे तत्कालीन भारत के भौगोलिक भाग-विभाजन का भी अनुमान किया जा सकता है, किन्तु निश्चित रूप से इनके मूल मन्तव्य का निर्धारण नहीं किया जा सकता।

मध्य प्रदेश में आहत मुद्राओं के कई संग्रह मिले तो हैं परन्तु युगों के आधार पर उनका वर्गीकरण सम्भव नहीं है। अतएव आहत मुद्राओं के प्राप्ति-स्थानों की तालिका पुस्तक में दिये गये मान-चित्र में स्पष्ट कर दी गई हैं। सभी सिक्के अनिवार्यतः मौर्य-कालीन नहीं हैं। उक्त सिक्के तीन विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं। प्रथम क्षेत्र मालेगाँव तथा हिंगणघाट का है। इस क्षेत्र से प्राप्त होने वाले सिक्के सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। यह क्षेत्र विदर्भ के अन्तर्गत है। दूसरा क्षेत्र उत्तर में त्रिपुरी और एरण नामक स्थानों का है। इस क्षेत्र की

खोज प्रायः होती रहती है। तीसरा क्षेत्र प्रायः छत्तीसगढ़ प्रान्त का है। इस क्षेत्र के अकलतारा, बायर, ठठारी और तारापुर नामक स्थानों से सम्प्राप्त आहत मुद्रायें भली भाँति विदित हैं। इस विषय में अद्यापि जो अनभिज्ञता है, उसका कारण अपूर्णान्वेषण ही है। एक विशेष उल्लेखनीय बात यहाँ पर यह है कि ठठारी ग्राम से प्राप्त होनेवाली मुद्राओं पर एक ही अल्पाकारी चिह्न अंकित है। ऐसा चिह्न हमें केवल तक्षशिला नामक प्रसिद्ध स्थान से सम्प्राप्त कुछ मुद्राओं पर ही मिलता है। दूसरी बात, जिसकी ओर हमें ध्यान आकर्षित कराना है, यह है कि छत्तीसगढ़ से प्राप्त अधिकांश मुद्राओं की जानकारी यद्यपि बहुत दिनों से है, तथापि उनका निरीक्षण और परीक्षण विशेष रूप से मुद्रा-शास्त्र-विशारदों के द्वारा अब तक नहीं हुआ।

ढले हुए सिक्के

(Cast Coins)

सम्राट् अशोक के शासन के पश्चात् ताँबे और ब्रांज के ढले हुए सिक्कों का प्रचलन प्रारंभ हुआ। इससे पूर्व इन धातुओं के ढले हुए सिक्कों का प्रचलन कम था। इसी के साथ सिक्कों के आकार-प्रकार में भी अंतर हुआ। ताँबे और ब्रांज के ये नये सिक्के साँचे में ढाले जाते थे और बहुत बड़ी संख्या में तैयार किये जाते थे, क्योंकि इनका प्रचलन-क्षेत्र इस समय उत्तरीय भारत में बहुत विस्तृत हो गया था। दक्षिणीय भारत में इनके प्रचलन का विषय संदिग्धसा ही है। वे तक्षशिला जैसे अनेक प्राचीन स्थानों के सिक्कों की भाँति तीन सौ वर्ष ईसा पूर्व तक ही के समय को इंगित करते हैं। मध्य प्रदेश में ऐसे ढले हुए सिक्कों की प्राप्ति के मुख्य केन्द्र एरण तथा त्रिपुरी नामक स्थान हैं और अभी हाल ही में होशंगाबाद नगर के निकट जमुनियाँ तथा खिड़िया नामक ग्रामों से भी ऐसे कुछ सिक्के प्रकाश में आये हैं। बहुत से सिक्के आकृति में उज्जैन अथवा एरण नामक स्थानों के सिक्कों के समान हैं।

उत्तर मौर्य–काल से शातवाहन--काल तक

उत्तर मौर्य-काल से लेकर सातवाहन शासकों के प्रारम्भ तक के समय का ऐतिहासिक ज्ञान संकीर्ण ही है, परन्तु पौनी नामक ग्राम से प्राप्त दीमभाग (तृतीय शताब्दी ईसा से पूर्व) नामक कुछ शासकों के दो एक सिक्कों से, जो यत्र-तत्र यदा-कदा प्राप्त होते हैं, उस काल के इतिहास पर कुछ अल्प प्रकाश पड़ जाता है। इससे अतिरिक्त और कोई भी अन्य साधन ऐसे उपलब्ध नहीं हैं, जिनसे इस काल के इतिहास का यथेष्ट परिचय प्राप्त हो सके।

--- --- ---

(३) शातवाहन-काल

मध्य प्रदेश में कतिपय अवशेषों से सातवाहन युग की स्थिति का भी ज्ञान होता है और यहाँ से प्राप्त अवशेषों में सिक्के तथा तत्कालीन लेख सम्मिलित हैं। वास्तव में इन लेखों का सातवाहन-वंश के राजाओं के इतिहास से कोई भी सीधा संबंध सा नहीं है। वे केवल उनके ऐतिहासिक ज्ञान में सहायक अवश्यमेव होते हैं, क्योंकि ये लेख वस्तुतः समकालीनता मात्र प्रकट करते हैं।

गौतमी-पुत्र सातकर्णी के नासिक गुफा के लेखानुसार विदर्भ का प्रान्त उनके अधिकार में था। कई विद्वानों के विचार से तो विदर्भ प्रान्त ही सातवाहन राजाओं का मूल-प्रदेश था, किन्तु यह मत सर्वमान्य नहीं है।

सिक्के:—त्रिपुरी-उत्खनन से सातवाहनवंशीय प्रारंभिक शासक सिरि सातकर्णी के जो सीसे के सिक्के और सातवाहनकालीन मृत्पात्र प्राप्त हुए हैं तथा नर्मदा तटस्थ जमुनियाँ नामक ग्राम से जो सिक्के मिले हैं, उनके आधारपर यह निस्सन्देह माना जा सकता है कि जबलपुर के चतुर्दिक का प्रदेश ईसा की प्रथम शताब्दी के पूर्वार्ध के लगभग सातवाहन वंश के पूर्ववर्ती शासकों के अधिकार में था। बालपुर के निकट महानदी में आपिल्क के सिक्के की प्राप्ति से इस काल में यहाँ तत्कालीन सातवाहन के अधिकार की पुष्टि होती है।

विगत शताब्दी में चाँदा तथा सन १९४६ ई० में मंगरूलपीर के निकटवर्ती तर्हाला में परवर्ती सातवाहन शासकों के सीसे के सिक्कों के दो बृहत् संचयों की गवेषणा से बड़े ही महत्त्वपूर्ण परिणाम पर प्रकाश पडता है। पहले स्थान पर पुळुमावि तथा यज्ञश्री शातकर्णी जैसे सातवाहन शासकों के ताम्र-सिक्के प्राप्त हुए है, परंतु तर्हाला स्थान पर सातवाहन वंश के इतिहास पर अत्यधिक प्रकाश डालने वाले कई ऐसे नवीन सातवाहन राजाओं के उन नामों का उल्लेख मिलता है जो पुराणों में वर्णित नृप-सूचियों तथा वंश-परम्पराओं में नहीं मिलते। त्रिपुरी से प्राप्त गौतमीपुत्र सातकर्णी की रजत मुद्राओं पर राजा की मुखाकृति के अंकित होने से भी बाद के पक्ष पर यथेष्ट प्रकाश पड़ता है।

पूर्ववर्ती सातवाहन-सिक्के एरण, उज्जयिनी तथा मालवा के सिक्कों से संबंध रखते हैं. परन्तु परवर्ती सातवाहन कालीन सिक्कों के एक तल पर हस्ति-चिन्ह के होने से उन सिक्कों का संबंध दक्षिण भारतीय कोरोमण्डल तट तथा उज्जैन से स्पष्टतया प्रकट होता है।

स्मारक :—त्रिपुरी के उत्खनन से प्राप्त दो अवशेष तो बौद्ध विहारों के प्राप्त हुए हैं, और केवल दो दूसरे अवशेष ऐसे प्राप्त हुए हैं, जो सातवाहन युग के अवशेष कहे जा सकते हैं। विदर्भ के अन्तर्गत चाँदा नामक ज़िले में भाँदक तथा अकोला नामक स्थानों के निकटवर्ती पातुर नामक स्थान में गुफायें मिली हैं। इन गुफाओं में किसी प्रकार की स्थापत्य-कला-सूचक कोई वस्तु विशेष नहीं प्राप्त होती। ऐसी दशा में इनके रचना-काल का निश्चितीकरण वहाँ से सम्प्राप्त ब्राह्मी-लिपि के शिला-लेखों के ही आधार पर हुआ है। यद्यपि ये शिला-लेख सर्वथा संतोषजनक रूप में नहीं पढ़े जा सके हैं।

इस युग से संबंधित अन्य विवरण कुछ बिखरे हुए शिला लेखों से प्राप्त होते हैं, जिनमें (१) भार शासक भगदत्त का पवनी का शिला-लेख, तथा (२) सक्ती राज्य-गत गुंजी नामक स्थान में कुमार-वरदत्त का लेख हैं। इन दोनों लेखों का समय ईसा की प्रथम शताब्दी है। दूसरी शताब्दी से संबंधित तीन लेखों में, (३) सेनापति श्रीधरवर्मन् का एरण लेख, तथा (४) वासिष्ठि-पुत्र शिवघोष का बघेरा नामक स्थान का लेख हैं। किरारी नामक स्थान के काष्ठ-स्तम्भ पर, जो स्पष्ट ही यज्ञ-यूप है, ईसवी दूसरी
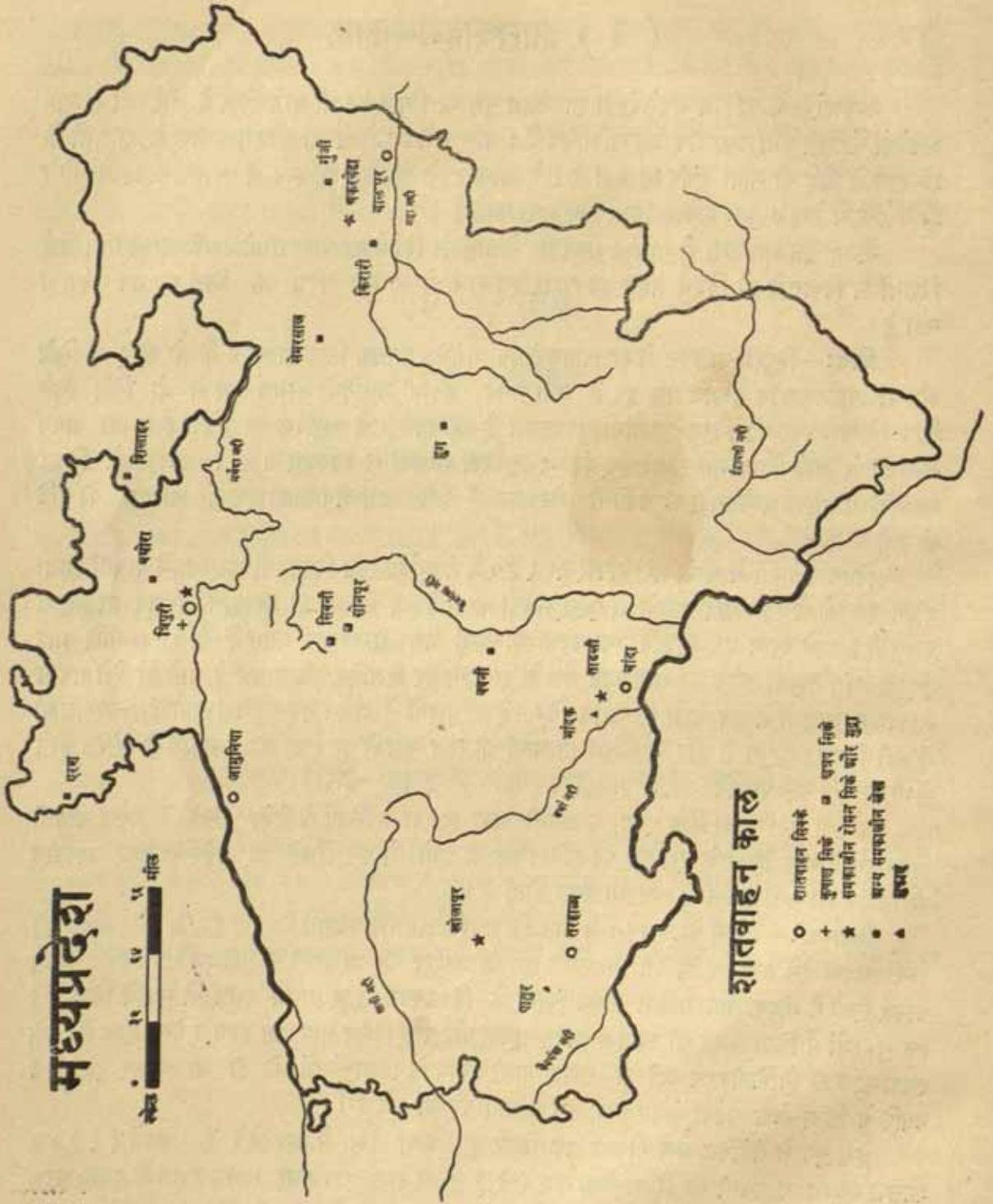
मध्यप्रदेश
मील
एरण
त्रिपुरी
सिवनी
सोनपुर
गुंजी
किरारी
पवनी
चांदा
पातुर
शातवाहन काल
शातवाहन सिक्के
कुषाण सिक्के
समकालीन रोमन सिक्के और मुद्रा
अन्य समकालीन लेख

शताब्दी का खण्डित लेख है। कुछ अन्य गौण लेख, सेमरसाल, दुग तथा भाँदक में भी मिलते हैं। हाल में ही बिलासपुर ज़िले में मल्हार के समीप बुढ़ीखार नामक ग्राम में एक वैष्णव देवता की मूर्ति पर ईसा से पूर्व पहिली शताब्दी के ब्राह्मी अक्षरों से अंकित एक अन्य लेख प्राप्त हुआ है। यह लेख प्रजावती और भारद्वाजी नामक स्त्रियों के द्वारा मूर्ति का निर्माण सूचित करता हैं, जो प्रायः वैष्णव मन्दिर का अति-प्राचनि उल्लेख है। यदि सावधानी से और अधिक खोज की जाय तो आशा है कि ऐसे और भी कितने ही शिला-लेख प्राप्त हो सकेंगें, जिनसे संभवतः इतिहास के कुछ अँधेरे पृष्ठों पर प्रकाश पड़ सकेगा।

अन्य छोटी वस्तुओं में एक प्रस्तर-मुहर (Seal), जिसके अक्षर प्रथम शताब्दी ईसा से पूर्व के विदित होते हैं और जिसपर ब्रह्मगुत (ब्रह्मगुप्त) अंकित है, नागपुर के पास किसी स्थान से उपलब्ध हुई थी।

रोमन सिक्के और पदक

शातवाहन युग की एक बहुत बड़ी विशेष बात यह है कि इस युग में भारत का व्यापारिक संबंध अन्य बाहरी देशों और विशेषतया रोम के साथ में था, क्योंकि मध्यप्रदेश में चाँदा के निकट ताडली तथा बिलासपुर और चकरबेडा में रोमन सिक्के पाये गये हैं। संबंध के अभाव में इन सिक्कों का यहाँ प्राप्त होना असंभव था। इन रोमन सिक्कों के अतिरिक्त पकी हुई मिट्टी का एक रोमन पदक (Bullae) अकोला के समीप खोलापुर में मिला है। इसी प्रकार त्रिपुरी की खुदाई में भी ऐसा ही रोमन पदक और रोमन मृत्पात्र भी अन्तिम शातवाहन स्तर में प्राप्त हुए हैं।

क्षत्रप सिक्के :—पश्चिमी क्षत्रपों का उल्लेख किये बिना परवर्ती शातवाहन शासकों का विवरण पूर्ण नहीं समझा जा सकता। क्षत्रपों के सिक्के मुख्यतया सिवनी ज़िले में उपलब्ध हुए हैं। जीवदामन के पुत्र रुद्रसेन का एक सिक्का सिवनी में मिला था और ६३३ से ऊपर सिक्कों का एक संचय ईसवी सन् १९२५ में सिवनी के निकट सोनपुर से प्राप्त हुआ था। इस संचय में रुद्रसेन प्रथम से लेकर रुद्रसेन तृतीय तक के सिक्के निहित हैं, जिनका समय शकाब्द १२१ से ३०० तक है।

(४) गुप्त—वाकाटक-काल

गुप्त—साम्राज्य भारतवर्ष में सबसे गौरवशाली माना जाता है। साहित्य, संस्कृति, काव्य, मूर्ति—कला, वास्तु—कला आदि के क्षेत्रों में इस समय बड़ी ही आश्चर्यजनक प्रगति हुई। इसी कारण गुप्त-काल को "स्वर्ण-युग" कहा जाता है।

गुप्त-कालीन बहुत सी गुफ़ायें, बहुत मंदिर और शिला-लेख मध्यप्रदेश की उत्तरी-सीमा और वायव्यीय सीमाओं से बहुत दूर तो नहीं हैं, किन्तु हैं वे प्रायः बाहर ही। मध्य प्रदेश के अन्तर्गत केवल एरण नामक एक स्थान ऐसा है, जहाँ इसका अपवाद मिलता है, अर्थात् वहाँ गुप्त-कालीन अवशेष उपलब्ध हैं। यह नगर प्राचीन काल में 'ऐरिकिण' के नाम से प्रसिद्ध था और इसे पराक्रमी सम्राट् समुद्रगुप्त ने अपना 'स्वभोगनगर' बनाया था। स्वभोगनगर से कदाचित् तात्पर्य यह था कि यह नगर समुद्रगुप्त के प्रमोदामोद, क्रीडा-कौतुकादि के लिये निर्मित किया गया था। उस समय के कई अवशेष, अब भी एरण में उपस्थित हैं।
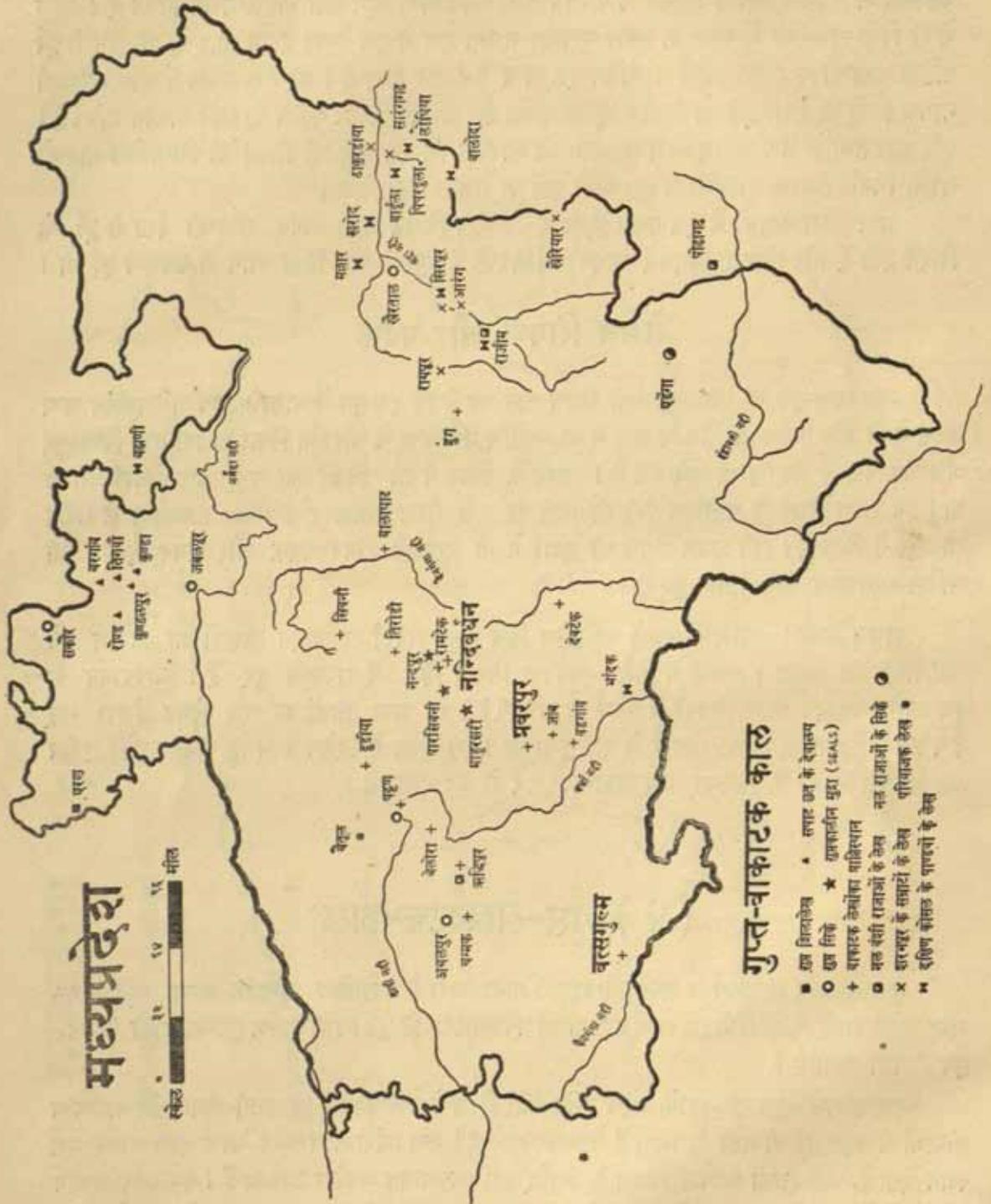
समुद्रगुप्त के बाद बुद्धगुप्त (४९४ ई०) और भानुगुप्त (५१० ई०) के समयों के लेख भी वहाँ उत्कीर्ण हैं और तत्कालीन विशाल मंदिरों के भग्नावशेष भी अद्यावधि देखे जा सकते हैं। एरण से दक्षिण में १२ मील दूर मध्य प्रदेश की सीमा पर पथारी नामक एक स्थान है जहाँ गुप्तकालीन लेख और मूर्त्ति-कला के कुछ अवशेष अद्यापि विद्यमान हैं।

गुप्त-काल का एक मंदिर जबलपुर के समीप तिगवाँ में भी अब तक बचा हुआ है। सपाट छत के बने हुए देवालय कटनी के पास रोण्ड, सकौर, कुम्डा, घनिया और कुण्डलपुर में हैं। यह वास्तु-कला गुप्त-काल की विशेष देन है। संभवतः इन कला-कृतियों का निर्माण गुप्त-काल में ही हुआ था।

अन्य वस्तुओं में गुप्त-काल के दो मुद्रा-लेख (Seals) नागपुर के पास माहुरझरी और पारसिवनी में पाये-गये हैं। गुप्त-शासकों के सोने के सिक्के हट्टा के समीप सकौर, बैतूल तहसील में पट्टन, होशंगाबाद तहसील में हरदा और जबलपुर में मिले हैं। रायपुर ज़िले में खैरताल से प्राप्त "श्री महेन्द्रादित्यस्य" ऐसे अंकित सिक्के कुमारगुप्त प्रथम के माने जाते हैं। ये सिक्के उत्पीड़ितांक मुद्रानुरूप (Repousse) हैं और यह उत्पीड़ितांक-खचन-विधि गुप्त-काल की मुद्रा-प्रयुक्त नवोद्भावना है। यह उत्पीड़न-विधि इस से पूर्व आभूषणादि पर चित्र-खचनार्थ प्रयुक्त होती थी। इसी लिये कतिपय विद्वानों का यह विचार है कि ये उत्पीड़ितांक मुद्रायें वस्तुतः मुद्रायें नहीं हैं वरन् शुभावसरों पर सन्मानोपहार रूप में दी जाने वाली प्रणतियाँ हैं। गुप्त-राजाओं के पश्चात् इस विधि का उपयोग नल-वंश तथा शरभपुर के राजाओं के द्वारा हुआ है। यहाँ यह भी कहना समुचित है कि इस उत्कीर्णांक-विधि के द्वारा निर्मित किये गये सिक्कों के एक पटल पर तो चिह्नांक ऊपर उठे हुए और सीधे रहते हैं, किन्तु दूसरे पटल पर वे ही चिह्नांक उल्टे और नीचे को दबे हुए रहते हैं। इस प्रकार कह सकते हैं कि ऐसे सिक्कों के उल्टे और सीधे दो पटल होते हैं। अन्य सिक्कों के समान इन सिक्कों के दोनों पटलों पर समान रूप में चिह्नांकन नहीं होता।

कुमारगुप्त के भी चाँदी के दस सिक्के इलिचपुर में पाये गये हैं।

वाकाटक-वंश

वाकाटक-वंश के महाराजा गुप्त सम्राटों से वैवाहिक संबंध से संबद्ध थे। ये बड़े शक्तिशाली शासक थे। इनका राज्य विदर्भ तथा मध्य भारत के विस्तृत भू-भाग पर फैला हुआ था। यद्यपि उनके शिला लेख उत्तर में अजयगढ़ राज्य के गंज और नाचने की तलाई नामक ग्राम से लेकर अजन्ता श्रेणी तक के विस्तृत क्षेत्र में प्राप्त होते हैं, परन्तु मध्य प्रदेश के अन्तर्गत केवल एक ही शिला-लेख चाँदा ज़िले के देवटेक ग्राम में विद्यमान है। यह अवश्यमेव ठीक है कि इनके अधिकांश ताम्र-लेख ही मध्य प्रदेश में प्राप्त हुए हैं भले ही यहाँ शिला-लेख न प्राप्त हुए हों।

इस वंश की दो प्रमुख शाखाओं में से एक तो वाशिम (प्राचीन वत्सगुल्म) और उसके निकटवर्ती क्षेत्र पर तथा दूसरी मध्य विदर्भ पर शासन करती थी। वाशिम-शाखा के केवल दो ही ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं और सभी शिला-लेख अजन्ता तथा घटोत्कच की गुफाओं से ही मिलते हैं। वत्सगुल्म के अतिरिक्त ताम्रपत्रों में वर्णित अन्य स्थानों का पता लगाना असंभव है, किन्तु वे स्थान अनुमानतः वाशिम के आसपास के क्षेत्र में ही स्थित थे। वाकाटकों की प्रधान शाखा से संबंधित प्रभावती गुप्ता के दो ताम्रपत्र, प्रवरसेन द्वितीय के बारह ताम्रपत्र और बालाघाट में पृथ्वीषेण का एक खण्डित दान-पत्र प्राप्त होते हैं। प्रवरसेन द्वितीय इस वंश का सब से प्रतापी शासक माना जाता है। वाकाटकों के तो सभी लेख संस्कृत में हैं किन्तु वत्सगुल्म के केवल एक प्राचीन शासक विन्ध्यशक्ति का एक ही ताम्रपत्र प्राकृत में उत्कीर्ण मिलता है।

प्रभावती गुप्ता के ताम्रपत्रों में "सुप्रतिष्ठित" नामक एक आहार अथवा प्रान्त या भूमि–भाग का उल्लेख मिलता है। अन्य ताम्रपत्र 'राम–पादमूल' (वर्तमान रामटेक) से दिया गया था।

प्रवरसेन द्वितीय के ताम्रपत्रों में बहुत से प्रदेशों का उल्लेख किया गया है, जो सिवनी, वर्धा, इलिच-पुर, बालाघाट, छिंदवाडा और भंडारा ज़िलों के अन्तर्गत हैं। इन उल्लिखित स्थानों में से बहुत से स्थानों का परिचय निश्चयात्मक रूप से प्राप्त हुई सामग्री के आधार पर दिया जा सकता है, यद्यपि विस्तृत प्रदेशों के भौगोलिक विस्तार के यथार्थ ज्ञान का प्राप्त करना कठिन है। कतिपय प्राचीन ग्रामों में भाषा के रूपान्तरित और परिवर्त्तित हो जाने के कारण नामान्तर अवश्यमेव हो गया है फिर भी उन ग्रामों का अस्तित्व न्यूनाधिक रूप में अद्यावधि कुछ हेर–फेर के साथ मिलता है।

प्रवरसेन की तीन राजधानियाँ थीं। एक थी नन्दिवर्द्धन में, जिसे इस समय नगरधन कहते हैं, दूसरी पद्मपुर में थी, जिसका इस समय कोई भी पता नहीं है और तीसरी राजधानी प्रवरपुर में थी। राजधानी का यह नाम सम्राट् के ही नाम पर रखा गया था। यह नगर इस समय भंडारा ज़िले के अन्तर्गत आधुनिक समय में पवनार के नाम से स्थित है। दोनों नामों में किस प्रकार नामान्तर हुआ है यह अवलोकनीय है, विशेषतया भाषा वैज्ञानिकों के लिये।

दुर्भाग्यवश वाकाटक वंशीय राजाओं के भवनावशेष तथा सिक्के प्राप्त नहीं हुए हैं। पवनार नामक स्थान से प्राप्त होनेवाली कुछ बहुत सुन्दर मूर्त्तियाँ वाकाटक-काल की जान पड़ती हैं। इन मूर्त्तियों के अंग-प्रत्यंग अथवा अवयवादि यथोचित अनुपात से हैं और ये मूर्त्तियाँ राम-कथान्तर्गत पात्रों की हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि उस काल में रामायणी कथा का अधिक प्रचार-प्रसार हुआ था।

भारतवर्ष के सर्वश्रेष्ठ कवि कालिदास वाकाटक नृपति प्रवरसेन के आश्रय में रहते हुए अपने अमर काव्यों और नाटकों की रचना करते थे। ये वही कालिदास हैं, जिनका स्थान संसार के कवियों में सर्वोच्च है और जिनके नाटक एवं काव्य विश्व के साहित्य में भी सर्वोत्कृष्ट हैं।

पवनार की केवल इन मूर्त्तियों से अतिरिक्त और कोई भी अन्य न तो मूर्त्तियाँ ही मिलती हैं और न कोई ऐसी अन्य वस्तुएँ ही प्राप्त होती हैं, जिनसे वाकाटक वंशीय राजाओं के कला-कौशलानुराग का विशेष परिचय प्राप्त हो सके। प्रवरसेन कृत 'सेतुबन्ध' अथवा 'रावणवहो' नामक प्राकृत भाषा-काव्य इस बात का प्रमाण है कि वह एक कुशल कवि और साहित्यकार थे। इसके आधार पर यह कह सकते हैं कि वाकाटक वंशीय राजा साहित्यानुरागी भी रहे थे। उनके काल में इसीलिये साहित्य की भी श्री-वृद्धि हुई है। वाकाटक वंशीय राजाओं का इतिहास वस्तुतः अध्ययन के लिये बहुत ही आकर्षक है। आवश्यकता अब यह है कि पवनार तथा नगरधन स्थानों के विस्तृत टीलों का उत्खनन-कार्य मनोयोग के साथ किया जाय। आशा यह है कि ऐसा करनेपर इतिहास की बहुत उपयोगी सामग्री प्राप्त हो सकेगी।

पृष्ठ १४ पर दिए हुए मानचित्र में वाकाटक-लेखों के प्राप्ति-स्थान दिये गए हैं।

नल-वंश

नल-शासक वाकाटकों के समकालीन थे और इनका आधिपत्य बस्तर–क्षेत्र पर था। इस वंश के अर्थपति, भवदत्तवर्मन्, वराहराज आदि शासकों के नाम ताम्रपत्रों, शिला-लेखों तथा सिक्कों पर मिलते हैं।

अर्थपति का एक ताम्रपत्र केसरिबेढ नामक ग्राम में हाल में ही प्राप्त हुआ है।

नल–वंशीय भवदत्तवर्मन् बहुत प्रतापी शासक थे। उनका एक ताम्र-पत्र विदर्भगत ऋद्धिपुर तथा एक शिला-लेख बस्तर राज्य की सीमा पर स्थित पोढ़ागढ़ ग्राम से प्राप्त हुआ है। संभवतः उन्होंने अन्तिम

वाकाटक शासक पृथ्वीषेण से युद्ध किया था, क्योंकि पृथ्वीषेण को अपने वंश की अवनति-पूर्ण स्थिति को दूर करने तथा अभ्युदय की उत्कर्षावस्था को पहुँचाने वाला कहा गया है। ऋद्धिपुर के ताम्रपत्र में उल्लिखित स्थान वाकाटक-राज्य के अन्तर्गत थे। इससे यह अनुमान किया जाता है कि वाकाटकों के अधिराज्य में से कुछ विभाग युद्ध-द्वारा भवदत्तवर्मन् के अधिकार में आ गया था।

भवदत्तवर्मन् के समय का पोड़ागढ़ से प्राप्त शिला-लेख पुष्करी नामक नगर में, जिसका पता अब तक नहीं लग सका, नल वंशीयों की राजधानी के होने का उल्लेख करता है। कुछ विद्वान् इस पुष्करी नगर का स्थानीकरण बस्तर से लगी हुई सीमा से आगे मद्रास राज्य में करते हैं।

विलासतुंग का राजीम स्थान से सम्प्राप्त लेख भवदत्तवर्मन् के उत्तराधिकारी का है और उस लेख में राजीम में एक विष्णुमन्दिर के निर्माण करने का वर्णन किया गया है। यह मन्दिर संभवतः राजीवलोचन का सुप्रसिद्ध मंदिर है, जिसमें यह लेख सुरक्षित है। इस लेख का समय प्रायः ७०० ईसवी है।

तीन नल शासकों (वराहराज, अर्थपति और भवदत्तवर्मन्) के सोने के सिक्के बस्तर राज्य के कोण्डेगाँव तहसील में एड़ेंगा नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं। ये सिक्के भी उत्पीड़ितांक मुद्रायें हैं।

अन्य गुप्त-कालीन वंश

उपरि निर्दिष्ट वंशों से अतिरिक्त गुप्त कालीन कई अन्य लेख मध्य प्रदेश में उपलब्ध हुए हैं। इन वंशों में राजर्षितुल्य-कुल, परिव्राजक, दक्षिण कोसल के पाण्डव और शरभपुर के राजवंश सम्मिलित होते हैं।

परिव्राजक वंशीय महाराज संक्षोभ का केवल एक दान-पत्र बैतूल में मिला था, जिसमें जबलपुर ज़िला के अन्तर्गत बिल्हरी के समीप पटपारा और द्वारा (प्राचीन प्रस्तरवाटक और द्वारवाटिका) नामक ग्रामों के दान का उल्लेख है।

दक्षिण कोसल के पाण्डववंशीय राजाओं (यह पाण्डव वंश महाभारतकालीन पाण्डव-वंश नहीं है) के कई लेख और दान-पत्र रायपुर तथा बिलासपुर ज़िलों में प्राप्त हुए हैं। इन में से सब से प्राचीन बह्मणी ग्राम का ताम्रपत्र है, जिस से इस वंश के साथ वाकाटक सम्राटों के संबंध का होना प्रतीत होता है। नन्नदेव का एक लेख, जो वस्तुतः प्रथम अपने मूल-स्थान आरंग से लाया गया था, अब भाँदक में मिला है। तीवरदेव के दो ताम्रपत्र, राजीम तथा बालोद में प्राप्त हुए हैं। इसमें कोई भी संदेह नहीं कि यह वंश ईसा की पाँचवीं शताब्दी में छत्तीसगढ़ प्रान्त पर शासन करता रहा, जिसका समय भ्रम-वशात् पहिले नवीं शताब्दी में कहा गया था। सिरपुर से प्राप्त कई लेखों में महाशिवगुप्त बालार्जुन का नाम आता है। उनकी माता वासटा के द्वारा सिरपुर का प्रसिद्ध लक्ष्मण-मंदिर बनवाया गया था, जिसको एक लेख में विष्णु-मंदिर कहा गया है। महाशिवगुप्त के तीन ताम्रपत्रों से इस बात का पता चलता है कि वह दीर्घायु थे और उनका शासन बहुत समय तक छत्तीसगढ़ तथा विशेषतः सारंगगढ़ पर रहा।

छत्तीसगढ़ में कई ईंटों के बने हुए देवालय उनके समय के प्रतीत होते हैं। ऐसे देवालय सिरपुर, खरोद, पुजारी पाली तथा कुर्वई ग्रामों में विद्यमान हैं। स्थापत्य कला की दृष्टि से यह देवालय उड़ीसा प्रान्तीय देवालयों से दूरतः संबंधित है। महाशिवगुप्त के मल्लार ग्राम वाले दान-पत्र से इसी समय छत्तीसगढ़ में बौद्धों को राजाश्रय प्राप्त होने का भी पता चलता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पाण्डव-वंशीय राजाओं की नीति सब धर्मों के प्रति समान औदार्य की थी और ये बौद्ध-धर्म-सहिष्णु भी थे। मल्लार, सिरपुर, आरंग, तुरतुरिया, दुग आदि स्थानों में प्राप्त बौद्ध मूर्तियाँ प्रायः इसी समय की प्रतीत होती हैं। विशेष उल्लेखनीय बात यहाँ यह

है कि न केवल प्रस्तर की ही मूर्त्तियाँ वरन् स्वर्ण-सलिल-स्नात पीतल की मूर्त्तियाँ भी सिरपुर में प्राप्त हो गयी हैं। पाण्डव-वंश के कई लेख लिपि की दृष्टि से उत्तर-गुप्त काल में रखे जा सकते हैं।

शरभपुर का शासक-वंश

शरभपुर नामक स्थान एक राज-वंश की राजधानी था और यह राजवंश शरभपुराधीशवंश कहा जा सकता है। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि शरभ नामक नरेश ने इस स्थान को अपनी राजधानी बनाया था और इसी लिये इसका नाम भी उसके नाम पर रखा गया था। यह प्राचीन राजधानी संभवतः मध्य प्रदेश की पूर्वीय सीमा के निकट उड़ीसा प्रान्त में थी। शरभपुर-नरेशों का शासनाधिकार सारंगगढ़ राज्य तथा रायपुर ज़िले में नल-वंश के पश्चात् रहा। महाराज नरेन्द्र का एक ताम्रपत्र सारंगगढ़ में पिपरदुला नामक ग्राम में प्राप्त हुआ था। इस वंश के महाजयराज का एक ताम्रपत्र आरंग में और महासुदेवराज के पाँच ताम्रपत्र खैरियार, आरंग, सिरपुर, रायपुर तथा सारंगगढ़ में उपलब्ध हुए हैं। इन ताम्रपत्रों में उल्लिखित सभी स्थल बालोदा बहार तथा खैरियार के समीप हैं। महासुदेव के भ्राता महाप्रवरराज का एक ताम्रपत्र सारंगगढ राज्य में ठाकुरदीया ग्राम से प्राप्त हुआ है। इस वंश के एक अन्य राजा महाभवगुप्त का भी पता चला है, जिसके ताम्रपत्र में उल्लिखित स्थान भी सारंगगढ राज्य में हैं।

इस वंश के महाराज प्रसन्नमात्र के चाँदी के सिक्के सारंगगढ़ राज्य में महानदी के तट पर साल्हे-पाली नामक ग्राम से प्राप्त हुए हैं। ये सिक्के भी उत्पीड़ितांक मुद्रायें हैं।

गुप्त तथा गुप्तोत्तर कालीन अन्य जो लेख मिले हैं उनमें से अधिकांश गौण है, केवल एक ताम्रपत्र उल्लेखनीय हैं, क्योंकि इसमें महाराज भीमसेन का नाम अंकित मिलता है। इस ताम्रपत्र पर जो समय अंकित है, वह कुछ ऐसा है कि प्रथम उसे २८२ गुप्त संवत् समझा गया था, किन्तु अब जो शोध किया गया है उसके अनुसार १८२ गुप्त-काल निश्चित किया गया है। इस ताम्रपत्र में शासक के वंशादि का परिचय नहीं दिया गया है, किन्तु उनके कुल को "राजर्षि-तुल्य" कहा गया है। इसी ताम्रपत्र में जो स्थान उल्लिखित है उन्हें यथासंभव रायपुर ज़िले में ही होना चाहिये। यद्यपि इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं है।

(५) राष्ट्रकूट वंश

मध्य प्रदेश के अन्तर्गत विदर्भ प्रान्त पर दो सौ वर्षों से अधिक काल तक राष्ट्रकूटों का राज्य रहा। इस वंश की कई शाखायें थीं। कम से कम तीन या तीन से अधिक शाखायें तो यहीं पर शासन करती थीं और उनमें से सबसे प्राचीन शाखा बैतूल के निकटवर्ती क्षेत्रों पर राज्यारूढ़ रहीं। यह बात बैतूल तथा अकोला ज़िले से प्राप्त तीन दान पत्रों (जिनमें से एक बनावटी है) से स्पष्ट ज्ञात होती है। ये दानपत्रों नन्नराज अपर नाम युद्धासुर के द्वारा अंकित कराये गये थे। इनका समय ईसवी सन् ६९३–७१६ के आसपास है। एतद् पूर्वकालीन एक दानपत्र, जो संभवतः उसी वंश के राजा स्वामीराज द्वारा दिया गया था, रामटेक के निकट नगरधन से प्राप्त हुआ था। यह स्मरणीय है कि इस नगर से दो दानपत्र पहिले और प्राप्त हो चुके हैं। जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है इन दानपत्रों में वर्णित बहुत से स्थान बैतूल और अकोला ज़िलों के आसपास तथा रामटेक के समीप स्थित हैं।

इस वंश का प्रभाव वस्तुतः स्थान-सीमित प्रतीत होता है। किन्तु कियत्कालोपरान्त विदर्भ मान्यखेट के सम्राट-परिवार के विस्तृत राज्य में सम्मिलित हो गया। मान्यखेट की शाखा से सम्बंध रखनेवाले पाँच ताम्रलेख और तीन शिलालेख ऐसे प्राप्त हुए हैं, जिनसे यह प्रतीत होता है कि इस राज-परिवार-शाखा का अविच्छिन्न शासन इस प्रान्त पर दो सौ वर्षों तक रहा। भाँदक में प्राप्त कृष्णराज प्रथम का ताम्रपत्र सबसे प्राचीन है, जो नान्दिपुरी द्वारी, आधुनिक नान्दूर (?) में लिखा गया था और जिसमें सूर्य-मन्दिर के एक पुजारी को दान का उल्लेख है। राष्ट्रकूट वंश के सबसे अधिक प्रतापी शासक गोविन्द तृतीय के चार दानपत्र उपलब्ध हुए हैं, जिन में अमरावती तथा अकोला ज़िलों के कई गाँवों का उल्लेख आता है। उनमें से तीन दानपत्रों में धाराशिव (हैदराबाद राज्य) के निवासी एक ही दान-पात्र का उल्लेख किया गया है। इस दानपात्र का नाम ऋषियप्प था जो संभवतः दाक्षिणात्य कनडी ब्राह्मण था। इसी ब्राह्मण को अमरावती ज़िले में और भी गाँव मिले थे।

राष्ट्रकूट वंशीयों के शासन के अन्तिम समय में इस वंश का प्रभुत्त्व-प्रभाव उत्तर की ओर भी बढ़ गया था, क्यों कि अन्तिम शासक कृष्ण तृतीय का नाम छिन्दवाड़ा ज़िले के नीलकण्ठी शिलालेख में भी आता है और उसी की प्रशस्ति से युक्त एक शिलालेख मध्य प्रदेश की उत्तरी सीमा पर, मैहर की पश्चिम दिशा में लगभग बारह मील दूर जुरा नामक ग्राम से प्राप्त हुआ है। उसका अन्य दानपत्र नागपुर–नन्दिवर्द्धन (वर्तमान नगरधन) से दिया गया था।

परवर्त्ती राष्ट्रकूट शासकों के वैवाहिक संबंध त्रिपुरी के कलचुरियों से हुए थे और कई कलचुरि राजकुमारियाँ राष्ट्रकूट राजाओं को विवाहित हुई थीं।

राष्ट्रकूट राजवंश की एक (मानपुर) शाखा पहिले होशंगाबाद के निकटवर्त्ती प्रदेश पर शासन करती हुई कही जाती थी, किन्तु अनुसंधान से यह प्रकट होता है कि यह शाखा प्रधानतः बम्बई राज्यान्तर्गत सातारा ज़िले से संबंधित थी और इसी कारण पृष्ठ २० पर दिये हुए मध्य प्रदेश के मानचित्र में इस शाखा के अधिकृत स्थानादि को इस लिये नहीं दिखलाया गया चूँकि वे स्थानादि मध्य प्रदेश के अन्तर्गत नहीं आते।

राष्ट्रकूट वंश के एक अन्य राजा गोल्हणदेव का उल्लेख लगभग बारहवी शताब्दी के बाहुरीबन्द स्थान में स्थित जैन-मूर्ति-लेख से प्राप्त होता है। संभवतः वह त्रिपुरी के कलचुरि-राजवंश का सामन्त था।
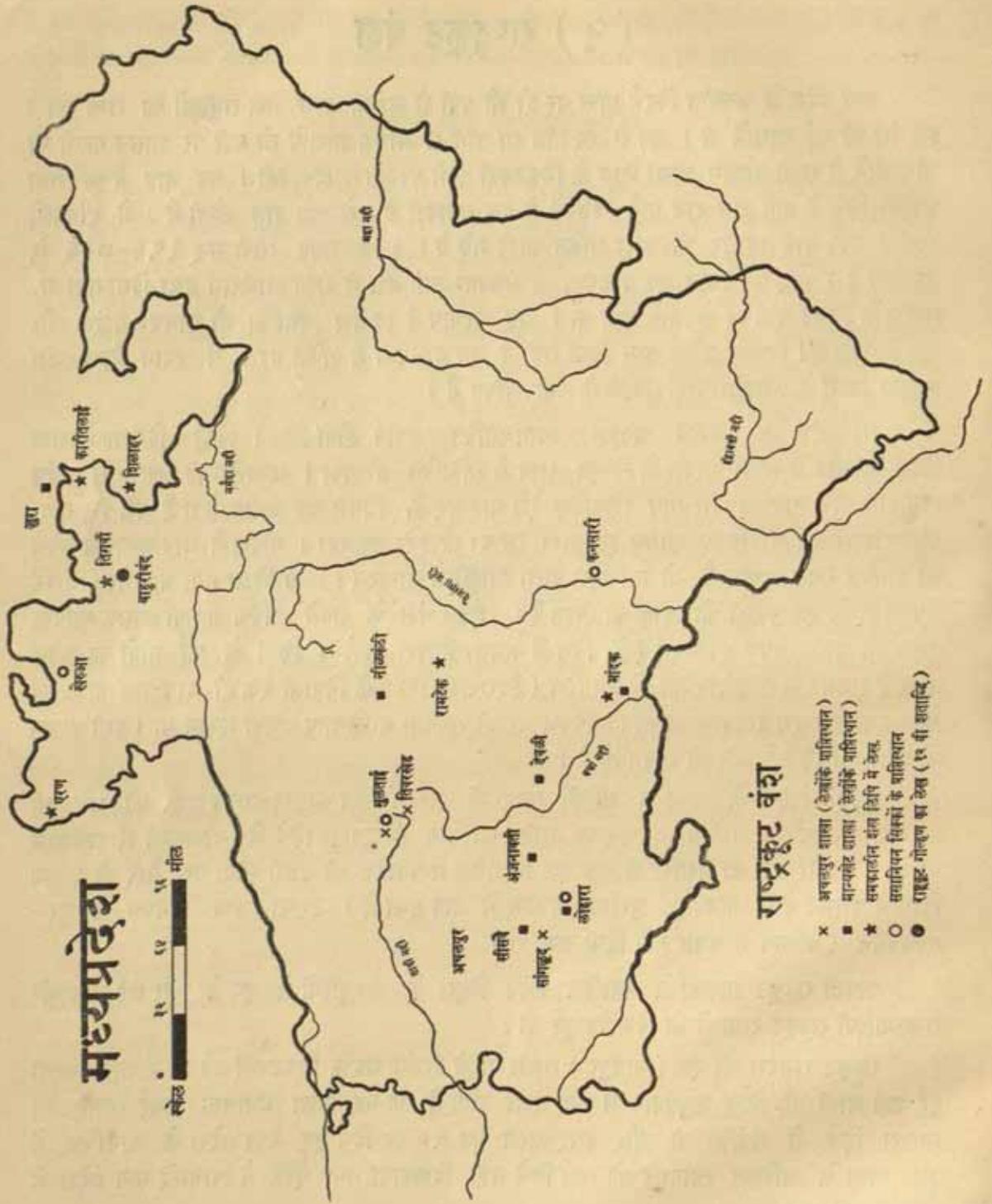
मध्यप्रदेश
स्केल
मील
एरण
सेरआ
तिगवा
बाहुरीबंद
कारीतलाई
बिलहरी
नर्मदा नदी
मुलताई
तिवरखेड
नीलकंठी
रामटेक
अचलपुर
सीरसी
अंजनावती
सांगलूद
देवली
लोहारा
भांदक
कनघारी
राष्ट्रकूट वंश
अचलपुर शाखा (लेखोंके प्राप्तिस्थान)
मान्यखेट शाखा (लेखोंके प्राप्तिस्थान)
राष्ट्रकूट गोल्हण का लेख (१२ वी शताब्दि)

राष्ट्रकूट शासकों के सिक्के अभी तक प्राप्त नहीं हैं। उनके समय में प्रायः " इंडो-ससानियन " सिक्के प्रचलित थे। इन सिक्कों में से कुछ सिक्के मध्य प्रदेश में भी प्राप्त होते हैं और उन्हें इस समय 'गधिया का पैसा' कहते हैं[1]। गुप्त तथा गुप्तोत्तर-काल में मध्य प्रदेश एवं भारतवर्ष में 'शंख-लिपि' का प्रादुर्भाव हुआ था। इस लिपि का पढना बहुत असाध्य है। राजीम, एरण, कारीतलाई, पचमढ़ी, भाँदक तथा तिगवाँ में शंख लिपि में उत्कीर्ण लेख प्राप्त होते हैं। कई विद्वानों के मतानुसार शंख-लिपि केवल गुप्त-काल में ही प्रचलित थी।

राष्ट्रकूट-काल की मूर्ति-कला तथा स्थापत्य-कला के विषय में हमारा ज्ञान बहुत सीमित है। दक्षिण में राष्ट्रकूट वंश की प्रधान शाखा के स्थापत्य-कलावशेष अधिकांशतः उपलब्ध हैं परन्तु पुरातत्त्वशास्त्रज्ञों के द्वारा वे उपेक्षित प्राय हैं और खोज़ की प्रतीक्षा करते हुए अभी तक स्थित हैं।

(६) कलचुरि-वंश

मध्यप्रदेश में कलचुरि नाम जनश्रुतियों, लेखों और मूर्तियों के द्वारा सर्वविदित है। मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में कलचुरि-काल की अगणित मूर्तियाँ बिखरी पड़ी हैं और जबलपुर, दमोह, कटनी तथा होशंगाबाद ज़िलों में ऐसा कोई गाँव नहीं है, जो इस समय की कला से अछूता हो और जहाँ कलचुरि-कालीन कुछ न कुछ मूर्तियाँ किसी न किसी रूप में सामान्यतया न पाई जाती हों।

कलचुरि राजवंश की दो शाखायें थीं, जो अपने को कार्तवीर्य सहस्रार्जुन से उत्पन्न बतला कर (१) त्रिपुरी और (२) रतनपुर में राज्य करती थीं।

बतलाया जाता है कि इस वंश के प्रथम शासक कोकल्ल ने नवीं शताब्दी ईसवी के अन्तिम काल में जबलपुर के उत्तर की ओर फैले हुए डाहल नामक प्रदेश पर विजय प्राप्त कर उस क्षेत्र को अपने अठारह पुत्रों में बाँट दिया। उनमें से सबसे बड़ा पुत्र त्रिपुरी का शासक हुआ और बिलासपुर का पार्श्ववर्ती क्षेत्र कनिष्ठ पुत्र के भाग में आया। उक्त शाखा के शक्तिशाली शासक रत्नदेव ने अपनी नई राजधानी बिलासपुर के उत्तर लगभग २० मील की दूरी पर एक स्थान-विशेष में स्थापित की और उस स्थान का नाम रत्नपुर रखा गया। तब से रत्नदेव की वंश-शाखा रतनपुर शाखा के नाम से विख्यात हो गई।

प्राप्त लेखों में त्रिपुरी–शाखा के लगभग पन्द्रह शासकों का उल्लेख मिलता है। ऐसे लेख अबतक तीस के लगभग प्राप्त हुए हैं, जिन में से आठ ताम्रपत्र हैं। कलचुरि लेखों के समकालीन लेखों की संख्या भी बहुत है।

यद्यपि त्रिपुरी शाखा की राजधानी त्रिपुरी थी, किन्तु कलचुरि वंश के प्रारम्भिक राजाओं के लेख मुख्यतया विन्ध्यप्रदेश के रीवाँ राज्य तथा कटनी, दमोह जैसे स्थानों में, जो मध्य प्रदेश की उत्तरी सीमा पर हैं, मिलते हैं। कारीतलाई, छोटी देवरी, सागर आदि के क्षेत्रों से इस वंश के सबसे प्राचीन लेख प्राप्त हुए हैं, जिनसे इस प्रकार कलचुरि वंशीय सुव्यवस्थित साम्राज्य का परिचय प्राप्त होता है। राष्ट्रकूट राजाओं के

---

[1] इन सिक्कोंपर मूलतः राज-शिर अंकित था, किन्तु आगे चलकर इन सिक्कों का साँचा ऐसा बिगड़ गया कि उससे सिक्कोंपर जो चिह्न उतर कर आया वह गर्दभ सा प्रतीत हुआ। इसीलिये इसे लोग इस नाम से पुकारने लगे। ये सिक्के चाँदी तथा ताँबे के हैं।

कलचुरी वंश
लेखोंके प्राप्तिस्थान
देवालय (उल्लेखित)
देवालय के स्थान
सिक्के
स्केल ० ३२ ६४ ९६ मील
चनपाहा
कोसम्ब
प्रयाग
झुसी
बनारस
देवतलाव
अल्हाघाट
वैजनाथ
लालपहाड
रीवाँ
गुर्गी
मसान
मरई
चंद्रेहे
बरगांव
पोण्डी
कारीतलाई
सलेया
देवरी
केलवारा
रिठि
बिल्हेरी
बाहुरीबंद
इसुरपुर
सोहागपूर
कुंभी
त्रिपुरी
भेडाघाट
गोपालपूर
नर्मदा नदी
अमरकंटक
कोमो
रतनपूर
जाजल्लपूर
सरखो
सोनसारी
अकलतारा
आमोदा
सकती
कोणी
मल्लार
खरोद
तलोरा
बालपूर
पारगांव
सारंगगढ
विलैगढ
डेकोणी
नारायणपूर
खेरागढ
राजिम
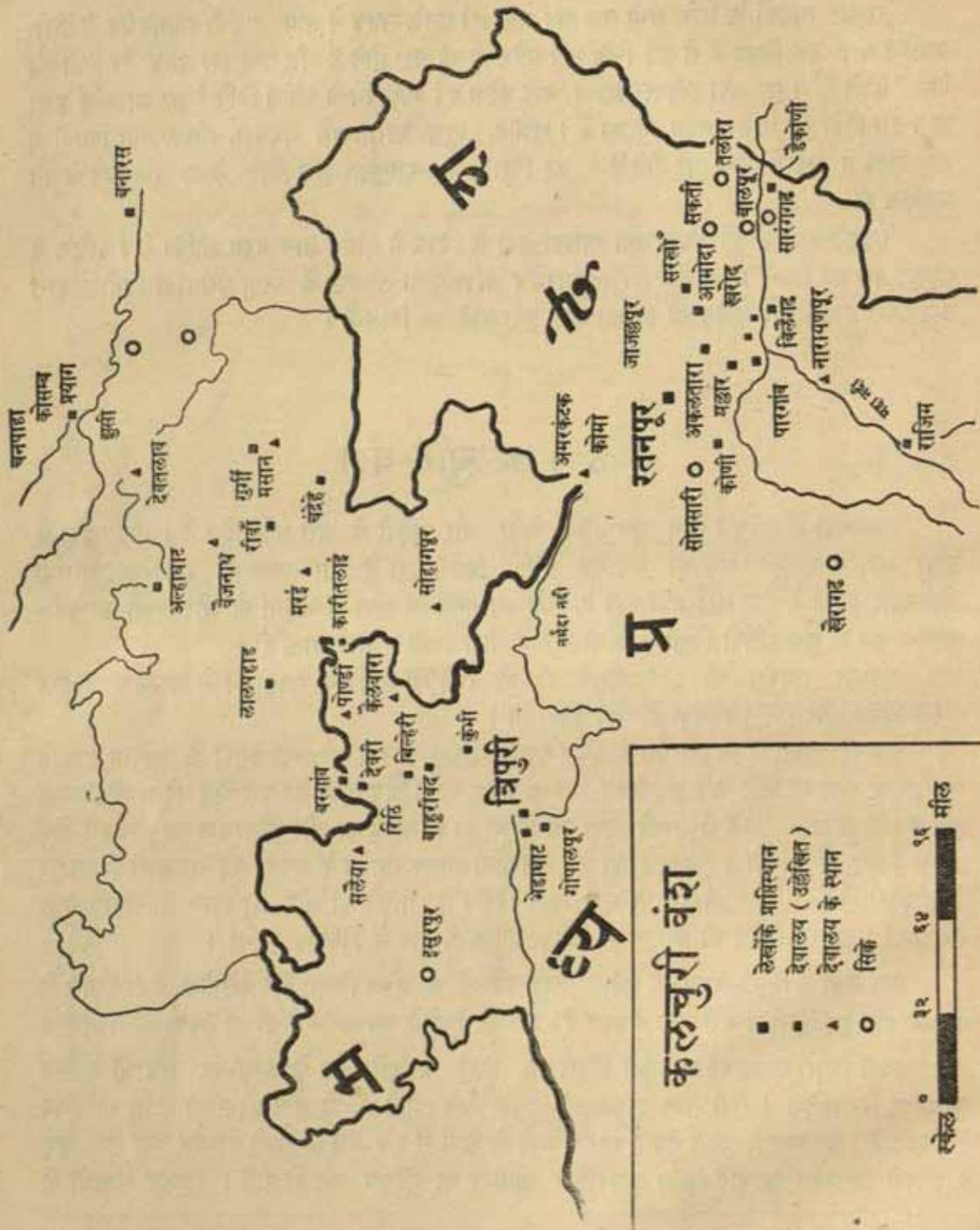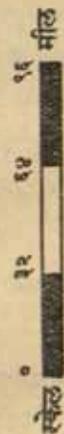
मुख्य वंश के साथ त्रिपुरी शाखा के कल्चुरि राजाओं ने वैवाहिक संबंध स्थापित किये थे । अधिकांशतः कल्चुरि कन्यायें ही राष्ट्रकूट वंश में विवाही गई थीं । एक कल्चुरि राजा ने एक हूण स्त्री के साथ विवाह किया था, यद्यपि हूण वंश की सामाजिक प्रतिष्ठा ऊँची न थी । इस वंश की राज-महिषियों के नाम भी कुछ विचित्र से हैं, जैसे अल्हणदेवी, नोहलादेवी, बोसलादेवी आदि ।

त्रिपुरी-शाखा का सबसे प्रतापी शासक सम्राट् कर्ण था । जनश्रुतियों, लेखों, साहित्यिक विवरणों तथा लोक-गीतों के द्वारा यह जाना जा सकता है कि अपना सारा जीवन उसने विविध राजाओं पर आक्रमण करके उनसे युद्ध करने में बिताया था और अपने प्रभुत्व-प्राधान्य को विस्तृत-क्षेत्र व्यापी किया था । लेखादिकों से यह स्पष्ट है कि उसके शासन--काल में कल्चुरि--साम्राज्य का भौगोलिक विस्तार सबसे अधिक था । उसके पश्चात् अयोग्य अधिकारियों के हाथ में वह विशाल साम्राज्य थोड़े ही दिनों तक स्थिर रह सका । कर्ण के साम्राज्य की सीमा उत्तर में प्रयाग, कोसम्ब (कौशाम्बी) बीरभूम और बनारस (सारनाथ) तक पहुँच गयी थी । कल्चुरि वंशीय राँजाओं के प्रशंसनीय कार्यों में से पाशुपत-पंथ-संरक्षण, प्राकृत-साहित्य-प्रोत्साहन तथा शैव और जैन धर्मों का समादर विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं । राजशेखर जैसे कवि इसी वंश के आश्रय में प्रख्यात हुए । राजशेखर का 'कर्पूरमञ्जरी' नामक प्रसिद्ध नाटक कल्चुरि--दरबार के प्रोत्साहन से ही रचा गया था ।

इस वंश ने मूर्त्ति-कला को भी प्रचुर-प्रोत्साहन देकर सुविकसित किया । तत्कालीन मूर्त्ति-कला में यद्यपि रूप-रम्यता के साथ सामान्य से सामान्य बातों के भी प्रकट करने का पूरा प्रयत्न किया गया है तथापि मूर्त्तियों में भाव-भावना-प्रतिबिम्ब और सजीवता के लाने की ओर विशेष प्रयास नहीं किया गया । प्राप्त मूर्त्तियाँ मूर्त्तिकला के निश्चित् नियमों के आधार पर अवश्यमेव निर्मित की गई हैं किन्तु वे प्रायः निष्प्रभ और भावोद्रेककारिणी विशेष रूप में नहीं हैं । फिर भी यह मानना पड़ेगा कि इस समय की मूर्त्ति-कला के सराहनीय विकास का श्रेय वास्तव में कल्चुरि राजवंश को ही हैं । कल्चुरि-कालीन मूर्त्तियों से यह स्पष्ट है कि इस मूर्त्ति-कला पर गुप्त-कालीन मूर्त्ति-कला का अधिक प्रभाव है । किन्तु यह निश्चित रूप में कहा जा सकता है कि कल्चुरि-मूर्त्तियों में मूर्त्ति-कला की कुछ रूढ़ियों का बड़ी दृढ़ता से पालन किया गया है । इसीलिये प्रायः उनमें आकृति-साम्यादि अनिवार्य रूप में प्राप्त है । कला में मौलिक नव्यता, भव्यता के साथ नहीं आई । मूर्त्तियों में बहिरंग बातों पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है और भावना-प्रतिबिम्ब के लाने का बहुत अल्प सा प्रयास किया गया है । एक दृष्टि से यह कला का कोई समुन्नत स्वरूप नहीं है । क्योंकि कला का उत्कर्ष भाव-भावना व्यंजकता में ही अधिक है न कि रूप-रंजकता में । निजी विशेषता का ध्यान रख कर भी कल्चुरि-काल की मूर्त्तियों को देखकर यह नहीं कह सकते कि मूर्त्तियाँ बोलती सी हैं ।

कल्चुरियों ने जिस स्थापत्य-कला को अपना कर प्रोत्साहन देते हुए विकसित किया था, उस पर उस कला का विशेष प्रभाव है, जिसे चन्देलों ने, जो कल्चुरियों के समकालीन हैं, प्रश्रय दिया था ।

कई कल्चुरि मंदिर अद्यापि विद्यमान हैं, जिनमें से अमरकंटक, छोटी देवरी, भेड़ाघाट, सिमरा, रीठी आदि स्थानों के मंदिरों का उल्लेख करना आवश्यक है । रीवाँ राज्य के सोहागपुर, गुर्गी, चन्द्रेहे, देवतलाव, अमरकंटक इत्यादि स्थानों में कल्चुरि स्थापत्यकला के बहुत अच्छे उदाहरण पाये जाते हैं । खेद का विषय है कि ऐसे सुरक्षणीय मन्दिरों की सुरक्षा नहीं रही और उनसे बहुत सी सामग्री इतस्ततः चली गई है ।

सुरक्षा की दृष्टि से कल्चुरि-काल में विशाल और अभेद्य दुर्गों की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था । त्रिपुरी की खुदाई में कल्चुरियों का एक दुर्ग सा निकल आया है ।

बारहवीं शताब्दी ईसवी के अन्त में इस वंश का भी अन्त हो गया। इस वंश के लेखों में एक विशेष संवत् का प्रयोग किया गया है, जिसे 'कलचुरि-चेदि' संवत् कहा जाता है। यह संवत् २४९ ई० में कार्त्तिक मास से प्रारम्भ होता है।

कलचुरि-वंश के एक पूर्व शासक कृष्णराज के चाँदी के सिक्के विदर्भ के कई स्थानों में पाये गये हैं। त्रिपुरी-शाखा के केवल एक शासक गांगेयदेव के सिक्कों का पता चलता है। वे सागर, जबलपुर जैसे मध्य प्रदेश के उत्तरी ज़िलों में तथा उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर आदि दक्षिणी ज़िलों से प्राप्त हुए हैं। वे सोने, चाँदी तथा ताँबे के हैं। ताँबे तथा चाँदी के सिक्के स्वर्ण-मुद्राओं की अपेक्षा कम हैं।

कलचुरि वंश की रतनपुर शाखा

कलचुरियों की रतनपुर शाखा कोकल्ल के सब से छोटे पुत्र कलिंगराज से प्रारम्भ होती है, जिसे कोमो मण्डल में तुम्माण के आसपास का प्रदेश नवीं शताब्दी ईसवी के अन्त में प्राप्त हुआ था। इस शाखा के ग्यारह शासकों का विवरण प्राप्त होता है और स्थूल विचार से उनका राज्य महानदी के उत्तर बिलासपुर ज़िले में फैला हुआ था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि रायपुर के भागों पर उनके सामन्तों का अधिकार रहा होगा। ईसवी १११४ से लेकर १२१४ तक की एक शताब्दी में इस वंश के २८ लेख प्राप्त होते हैं, जिनमें १३ ताम्रपत्र तथा १५ शिलालेख हैं। उनमें से अधिकांश (दस) इस वंश के प्रभावशाली शासक पृथ्वीदेव द्वितीय के हैं।

पूर्व की ओर चोड़ (चोल) शासकों के आक्रमणों को विफल कर यह शाखा बिलासपुर ज़िले में सुदृढ़ हो गई। इस वंश के शासक तथा सामन्त अपने जन-हित के कार्यों के लिये जिन में मन्दिर, सरोवर, उपवन तथा विहार आदि का निर्माण मुख्य है, प्रसिद्ध थे। इस स्थापत्य-सामग्री का अध्ययन अभी तक इस रूप में भी नहीं हुआ जिस रूप में इसी वंश की त्रिपुरी-शाखा की अवशिष्ट सामग्री का अध्ययन श्री राखलदास बनर्जी ने किया है।

इनके बहुत से स्मारक, जिन्हें उत्खनन कार्य के द्वारा प्रकाश में लाया जा सकता है, बिलासपुर ज़िले के वन्य-प्रदेश में अज्ञात से पड़े हुए हैं।

जाजल्लदेव, पृथ्वीदेव द्वितीय तथा रत्नदेव द्वितीय के ताँबे तथा सोने के सिक्के उपलब्ध होते हैं। हाँ, पृथ्वीदेव द्वितीय के चाँदी के सिक्कों का भी पता चलता है। इसी वंश के अन्तिम शासक प्रतापमल्ल के केवल ताँबे के सिक्के मिलते हैं। ये सिक्के मुख्यतया बिलासपुर, रायपुर, सारंगगढ़, छत्तीसगढ़ राज्य तथा कुछ उत्तर-प्रदेश के मिर्ज़ापुर ज़िले में प्राप्त होते हैं।

पृष्ठ २२ पर दिये गये मानचित्र से लेखों तथा सिक्कों के प्राप्ति-स्थानों का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

कलचुरियों के सभी लेखों का एक बृहद्ग्रन्थ नागपुर के महामहोपाध्याय प्रोफेसर वा० वि० मिराशी द्वारा "भारतीय-लेख-संग्रह" (Corpus Inscriptionum Indicarum) के चतुर्थ भाग के रूप में शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है।

(७) यादव साम्राज्य

इतिहास से यह विदित होता है कि ईसा की ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी के मध्य में विदर्भ का अधिकांश भाग देवगिरि के यादव शासकों के आधिपत्य में था। वारंगल के काकतीय राजाओं को परास्त करने के पश्चात् विशेष कर यादव वंशी नृपति सिंघण और रामचन्द्र के शासन-काल में इस वंश का साम्राज्य उत्तर की ओर विदर्भ में फैला और इसका श्रेय प्रधानतः सिंघण के सेनापति खोलेश्वर को है।

यादवों के निम्नलिखित शिलालेख मध्य प्रदेश में प्राप्त हुए हैं:—

(१) हेमाद्रि का बार्शी-टाकली शिला-लेख, शक १०९८
(२) सिंघण के राज्य-काल का अमड़ापुर शिला-लेख, शक ११३३
(३) यादव कृष्ण के काल का नान्दगाँव शिला-लेख, शक ११७७
(४) यादव रामचंद्र का रामटेक शिला-लेख, शक १२२२
(५) यादव रामचंद्र के समय का काटा शिला-लेख, शक १२२७
(६) यादव रामचंद्र का लाञ्जी शिला-लेख

इनके अतिरिक्त मध्य प्रदेश की दक्षिणी सीमापर उनकेश्वर नामक स्थान में यादव रामचंद्र का शक संवत् १२२२ का एक अन्य लेख भी मिला है।

बार्शी टाकली का लेख एक मन्दिर के निर्माण का उल्लेख करता है। अमड़ापुर शिला-लेख महाराज सिंघण के शासन-काल से संबंधित है। पूर्व मराठी भाषा में लिखित नान्दगाँव के शिला-लेख में तत्रस्थ एक विशेष मन्दिर में पुष्पादि अर्चनोपासना सामग्री में व्यय करने के लिये दान देने का उल्लेख मिलता है। रामटेक के शिला-लेख में कई निकटस्थ पवित्र स्थानों, जो तीर्थ के नामसे लेखाङ्कित हैं, तथा महाराज रामचंद्र के कई महत्त्वपूर्ण दानों का उल्लेख है। लाञ्जी का शिला-लेख सन्तोषजनक रूप से नहीं पढ़ा जा सकता।

यादव सिंघण का सेनापति खोलेश्वर अमरावती का निवासी था। हैदराबाद राज्य के आम्बे नामक ग्राम से प्राप्त लेख में उसके कई दानों का उल्लेख किया गया है। उसके द्वारा अचलपुर में विष्णुमन्दिर के निर्मित कराये जाने का वर्णन किया गया है। पयोष्णी (पूर्णा) नदी के तट पर इसी सेनापति ने अपने ही नाम पर एक नगर (आधुनिक खोलापुर) की भी स्थापना की थी। इसी प्रकार वरदा (वर्धा) नदी के किनारों पर कतिपय मन्दिरों, अग्रहारों तथा कूपों आदि समाजोपयोगी स्थानों का उसी के द्वारा निर्मित कराया जाना भी कहा जाता है। इस शिला-लेख का लेखन-काल शक संवत् ११५० है।

विदर्भ में यादव शासकों के विशेष उल्लेखनीय कला-कार्य हेमाडपंती मन्दिर हैं, जो अकोला, बुलढाणा, यवतमाळ, वर्धा, वाशिम, नागपुर तथा भंडारा ज़िलों के विस्तृत क्षेत्र में बिखरे हुए हैं। संभवतः इस समय यादव साम्राज्य विस्तृत होकर नर्मदा के उस पार अथवा छत्तीसगढ़ प्रान्त तक न हुआ था और बालाघाट ज़िले में लाञ्जी तथा भीर, जहाँ हेमाडपंती मन्दिर मिले हैं, इस साम्राज्य के दो सीमान्त स्थान ही जान पड़ते हैं।

पृष्ठ २६ पर दिये गये मानचित्र में विदर्भ के अधिकांश हेमाडपंती मन्दिर-स्थान निर्दिष्ट कर दिये गये हैं। इन स्थानों में से लोणार, मेहेकर, साकेगाँव, धोतरा, बार्शी-टाकली, सिरपुर तथा सिंदखेड के मन्दिर स्थापत्य और शिल्प-कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।
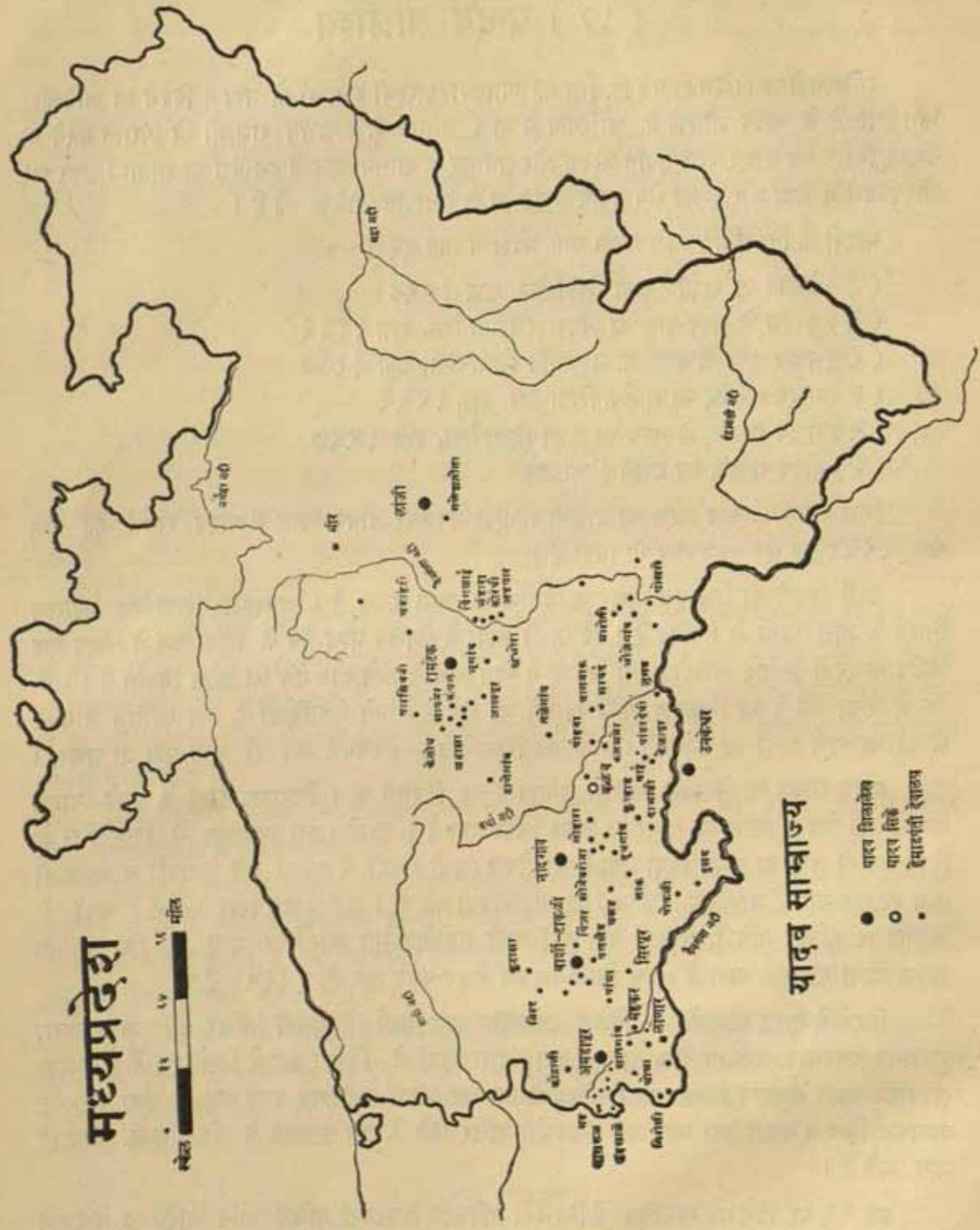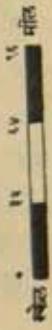
मध्यप्रदेश
स्केल
मील
नर्मदा नदी
रामटेक
लांजी
नांदगांव
बार्शी-टाकळी
अमरापुर
मेहकर
लोणार
सिरपूर
उनकेश्वर
यादव साम्राज्य
यादव शिलालेख
यादव सिक्के
हेमाडपंती देवालय

हेमाडपंती मन्दिरों के संबंध में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि ये मन्दिर बड़ी बड़ी शिलाओं को काट-छाँटकर निकाले गये सुडौल प्रस्तर खण्डों को एक दूसरे पर रख कर बनाये गये थे और उनमें कहीं भी चूने का जोड़ नहीं है। मन्दिरों की भीतरी छतों पर प्रायः उभड़े हुए कमलाकृति चित्रित किये गये हैं। उनके खम्भे अधिकांशतः वर्गाकार हैं। कभी उन खम्भों के मध्यभाग घटाकार रखे गये हैं। मन्दिरों के चारों ओर सुंदर सुदृढ़ प्राकार और मन्दिरों की चारों दीवालों में आले बनाकर विविध प्रकार की मूर्त्तियाँ स्थापित की गई हैं। इन मन्दिरों में प्रायः शिव-मूर्त्तियों का बाहुल्य हैं। कुछ मंदिरों में देवी और विष्णु की मूर्त्तियाँ भी हैं। उन्हीं मन्दिरों में कहीं-कहा कुछ जैन मन्दिर भी हैं।

इन मन्दिरों से अतिरिक्त इन्हीं ढंग से बनी हुई धर्मशालायें, वापियाँ, मठों आदि के भव्य भवन भी उल्लेखनीय हैं और तत्कालीन स्थापत्य-कला के अच्छे उदाहरण हैं।

यादवों के राज्य-काल में महानुभाव-सम्प्रदाय, जो एक बड़ा सा धार्मिक सम्प्रदाय है, का धार्मिक आन्दोलन बड़ी तीव्र-गति से चला। इसके प्रवर्तक श्री चक्रधर थे, जो महाराज कृष्ण तथा रामचंद्र के समकालीन थे। इस सम्प्रदाय का साहित्य विशेष सांकेतिक लिपि तथा पूर्व मराठी भाषा में लिखा गया है। इनमें से एक ग्रन्थ में जो 'स्थान-पोथी' के नाम से प्रसिद्ध है, विदर्भ के महानुभाव स्थानों का भौगोलिक वर्णन दिया गया है।

यादव राजाओं के सोने के सिक्के मध्य प्रदेश के यवतमाल ज़िले में कलम्ब नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं।

(८) धार्मिक जीवन

बौद्ध-धर्म

बौद्ध धर्म जो अब मध्य प्रदेश में पूर्णतया समाप्त सा हो चुका है, शातवाहन काल में अपनी सामान्य उन्नत दशा में था। यह बात त्रिपुरी की खुदाई से प्राप्त दूसरी शताब्दी के बौद्ध-विहारों तथा तत्कालीन पातुर और भाँदक में स्थित गुफ़ाओं द्वारा स्पष्ट होती है। ईसा की पाँचवीं तथा छठवीं शताब्दी के पश्चात् बौद्धों की महायान शाखा के अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक हो गई। सिरपुर, तुरतुरीया, तेवर, गोपाल-पुर, तिल्वारा घाट, भेड़ाघाट तथा डुग आदि स्थानों से अवलोकितेश्वर, पद्मपाणि, बोधिसत्व, तारा आदि मूर्त्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि उस समस्त प्रान्त में बौद्ध धर्म की महायान शाखा का पर्याप्त प्रचार था।

लगभग ६०० ईसवी में महाशिवगुप्त लिखित मल्लार ग्राम से प्राप्त एक दान पत्र में तरडंशक नामक स्थान में स्थित एक बौद्ध-विहार को ग्राम दान दिये जाने का उल्लेख है। यह अनुमान किया जाता है कि यह स्थान बिलासपुर ज़िले के अन्तर्गत, मल्लार की ईशान्य दिशा में ११ मील पर स्थित आधुनिक तरोड नामक ग्राम हो सकता है। किन्तु इस का निश्चय ठीक तरह से अभी तक नहीं हुआ है।

सातवीं शताब्दी के पश्चात् कल्चुरि-काल के अनन्तर मध्यप्रदेश में बौद्ध धर्म की इतिश्री हो गई।

सिरपुर में प्राप्त कनकावेष्ठित पीतल की बौद्ध मूर्त्तियाँ अपने असाधारण कला कौशल के कारण महत्त्व रखती हैं। यह उल्लेखनीय है कि इन मूर्त्तियों पर तिब्बती प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

जैन केन्द्र

धार्मिक तीर्थ-यात्रा के कई महत्त्वपूर्ण जैन केन्द्रों में से कारंजा, मुक्तागिरि, रामटेक, कुण्डलपुर, खोलपुर, बरेठा और मेहेकर मुख्य हैं। कल्चुरि समय की बहुत सी जैन मूर्त्तियाँ तो मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में मिलती हैं, किन्तु पाण्डव तथा पाण्डवोत्तर–काल की जैन मूर्त्तियाँ छत्तीसगढ़ में फैली हुई हैं। साथ ही यादव-कालीन जैन मूर्त्तियाँ विदर्भ से उपलब्ध होती है। उपरिनिर्दिष्ट काल केवल साधारण अनुमान पर आधारित है। यह निश्चित है कि अबतक की गवेषणा से मध्य प्रदेश में जो प्राचीनतम जैन मूर्त्तियाँ प्राप्त हुई हैं, वे ६०० ई० से और पहिले की नहीं हैं। जो जैन मूर्त्तियाँ प्राप्त हुई हैं, वे प्रायः वर्धमान महावीर, पार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभ, मल्लिनाथ, अजितनाथ, ऋषभनाथ तथा उनकी शासन देवताओं की प्रस्तर मूर्त्तियाँ हैं। अकोला के निकट राजनापुर खिंखिणी तथा मुक्तागिरि के मन्दिरों से प्राप्त पार्श्वनाथ और शान्तिनाथ की धातु मूर्त्तियाँ, जो अब नागपुर संग्रहालय में संरक्षित हैं, पुरातत्त्व एवं कला संबंधी विशेषताओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

प्राचीन देवालयों में विदर्भगत सिरपुर (ज़िला : अकोला) नामक ग्राम में स्थित अंतरिक्ष पार्श्वनाथ का हेमाडपंती मन्दिर, तथा मण्डला ज़िले में कुक्करमठ नामक देवालय उल्लेखनीय हैं।

वैदिक धर्म

इतिहास के प्रारम्भ से ही प्रायः सभी भारतवर्ष में वैदिक धर्म का प्रभाव चलता रहा जैसा आजतक जारी है। मध्य प्रदेश भी इसका अपवाद नहीं है। प्रायः प्रत्येक ग्राम में देवालयों, मूर्त्तियों आदि द्वारा इस धर्म के कतिपय अवशेष अवश्यमेव प्राप्त होते हैं। सुपरिचित होने से इसके संबंध में विस्तारपूर्वक विवरण करने की आवश्यकता नहीं है किन्तु विहंगम दृष्टि से निम्नलिखित बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

मध्य प्रदेश में प्रायः शैव तथा वैष्णव पंथों का जनता द्वारा समादर प्राचीन काल से होता रहा है। धर्म के विकास की दृष्टि से यहाँ मौर्य-काल से संबंधित सम्राट् अशोक के रूपनाथ लेख, जो बौद्ध धर्म सूचक हैं, के अतिरिक्त अन्य सामग्री विशेष रूप से उपलब्ध नहीं हुई है। शातवाहन काल से संबंधित लेखों में सकती राज्य गत गुंजी स्थान से प्राप्त प्रस्तर लेख शैव पंथ सूचक है; तथा बुढ़ीखार में प्राप्त नये शिलालेख, जो ईसा की दूसरी शताब्दी में उत्कीर्ण हुआ था, में वैष्णव देवालय का उल्लेख मिलता है। यह देवालय भारत में बहुत प्राचीन सा माना जाता है। इसी समय का भार शासक भगदत्त का पवनी लेख भगवत्पादुकाओं का उल्लेख करता है, जिनके द्वारा संभवतः भगवान् विष्णु की पादुकाओं का बोध होता है। यह बात उल्लेखनीय है कि पादुकाओं की पूजन-प्रणाली का यह मध्य प्रदेश में सर्व प्रथम उल्लेख है। इस प्रणाली का अन्य उल्लेख वाकाटक लेखों में विष्णु तथा राम की पादुकाओं के विषय में प्राप्त होता है।

गुप्तों के समय से विष्णु के वराह–अवतार रूप में पूजन की प्रथा एरण तथा भारत के अन्य भागों में सम्प्राप्त मूर्त्तियों तथा देवालयों के द्वारा दिखाई पड़ती है। इसका अनुसरण कल्चुरि काल में भी होता रहा और कारीतलाई, मझोली, रीठी, बिल्हरी, पनागर, नोहटा, मदनपुर तथा हरदा आदि क्षेत्रों से प्राप्त विशालकाय वराह मूर्त्तियाँ इस विषय के उत्कृष्ट उदाहरण है।

वाकाटक-काल के एक लेख द्वारा विदर्भगत एक सूर्य मन्दिर का पता चलता है। कल्चुरि काल में रत्नदेव के समय में उनके सामन्त वल्लभराज द्वारा सूर्य-पुत्र रेवन्त के मंदिर के निर्माण का उल्लेख पाया जाता है। संभवतः भारत वर्ष में यह अकेला ही उदाहरण है जिसमें रेवन्त के मंदिर का उल्लेख मिला है। किंतु यह

बात उल्लेखनीय है कि रेवन्त की कल्चुरि कालीन एक प्रस्तर मूर्ति रीवाँ राज्य में मनोरा नामक ग्राम से प्राप्त हुई हैं। ताँबे की एक मूर्ति त्रिपुरी से भी प्राप्त हुई थी जो अभी नागपुर में श्री पण्डित जी के संग्रह में है।

कल्चुरियों के समय में पाशुपत पंथियों को राजाश्रय मिलने से भेड़ाघाट में ६४ योगिनियों के विशाल वृत्ताकार देवालय का निर्माण हुआ था। पुरातत्व के लिये मध्य प्रदेश में यह एक अपूर्व वस्तु है। भारतवर्ष में केवल ऐसे चार या पाँच देवालय ज्ञात हैं, जिनमें से खजुराहो, राणीपुर झरियाल तथा कोईमतूर के अन्य देवालय उल्लेखनीय हैं।

देवियों की असंख्य मूर्तियाँ मध्य प्रदेश में उपलब्ध होती हैं। कतिपय मूर्तियाँ, उनके निचले आसन पर दिये हुए नाम के कारण अच्छी तरह से पहचानी जाती हैं। किंतु उनका शिल्प-शास्त्रीय अथवा ग्रांथिक विवरण कहीं नहीं मिल सकता। इसका उत्कृष्ट-उदाहरण मध्य प्रदेश में कुछ अज्ञात स्थल से प्राप्त और संप्रति जबलपुर महाविद्यालय में संरक्षित "श्री कल्याणीदेवी" की मूर्ति है। इसी प्रकार खाण्डवा में पद्मकुण्ड नामक स्थान पर कई मूर्तियाँ उपलब्ध हैं जिनके नाम निचले आसन पर खुदे हुए हैं।

मान्धाता में एक देवालय विष्णु के २४ अवतार वाली मूर्त्तियों के लिये प्रसिद्ध है। चाँदा के समीप मार्कंडी में स्थित देवालयों का समूह शिल्प कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

ईंटों के देवालयों के विषय में पहिले ही वर्णन किया जा चुका है। ये मंदिर भारतवर्ष भर में प्रायः बहुत कम मिलते हैं।

सुव्यवस्थित गवेषणा के अभाव से यहाँ-वहाँ बिखरी हुई यह मौलिक सामग्री अभी तक अज्ञात सी ही रही है।
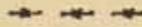
(९) गुफ़ायें

पृष्ठ ३० पर में दिये हुए मानचित्र से मध्यप्रदेशान्तर्गत गुफ़ाओं का बोध होता है। ऐसी गुफ़ायें २५ के लगभग हैं। परन्तु यह सूची पूर्ण नहीं है। यहाँ कितनी ही प्रागैतिहासिक गुफ़ाओं और गह्वरों का इसलिये उल्लेख नहीं किया गया है क्योंकि उनके विषय में पाहिले कथन किया जा चुका है।

अद्यावधि ज्ञात गुफ़ायें नागपुर, चाँदा, भण्डारा, बैतूल, होशंगाबाद, बिलासपुर, अकोला, बुलढाणा तथा यवतमाल जिलों में हैं और सागर, मण्डला, जबलपुर, छिन्दवाड़ा तथा सिवनी ज़िलों में इन गुफ़ाओं की स्थिति का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं हुआ है।

ये गुफ़ायें अधिकांशतः नरम लाल पत्थर अथवा विन्ध्य चट्टानों से काटकर बनाई गई हैं। इन गुफ़ाओं की मूल स्थिति के निश्चय-ज्ञान के लिये कोई साधन नहीं है। यद्यपि ज़िलों के गज़ेटियरों में थोड़ा बहुत वर्णन प्राप्त होता है, तथापि उनके प्रयोजन तथा रचना-काल के संबंध में कुछ नहीं कहा जा सकता। ज्ञात गुफ़ाओं के निकट चूँकि आज भी मेले लगते हैं, इसलिये इन गुफ़ाओं की कुछ महत्ता अद्यापि अवशिष्ट है। ऐसी स्थिति में भी यह निश्चय नहीं किया जा सकता कि इन गुफ़ाओं का किस धर्म-सम्प्रदाय तथा समाज से संबंध था।
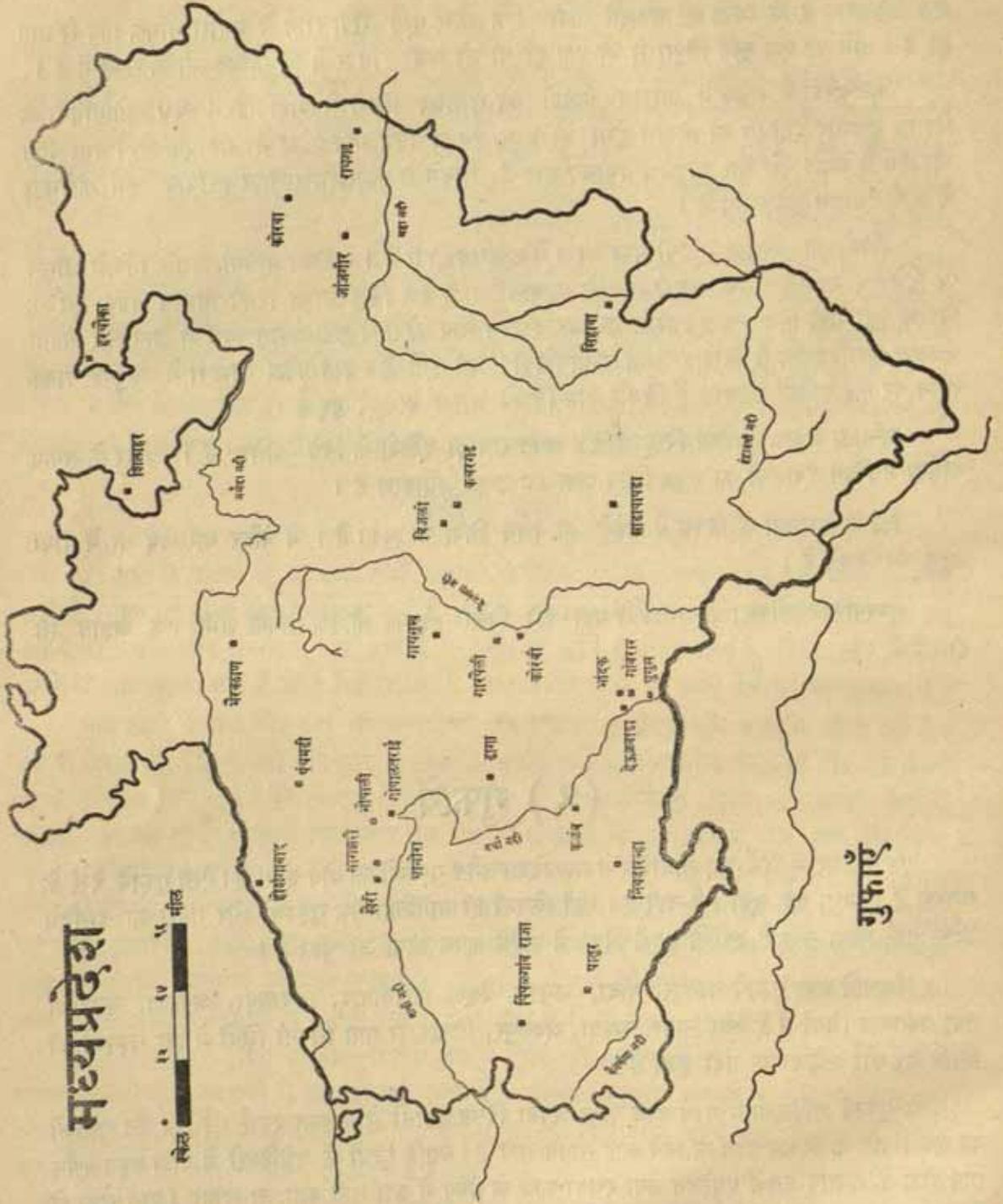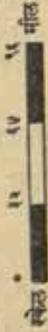
मध्यप्रदेश
स्केल
मील
हरचोका
कोरबा
जांजगीर
सिहावा
होशंगाबाद
गुफाएँ

प्रागैतिहासिक गुफ़ाओं और गह्वरों के अतिरिक्त सरगुजा राज्य में रामगढ़ पहाड़ी की गुफ़ायें मध्य प्रदेश में सबसे पुरानी हैं और वे निस्सन्देह मौर्य-काल की हैं। भाँदक और अकोला ज़िले में पातुर की गुफ़ायें भी सातवाहन-काल की हैं। इन गुफ़ाओं का वर्णन पुरातत्त्ववेत्ता भली भाँति कर चुके हैं। मध्य प्रदेश की सीमा पर प्राचीन गुफ़ाओं में कारीतलाई के निकट शिलाहर गुफ़ाओं का उल्लेख किया जा सकता है, जिनमें दूसरी शताब्दी के लेख भी मिलते हैं।

यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इन गुफ़ाओं में से किसी गुफ़ा को भी उन अर्थों में गुहा-मन्दिर (Cave temple) की संज्ञा प्रदान की जा सकती है, जिन अर्थों में अजन्ता, वेरूल आदि अधिकांश गुफ़ाओं तथा दक्षिण की वैसी अन्य गुहाओं को "गुहा-मंदिर" की संज्ञा दी गई है। इस संबंध में फिर से गवेषणा की नवीन रूप में आवश्यकता है।

(१०) दुर्ग

मध्य प्रदेश में अधिकांश दुर्ग या तो पठार पर स्थित हैं अथवा सपाट भूमि पर हैं। भारतवर्ष में जनरक्षा की दृष्टि से दुर्ग बहुत प्राचीन काल से ही महत्त्व रखते थे। दुर्गों का उल्लेख अष्टाध्यायी एवं कौटिलीय अर्थशास्त्र जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। मौर्य-काल में सम्राट् अशोक के द्वारा निर्मित कराये गये दुर्गों के काष्ठ निर्मित तट (Palisade आधुनिक चबूतरा) पाटलिपुत्र तथा उज्जयिनी में उत्खनन द्वारा प्राप्त हुए हैं। भारत सरकार के पुरातत्त्व-विभाग की ओर से शिशुपालगढ़ के उत्खनन में ईसा की चौथी शताब्दी में निर्मित दुर्ग के ध्वंसावशेष प्राप्त हुए हैं। दसवीं शताब्दी के उपरान्त दुर्गों के निर्माण करने और कराने की परम्परा अधिक चलने लगी।

मध्य प्रदेश के प्राचीन दुर्गों के विषय में हम निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कह सकते, किंतु बैरागढ़ आदि कई स्थानों के दुर्ग मध्ययुग-निर्मित से ज्ञात होते हैं। कलचुरि काल से अनेक दुर्गों के निर्माण कराये जाने के उल्लेख मिलते हैं। त्रिपुरी-उत्खनन से महाराज कर्ण के द्वारा निर्मित कराये गये दुर्ग के चिह्नों का पता चला है। इस काल के दुर्ग राहतगढ़, लोधिया, रतनपुर, सिरपुर तथा द्रुग में देखे जा सकते हैं। कलचुरि शासक दुर्ग निर्माण कराते समय प्राकृतिक-स्थिति से लाभ उठाने में विशेष पटु थे।

मध्य प्रदेश के अधिकांश दुर्ग बारहवीं शताब्दी के पश्चात् काल के हैं। विशेषतया चौदहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी के बीच के ही प्रतीत होते हैं। इन दुर्गों में कुछ दुर्ग तो (१) अति प्राचीन हैं और कुछ (२) मुसलमानों, (३) गोंडों, (४) स्थानीय राजपूत शासकों, डांगी मुखियों तथा (५) मराठा शासकों द्वारा निर्मित कराये गये दुर्ग आते हैं।

प्राचीन दुर्गों के विषय में हमारा ज्ञान बहुत ही कम हैं। शिलालेखादि के रूप में प्राप्त हुई सामग्री के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि कुछ दुर्ग प्राचीन काल में भी रहे होंगे किन्तु गवेषणा के अभाव से यह नहीं बताया जा सकता कि उनके प्राचीन भग्नावशेष निश्चित रूप से कहाँ मिल सकते हैं। सामान्यतया प्राचीनतम दुर्गों के मूल स्वरूप परवर्त्ती शासकों के द्वारा प्रायः परिवर्त्तित कर दिये जाते थे। अतएव उनके उन मूल रूपों का निश्चितीकरण नहीं किया जा सकता। मुसलमान कालीन दुर्गों में ऐसा परिवर्त्तन बहुत ही कम हुआ है। प्रायः उनमें से अधिकांश दुर्गों के तत्कालीन साहित्य तथा इतिहास के

मध्यप्रदेश
स्केल
मील
दुर्ग
मुसलमान
गोण्ड
मराठा
अन्य
जोगा
बागरा
अटनेर
देवगढ
आदेगांव
उमरेड
दमोह
रामनगर
सोनसार
रतनपूर
बिलासपूर
कोटगढ
लाफागढ
पेण्ड्रा
कोसगई
अमरगढ
बिलैगढ
गढझलार
हौंगरगांव
डोंडी
सोरार
बालोद
सैरिपार
टिपगढ
चांदा
मांदक
खटोरा
प्रतापगढ
भिवगढ
पारसिवनी
अकोला
नरनाळा
बाळापूर
गाविलगढ
असिरगढ
बऱ्हाणपूर
रेहली
देवरी
सिंगोरगढ
मदनमहल
चौरागढ
मगरधा
विजयराघोगढ
गढाकोटा
झांजी
धमदा
रायपूर
मल्हार
पौनी
कारोली
बडनेरा
नाचणगांव
सोनेगांव
देऊळवाडा
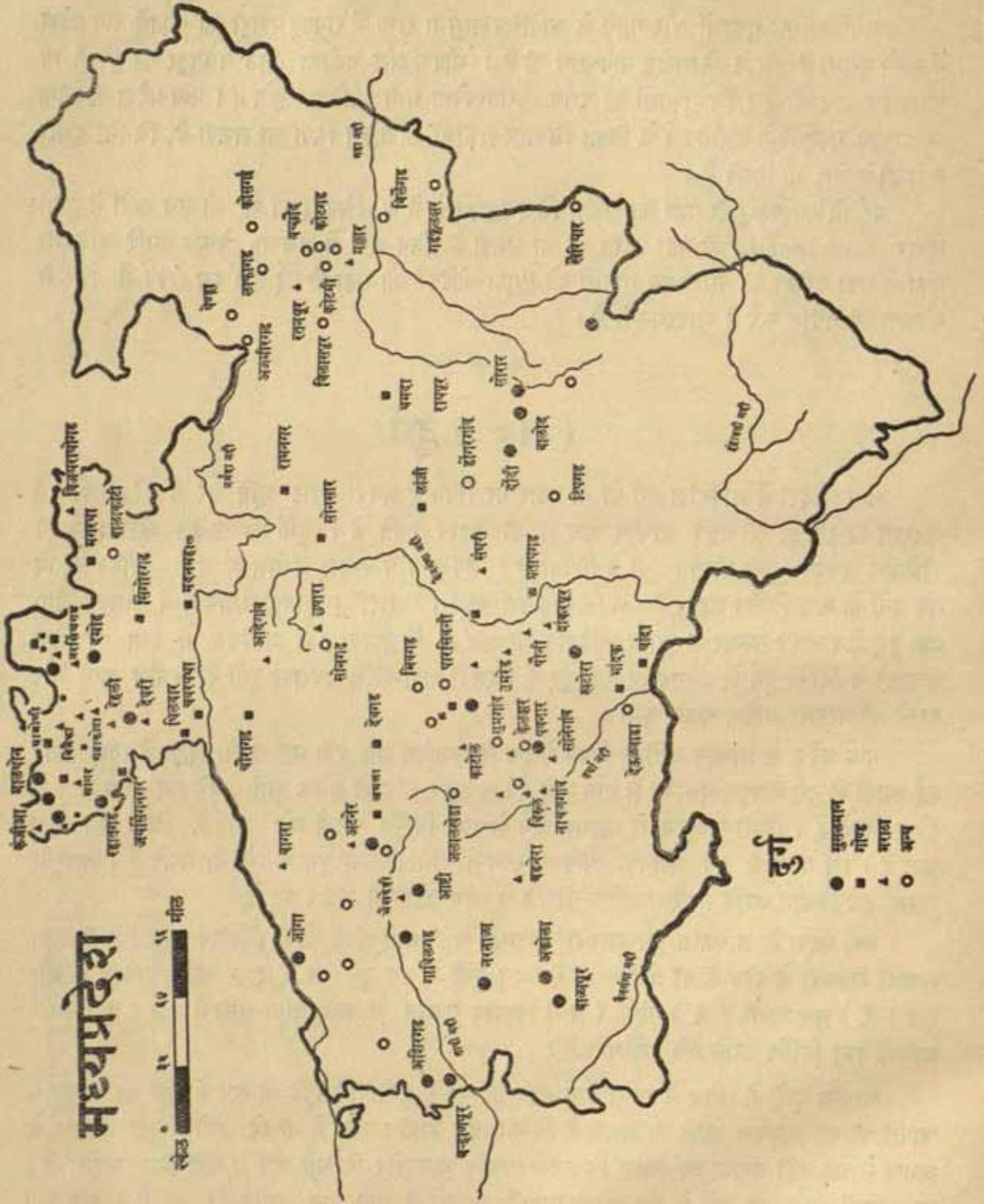
ग्रंथों में उल्लिखित होने, तथा उनके प्रत्यक्ष निरीक्षण करने और अन्य शिलालेखादि से उनके समय तथा उनमें गये किये परिवर्तनादि का ज्ञान प्राप्त होता है। दुर्गान्तर्गत अन्य भवनों, मसजिदों इत्यादि के उल्लेख भी उन शिलालेखों में मिलते हैं जो इतिहास-रचना के लिये अत्युपयुक्त हैं।

मुसलमान शासकों अथवा उनके समकालीन अन्य अधिकारियों के द्वारा निर्मित कराये गये दुर्ग मध्य प्रदेश में पश्चिमी तथा उत्तरीय ज़िलों में अद्यापि विद्यमान हैं। इनमें से विदर्भगत बल्हाणपुर, गाविलगढ़, नरनाला, असीरगढ़, बालापुर, खेरला आदि स्थानों के दुर्गविशेष प्रमुख हैं। उत्तरी ज़िलों में खिमलासा, राहतगढ़, मालथोन, बटीहागढ़ आदि अन्य दुर्ग-स्थान हैं। इन्हीं दुर्गों में तत्कालीन मुसलमान शासक गुप्त राजनैतिक मंत्रणायें, युद्ध-संधियाँ तथा अन्य शासन-कार्य करते थे।

मराठा शासकों के दुर्गों में मुसलमान कालीन दुर्गों का ही अनुकरण दिखाई पड़ता है। वे कतिपय छोटे दुर्ग सिर्फ़ मिट्टी की दीवालों से बनाते थे, जिसको 'गढ़ी' संज्ञा दी जाती थी। ऐसी गढ़ीयाँ भी मध्य प्रदेश में कुछ स्थान-विशेष पर अवशिष्ट हैं।

अभी तक प्राप्त सामग्री के आधार पर इतना ही बतलाया जा सकता है कि गोंड शासक दुर्ग बनाते समय छोटी छोटी पक्की ईंटों का उपयोग बहुत करते थे और चुने का उपयोग भी उनके द्वारा निर्माण कराये गये भवनों में बहुत होता था। प्राकृतिक स्थिति का लाभ उठाने में गोंड शासक पटु थे। किन्तु उनकी स्थापत्य कला में मुसलमान दुर्गों के समान भव्यता तथा कला-दृष्टि का अभाव सा ज्ञात होता है।

प्राप्त परिस्थिति के अनुसार दुर्गों की संख्या मुसलमान-काल के पश्चात् घटती जाती दिखाई पड़ती है। आज के समय में उनकी उपयोगिता नष्ट होने से प्रायः सभी दुर्ग उजाड़ तथा उनके खण्डहरों में वन्य श्वापदों के निवासस्थान जैसे बने रहे मालूम होते हैं। स्थापत्य-कला, आत्मरक्षा का प्रबल साधन इत्यादि दृष्टि से इन दुर्गों के अध्ययन तथा रेखा-मापन आदि होने की आवश्यकता प्रतीत होती है। चूँकि कालान्तर में उनमें अधिकांश स्थानों के नष्ट होने का बहुत भय है।

संक्षेपों का विवरण

Ancient India : Bulletin of the Archæological Survey of India.
AR, ASI., : Annual Report, Archæological Survey of India.
ASR., : Cuningham. Archæological Survey Reports, (Vol. I–XXV).
CAI. : Cuningham, Coins of Ancient India.
CMI. : Cuningham, Coins of Mediaeval India
CII : Corpus Inscriptionum Indicarum, (Vols. I–IV).
CIC, BM. : Catalogue of Coins in the British Museum
Epi. Ind., : Epigraphia Indica, (Vol. I–XXVIII)
IHQ., : Indian Historical Quarterly
Ind. Ant., : Indian Antiquary
JAHRS : Journal of the Andhra Historical Research Society
JASB : Journal of the Asiatic Society of Bengal
JBBRAS : Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society
JBORS : Journal of the Bihar and Orissa Research Society.
JBHU : Journal of the Benaras Hindu University.
JIH. : Journal of the Indian History.
JNSI., : Journal of the Numismatic Society of India. (Vol. I–XX)
JRAS., : Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain.
MASI., : Memoirs of the Archæological Survey of India
Mediæval Temples : Cousens, Mediæval Temples of the Dakhan.
New Ind. Ant., : New Indian Antiquary, (Vol. I–X)
NUJ. : Nagpur University Journal (Vol. I–XII)
PR. ASI. WC., Progress Report, Archæological Survey of India,
Western Circle, Poona.
PRASB., : Proceedings of the Asiatic Society of Bengal.
RGSI., : Records of the Geological Survey of India.

कझिन्स–सूची : Cousens. List of Antiquarian Remains in C P. and Berar.
गॅझ़ेटियर : Gazetteers of the Districts in C P.
द. म. इ. सा. : दक्षिणच्या मध्ययुगीन इतिहासाचीं साधनें, खण्ड १–४
भा. इ. सं. मं. त्रै. : भारत इतिहास संशोधक मण्डल पुना का त्रैमासिक.
भाण्डारकर सूची : List of Inscriptions in Northern India,
Appendix to Epigraphia Indica, Vol. XIX–XXIII
सरकारी नाणक सूची : Lists of Treasure Trove coins published by Govt
of C. P.
हीरालाल सूची : Hiralal, Descriptive List of Inscriptions in C. P. and Berar
2nd Edition.

मध्यप्रदेश के पुरातत्त्वोपयोगी साहित्य की सूची

→ → →

१ इतिहासपूर्व काल

(१) पुराने अश्मयुग के हथियार

(Palæolithic Implements)

इस समय मध्य प्रदेश में प्रागितिहास के अध्ययन की सामग्री बहुत बिखरी हुई है, किन्तु विशेष अभ्यास के लिये देखियेः—

ब्राउन : Catalogue of the Pre-historic Antiquities in the Indian Museum, 1917.

Records of the Geological Survey of India, VI, 1873.

डी टेरा–पेटरसन : Studies in the Ice Age etc; 1939.

Proceedings, A.S B., 1867, pp. 142-148.

अध्ययन के लिये विशेष साहित्य

घोष : Prehistoric Exploration in India, IHQ., XXIV (1948), p. 1-18

कृष्णस्वामी : " Stone Age in India " Ancient India, No. 3, pp 11-57.

स्विनी : Notes on Jabalpur Neoliths, Proc. ASB., 1865, pp. 77-80

ब्लॅनफोर्ड : Notes on Jabalpur Neoliths, PRASB, 1866, pp. 230-34.

कैरे : Proceeding, ASB. 1866, pp. 135-36.

ली मेसुरीये : P R A S B. 1861, pp. 81-85.

मिश्र : On some stone Implements from Hoshangabad, Proceedings of the Indian Academy of Sciences, X, 4. (Oct. 1939), pp. 275-285.

ब्रूस फूट : Catalogue of Pre-historic Antiquities, Notes on their Age and distribution, Madras. 1921.

निम्नलिखित संग्रहालयों में मध्य प्रदेश से प्राप्त प्रागैतिहासिक काल के प्रस्तरास्त्र संगृहीत हैं।

संग्रह : (कोष्ठक में हथियारों की संख्या निर्दिष्ट है)

कलकत्ता : इंडियन–म्यूज़ियम [चित्रफलक १, क्र. १]

भुतरा (१), केडलारी (१), देवरी (६), बुरघाना (५), सिंग्रामपुर (२), बुरखेरा (१), दमोह (२), सिंघणपुर (६), खैर (१), परसोरा (१), ढोकी (१), चाँदा (१)

केम्ब्रिज : नर्मदा तट पर होशंगाबाद के समीप से प्राप्त (२३)

बनारस-हिंदू-विश्वविद्यालय : होशंगाबाद (६)

नागपूर-संग्रहालय : कलमेश्वर (१), नवेगाँव (१)

सागर-विश्वविद्यालय : देवरी (२), दुहारनाला (२)

गार्डन-संग्रह : भेड़ाघाट (२)

मद्रास-संग्रहालय : ब्रूस फूट का संग्रह (१८) क्र. ४०५५-४०७३

येल–केम्ब्रिज–अभियान द्वारा होशंगाबाद और नरसिंहपुर के बीच के १३ स्थलों की जाँच की गयी थी। इन स्थानों में होशंगाबाद के निकटवर्ती ७ क्षेत्र, तथा उमरिया, बर्मनघाट, झाँसीघाट इत्यादि के स्थल प्राचीन हथियारों के लिये विशेष महत्त्व-पूर्ण हैं। इनमें से प्राप्त प्रमुख सामग्री नीचे उद्धृत की जाती है। De Terra & Paterson, op-cit, pp 313-326.

स्थल ४	४ अॅबीव्हिलियन कुल्हाड़ियाँ (Plate XXXII, A)
	४ फ्लेक्स (Flakes)
	३ फ्लेक्स (Flakes)
स्थल ५ (आदमगढ़)	कुछ हाथ की कुल्हाड़ियाँ
स्थल ६	१ हाथ की कुल्हाड़ी, १ क्लीव्हर, १ कोर, ८ फ्लेक्स
स्थल ७	सूक्ष्माश्मयुगीन हथियार (संख्या उद्धृत नहीं)
कुल्हाड़ियों के प्राप्त होने के स्थलः	उमरिया, बर्मन घाट, झाँसी घाट, होशंगाबाद

ब्रूस-फुट-संग्रह में १ बुरीन (Plate 12), २ फ्लेक्स, १ स्क्रेपर और १५ कोर विशेष उल्लेखनीय हैं। ये हथियार भू-गर्भ-शास्त्र के अधिकारियों के द्वारा उनको प्राप्त हुए थे। ब्रूसफुट, कॅटलॉग, पृ. १५९; तथा pl. 12.

होशंगाबाद MASI, 24, Pl. XIII a. (१४ हथियार)
भुतरा, होशंगाबाद; R.G.S.I. VI, 1879; ब्राउन, Catalogue, Pl IV,6, 6a.
बुरखाना, सागर; ब्राउन, Catalogue, Pl. IV, 7. [चित्रफलक १, क्र. ३]
मोर, देवरी के दक्षिण में; Proceedings, A.S B., 1867, pp. 142-148.
देवरी, सागर, सुखचैन नाला में; Proceedings, A S.B., 1867, pp 142-148. (३६ हथियार)
दुहारनाला, सागर-देवरी-रास्ता, Proceedings, A.S B., 1867, pp 142-148.
सिंग्रामपुर के पठार; Proceedings, A.S.B. 1867, pp 142-148. (७ हथियार)
सिंघणपुर, रायगढ़ के चट्टानाश्रयों के समीप; MASI, 24, pl. XII, (२४ हथियार)

(२) नये अश्मयुग के हथियार

(Neolithic Implements)

संग्रह :

कलकत्ता : इंडियन–म्यूज़ियम

क्रमाङ्क : १५२–१६०	बहुतराई, और दमोह के समीप, विल्सन-संग्रह
१७४	सिहोरा, जबलपुर
१७५	मुनई, जबलपुर
१६६–१७७+९६१	जबलपुर; कैरे-संग्रह
१०४०–१०७०	बुरचेंका, कटनी से पूर्व में ८ मील पर
१२३८–१६९३	जबलपुर; ओपर्ट-संग्रह १८८२
१८७८–१८८५	जबलपुर
१८८६–१८८८	कुम्हम, जबलपुर

१९०२–१९०७ दमोह
१९०८ हट्टा
१९०९–१९१३ हट्टा तहसील
१९१४–१९१५ गढ़ी मोरीला, सागर
१९१८–१९१९ सागर ज़िला
१२०२–१२०३ अर्जुनी, नाँदगाँव; छिद्रयुक्त हथौड़े
Perforated Hammer stones

बनारस : हिंदू-विश्वविद्यालय
होशंगाबाद; मनोहरलाल मिश्र–संग्रह (२) [चित्रफलक १, क्र. २]

(३) सूक्ष्माश्मयुगीनास्त्र

(Microlithic Implements)

ये हथियार प्रायः सभी चित्रान्वित चट्टानाश्रयों में मिले हैं। जैसे कात्रा पहाड़, सिंघणपुर, पचमढ़ी, होशंगाबाद

कात्रा पहाड़ : गॉर्डन, " Rock paintings of Kabra Pahar, " Science & Culture, V no. 5. pl. 5.

सिंघणपुर : मनोरंजन घोष, MASI., 24. (Delhi. 1932)

पचमढ़ी : डोरोथी डीप गुफा; हंटर, NUJ, (1935-36), pp 28, 127.

जबलपुर के निकट 'बड़ा शिमला' नामक पहाड़ी पर ये हथियार अधिक संख्या में मिलते हैं; इनके विवरण के लिये देखियेः—गार्डन, Holocene in India, Ancient India, No. 6, p. 71.

होशंगाबाद के समीप तवा तथा नर्मदा नदियों के तटों पर : De Terra and Paterson, Ice Age . etc , pl. XXXII, A.

त्रिपुरी : त्रिपुरी की खुदाई (१९५३) में ये सबसे अन्तिम स्तर में पाये जाते हैं। डा० दीक्षित, Tripuri Excavation Report, 1954. [चित्रफलक १, क्र. ४]

चित्रकूट, बस्तर राज्य : डा० कृष्णस्वामी के द्वारा सूचना–प्राप्त (१९५२)

भेड़ाघाट : कर्नल गॉर्डन–संग्रह

(४) चित्रान्वित पर्वतीय–शिलाश्रय–स्थान

(Rock–shelters with paintings)

महादेव पहाड़ : पचमढ़ी के समीप ३० मील के घेर में प्राचीन पहाड़ी शिलाश्रयस्थानों का एक बड़ा समूह है, जिसमें से बहुत सी गुफाएँ मानव-द्वारा चित्रित हैं। डोरोथी डिप, जम्बूद्वीप, मॉन्टे रोझा, सोनभद्र, मोरोदेव, कजरी घाट, बी दाम, बोरी, बनिया बेरी, मेढ़ू पीप, बड़ा महादेव, छोटा महादेव, आदि कई नामों से

ये परिचित किये जाते हैं। कर्नल गॉर्डन ने बहुत परिश्रम से इनके लिये एक अच्छा मार्ग-दर्शक (Guide) बनवाया है। इसकी एक हस्तलिखित प्रति मुझे श्री. अमलानंद घोष, डायरेक्टर जनरल ऑफ आर्किऑलॉजी इन इंडिया, के सौजन्य से प्राप्त हुई। उसमें कई चित्र-फलकों तथा चित्रों के द्वारा इन शिलाश्रयों के स्थान सूचित किये गये हैं। गॉर्डन-द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित लेखों का अध्ययन बहुत उपयोगी है।

(१) पचमढ़ी : गॉर्डन " Artistic Sequence of the Rock-paintings in the Mahadev Hills " Science and Culture, V, No. 6 pp. 322-327; No 7, pp. 387-392

— " Warfare in Indian Cave Art. " Ibid., V, No 10, pp. 578-84

— " Animals and Demons in Indian cave art " Science & Culture

— " Rock paintings of Mahadeo Hills. " Indian Art and Letters, X (1935), pp. 35-41.

— " Caves of Pachmarhi Hills " (Guide) अप्रकाशित

— " Indian cave Paintings " IPEK (1935), pp. 107-114

(२) तामिया : पचमढ़ी से २० मील पर

(३) झलई : पचमढ़ी से ४० मील पर

(४) सोनभद्र : पचमढ़ी से २५ मील पर

(५) डोरोथी डीप : पचमढ़ी

डा० हंटर का उत्खनन (१९३६), NUJ., (1935-36), pp. 28, 127

(६) काब्रा पहाड़ : रायगढ़ से आग्नेय कोण में १० मीलपर (गॉर्डन-द्वारा संशोधित)

गॉर्डन, " Rock Paintings of the Kabra Pahar. " Science and Culture V, No. 5, pp 269-70

(७) सिंघणपुर : (रायगढ़ के निकट नाहपल्ली रेल्वे स्टेशन से ३ मीलपर) (चित्रफलक ३, क्र. ११)

मनोरंजन घोष, MASI, 24,pp.9-14; Plates II-IV, XII b (24 Implements)

गॉर्डन " Date of Singhanpur Paintings. " Science and Culture, Vol. V, No. 3, pp. 142-147

अँडरसन, " Rock paintings of Singhanapur, " J B O R S, 1918, pp. 298-306

(८) होशंगाबाद : आदमगढ़ खदान (चित्रफलक २, क्र. ९)

मनोरंजन घोष, " Rock Paintings and other antiquities of Pre-historic & later times" MASI., 24 (Delhi, 1932), ch. V. pp. 21-22 pl. V, XIII

गॉर्डन " Hoshangabad Paintings. " Illustrated London News, Sept. 21, 1935.

अज्ञ्यू " Rock paintings of Hoshangabad. " Nagpur Museum Bulletin, No. 2.

मनोहरलाल मिश्र, " On the figure of Giraffe...of Hoshangabad " JBHU., 9, pp. 25-32

(९) **नैआगाँव और भोंडिया काफ** : (इटारसी–बैतूल मार्ग पर पश्चिम में)
गॉर्डन-द्वारा सूचना-प्राप्त **अप्रकाशित**

(१०) **फ़तेहपुर** : हट्टा से ९ मील पर पठार पिपरिया में हीरालाल-द्वारा संशोधित, **अप्रकाशित**
हीरालाल, **दमोह-दीपक** पृ. ८९ पर उल्लिखित।

प्रायः सभी शिलाश्रयों में सूक्ष्म अश्मयुग के हथियार तथा डोरोथी डीप-गुफा में प्राचीन मानवों के अस्थि-पंजर मिले हैं, किन्तु इनमें प्राप्त चित्रों का समय अच्छी तरह से निश्चित नहीं किया जा सकता। उत्खनन, संशोधन, चित्रों का क्रमानुशीलन आदि के रूप से इनका अधिक गंभीर अध्ययन आवश्यक है। संक्षेप में अच्छे विवरण के लिये देखिये, बी. बी. लाल, Archæology in India में Rock Paintings पर परिच्छेद, पृ. ४४–५०। गॉर्डन के मतानुसार कान्रा पहाड़ पर प्राप्त चित्र सबसे पुराने हैं।

(५) वृत्ताकार अश्मयुगीन शव–स्थान

नागपुर के समीप ३० मील की परिधि में कई स्थानों पर वृत्ताकार शव-स्थान विद्यमान हैं। उनमें से बहुत से तो संरक्षित स्मारक हैं। पिछली शताब्दी के अंत में मेजर पिअर्स के द्वारा कामठी के समीप की दो कब्रों के खोदने तथा उनमें से प्राप्त हुई ताँबे की चीजों के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है। हिस्लॉप के द्वारा भी उनकी खुदाई का प्रमाण मिलता है, किन्तु इनके अतिरिक्त अन्य सभी स्थानों के परीक्षण का अभाव सा हो ज्ञात होता है। पुराने ढंग से खुदवाये गये इन स्थानों की प्रामाणिकता बहुत ही कम है और उनका अध्ययन स्पष्टतया आवश्यकही प्रतीत होता है।

नागपुर के समीप निम्नलिखित स्थानों पर वृत्ताकार शव-स्थान विद्यमान हैं।

नागपुर ज़िला :

(१) **कोराड़ी** :–कामठी के पूर्व में कोराडी पहाड़ पर; **पिअर्स का विवरण**

(२) **कोहली** :–नागपुर से वायव्य कोण में २० मील का बड़ा विस्तृत क्षेत्र; खाप्रा व उबजी नामक ग्राम की सीमा पर, **कज़िन्स-सूची**

(३) **गोंडी** :–नागपुर में **संरक्षित स्मारक-सूची**

(४) **घोरार** :–कोहली के समीप विस्तृत क्षेत्र, नागपुर से १५ मील पर

(५) **जुनापाणी** :–नागपुर से पश्चिम में ९ मील पर **कज़िन्स-सूची**
संरक्षित स्मारक

(६) **टाकलघाट** :–नागपुर से नैऋत्य में १९ मील ५॥ एकड़ का विस्तृत क्षेत्र प्राचीन खुदाई से मिट्टि के बर्तनों, बाणफलकों के प्राप्त होने का उल्लेख। **कज़िन्स-सूची**

(७) **निलधोआ** :–नागपुर से पश्चिम कोण में १६ मील पर; **संरक्षित स्मारक**

(८) **बोरगांव** :–नागपुर से पश्चिम कोण में ४ मील पर; **कज़िन्स-सूची**

(९) **रायपुर** :–६ पूर्ण तथा ४ ध्वस्त वृत्त; **संरक्षित स्मारक**

(१०) **वाठोरा** :–नागपुर से वायव्य कोण में २० मील पर; **कज़िन्स-सूची**

(११) **बड़गाँव** :–कामठी से पूर्व में २ मील पर; **पिअर्स का विवरण**(१८६७)

(१२) **सावरगाँव** :–दिग्रस का ३ मील का क्षेत्र, **संरक्षित स्मारक**
(१३) **हिंगणें** :–नागपुर से नैऋत्य में १० मील पर; **संरक्षित स्मारक**
(१४) **उवाली** :– ? **संरक्षित स्मारक**

सिवनी ज़िला : (१५) **सरेखा** :–वैनगंगा–हिर्री के संगम पर, सिवनी से उत्तर में २१ मील पर

दुग ज़िला :
(१६) **चिरचोरी**
(१७) **कन्ही भण्डार**
cromlechs ? (१८) **सोरार**
and (१९) **मजगहान**
stone circles ? (२०) **कावाहाट**

सोरार के समीप ४ मील की परिधि में ASI. AR., 1930-34, Plate LXXVII b, c, d, **संरक्षित स्मारक**

[द्रुग-गज़ेटियर के अनुसार, कावराहाट के वृत्ताकार शव-स्थान खुदवाये गये थें और उनमें लोहे के औजार तथा मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े पाये गये थे]

भंडारा ज़िला (२१) **पिंपलगाँव**, भंडारा से दक्षिण में २५ मील पर, **संरक्षित स्मारक** (cromlech) ASI, AR, 1930-34, pl LXXVII, a. [चित्रफलक ३, क्र. १०]

(२२) **तिलोता खैरी**, भंडारा से दक्षिण में २४ मील पर, **संरक्षित स्मारक** (cromlech) ASI, AR, 1928-29, Plate IX.

(२३) **ब्रम्बी** पिंपलगाँव के समीप (cromlech) **कज़िन्स-सूची**

रायपुर ज़िला : (२४) **सोनाभीर** : खैरियार जमीनदारी में megaliths, **कज़िन्स-सूची**

चांदा ज़िला : (२५) **चार्मुसी** : चाँदा से पूर्व में ३९ मील पर
२० वृत्ताकार कबरें **संरक्षित स्मारक, कज़िन्स-सूची**

(२६) **केलझर** : चाँदा से पूर्व में ३५ मील पर, 2 cromlechs
कनिंघम, ASR, IX, p 140, Pl XXV.

(२७) **वागनाक** : चाँदा से वायव्य में, नागरी रेल्वे स्टेशन से २ मील पर
वृत्ताकार अश्म, **कज़िन्स-सूची**

(६) ताम्रयुगीन औज़ार

(Copper-hoards)

(१) **गुंगेरिया** : बालाघाट से उत्तर में ३० मील पर स्थित गुँगेरिया नामक ग्राम में ४२४ ताम्रयुगीन औजारों का एक बडा संचय, १८७० ई० में अचानकही प्राप्त हुआ था। उसमें ताम्रयुगीन कुल्हाड़ियाँ, चाँदी की बनी हुई वृषभाकार आकृतियाँ तथा लंबी कुल्हाड़ियाँ (long bar-celts) सम्मिलित थी। इनका वर्णन Coggin Brown, Catalogue, pp. 146-15 तथा Smith, "The Copper Age and Pre-historic Bronze Implements of India," Ind. Ant., XXXIV, (1905) pp. 229-44 में दिया गया हैं। [चित्रफलक १, क्र. ५–८]

(२) इन ताम्रयुगीन औज़ारों के महत्त्व तथा सांस्कृतिक स्थान के परिचय के लिये निम्नलिखित लेख बहुत उपयोगी हैं।

Piggott, " Pre-historic Copper Hoards in the Gangetic Basin "
Antiquity, XVIII (1944), pp. 173-182.
R. Heine-Geldren, " New Light on the Aryan Migration to India"
Bulletin of the American Institute for Iranian Art and Archæology, V, (1937) p. 7-16.
R Heine Geldren, " Archæological traces of the Vedic aryans "
JISOA, IV, (1936), No. 2.
B. B. Lal, " Further light on the copper Hoards, " Ancient India No. 7, तथा Archæology in India, pp 36-39.

(२) **जबलपुर** : जबलपुर के निकट एक स्थान पर ब्रांज की कुल्हाड़ी १८६९ ई० में प्राप्त हुई थी। उसका विश्लेषण होने के बाद उस में ८६·७ भाग ताँबा और १३·३ टीन था। वह औज़ार अब नष्टप्राय है। Proceedings, A. S. Bengal, १८६९ पृ. ६० पर निर्दिष्ट; Ind. Ant., 1905, p. 240.

२ मौर्य–काल

(अ) शिला-लेख

(१) सम्राट् अशोक का रूपनाथ–शिला-लेख
- रूपनाथ, जबलपुर से उत्तर में ३० मीलपर; Hultzch, C. I. I., Vol. I. p. 166.

(२) देवटेक, चाँदा, अशोक कालीन शिला-लेख
प्रो० मिराशी, " New light on the Deotek Inscriptions " Proceedings of the 8th All India Oriental Conference, 1938, p. 613 ff.

(३) रामगढ़ गुफा, सरगुजा-राज्य, शिला-लेख, लगभग २०० ईसा के पूर्व
हीरालाल–सूची, क्र. ३१२; Ind. Ant., XXXIV, p. 197.

(आ) मुद्रायें

(१) आहत मुद्रायें (Punch-marked coins)

आहत मुद्रायें सदैव मौर्य-काल के ही अंतर्गत आती हैं। इनका प्रचलन कम से कम चौथी ईसा की चौथी शताब्दी तक होता रहा। सुविधा की दृष्टि से इन में सभी आहत मुद्रायें सम्मिलित कर ली गयी हैं, यद्यपि इन में से कुछ मुद्रायें मौर्य–काल के पश्चात् की भी हो सकती हैं।

(१) **एरण, सागर;** १८७४–७६ कनिंघम-द्वारा प्राप्त मुद्रायें; ASR, X, 37.

(२) **बिलासपुर,** ९ ताम्र–मुद्राओं का संचय; **नागपुर–संग्रहालय, १९०७ की सूची**

(३) **भण्डारा** में प्राप्त ६५ मुद्राओं का संचय; १८७८; श्री रोडे-द्वारा परीक्षित, JNSI, X, 75.

(४) **बार या बायर;** सारंगगढ़ राज्य, १९२१
पं. लोचनप्रसाद पाण्डेय–के द्वारा परीक्षित; Epi. Ind., XXVII, p. 319.

(५) **अकलतारा,** बिलासपुर, १९२१–२२
२१५ आहत मुद्रायें; **सरकारी नाणक-सूची**

(६) **हिंगणघाट**, वर्धा १९२४
    सरकारी नाणक–सूची; Allan, CIC, BM p lii. 56

(७) **मालेगांव**, वाशीम, १९२४–२५ **सरकारी नाणक सूची**

(८) **ठठारी**, बिलासपुर, १९२५
    छोटी आहत मुद्रायें; Allan, CIC, BM., p. lii. 286-87.

(९) **तारापुर**, रायपुर
    पं. लोचनप्रसाद पाण्डेय के द्वारा परीक्षित; cf JAHRS, III, p. 181.

(१०) **त्रिपुरी**, जबलपुर १९५२–५३ [चित्रफलक ४, क्र. १२]
    सागर-विश्वविद्यालय-पुरातत्त्व विभाग के द्वारा उपलब्ध मुद्रायें; मौर्य-कालीन एवं उत्तर मौर्यकालीन
    अप्रकाशित; दीक्षित, Tripuri Excavation Report, 1954

(११) **पवनार**, वर्धा, १९५३ ई. मे प्राप्त द. ब. महाजन द्वारा सूचना प्राप्त
    अप्रकाशित, दीक्षित, JNSI, XVI.

(२) गण–राज्य के सिक्के

(अ) त्रिपुरी (आ) ऐरिकिण (ई) भागिला

(अ) त्रिपुरी की मुद्रायें ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी का प्रथमार्ध [चित्रफलक ४, क्र. १४]
    पं. भगवानलाल इंद्रजी द्वारा, JRAS, 1894, p. 533; pl. No 15.
    कनिंघम द्वारा, Allan, CIC., BM., p. cxli; plate XXXV, 14-15.
१९५१ खिडिया, होशंगाबाद में प्राप्त, Katare, JNSI., XIII, 40-45.
१९५३ त्रिपुरी की खुदाई में प्राप्त (१०) दीक्षित, Tripuri Excavation Report, 1954.
    हीरालाल–पुरातत्त्व–समिति, जबलपुर-संग्रह (२)

(आ) एरण की मुद्रायें

(१) **धर्मपाल** के नाम के सहित; तीसरी शताब्दी ईसापूर्व [चित्रफलक ४, क्र. १३]
    Cunningham, CAI., pl. XI, 18. Allan, CIC, BM., p. 140; pl. XVIII, 6.

(२) **ऐरिकिण** नाम से उत्कीर्ण मुद्रायें ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी
    Cunningham, ASR., X, pp. 80–81; pl. XXIV, 16–17.
    ,, ASR., XIV, p.149; pl XXXI,17–18.

(३) **अनुत्कीर्ण मुद्रायें**, विविध ईसा से पूर्व ३००–२०० वर्ष
    Allan, CIC. BM., p 140-144.
जमुनिया, होशंगाबाद कटारे, JNSI, XIV, 60-61.
त्रिपुरी, जबलपुर दीक्षित, Tripuri Excavation Report, 1954

(ई) 'भागिला' की मुद्रायें ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी
    जमुनिया, होशंगाबाद कटारे, JNSI, XIV, pp. 9–10; pl. II, 13–17.

(३) प्राचीन ढले हुए सिक्के Cast Coins

इन मुद्राओं का समय निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, परंतु ॲलन के मतानुसार उनको अनुमानतः ईसा से पूर्व तीसरी और दूसरी शताब्दी में रखा जा सकता है। Allan, CIC, BM., p. lxxvii

(१) जमुनिया से, Katare, JNSI., XIV, p. 50-51.

(२) त्रिपुरी की १९५२ ई० की खुदाई में प्राप्त, **अप्रकाशित**

(४) अन्य मुद्रायें

(१) **पौनी**, भंडारा; दिमभाग का सिक्का, तीसरी शताब्दी ईसापूर्व
मिराशी, JNSI., VI. 9.

(२) अन्य प्राचीन सिक्कों के निम्नलिखित स्थानों से प्राप्त होने का उल्लेख **नागपुर-संग्रहालय की १९०७ की सूची** में किया गया है, परन्तु उनके समय तथा प्रकार के विषय में अभी तक पूरी जाँच नहीं हो सकी है।

बालाघाट, चाँदी के २० सिक्के
भण्डारा, चाँदी के ६५ सिक्के
बालाघाट, ताँबे के ७ सिक्के, पियर्स-द्वारा प्राप्त, १८६८ ई०
छत्तीसगढ़, ताँबे के १३ सिक्के, १८९४ ई० में प्राप्त
होशंगाबाद, ताँबे के ५८ सिक्के
सिवनी, ताँबे का १ सिक्का

३ शातवाहन-काल

(२०० ईसापूर्व से २०० ईसवी तक)

इस काल की सामग्री बहुत बिखरी हुई है, परंतु निम्नलिखित ग्रंथ शातवाहन काल के अध्ययन के लिये बहुत उपयुक्त हैं।

Rapson, Catalogue of Coins in the British Museum, Andhras and Western Kshatrapas etc London 1908. Introduction

Bhandarkar D. R. " Deccan of the Satavahana Period "
Ind Ant. XLVII, 59, 149; XLVIII, 77; XLIX, 30.

Bakhle, " Satavahanas and the Contemporary Kshatrapas "
JBBRAS., III (N. S), pp. 44-100; IV, pp. 39-79.

Gopalachari, Early History of the Andhra Country, Madras, 1941.

कुछ विद्वानों की सम्मति में शातवाहन-शासकों का मूल प्रदेश विदर्भ था, परन्तु यह मत बहुत से विद्वानों को मान्य नहीं है। इसके लिये देखिये, JNSI., III, p. 64 ff.

(i) शातवाहन काल के लेख

(१) **गुंजी, सकती राज्य;** कुमारवरदत्त का प्रस्तर-लेख, प्रथम शताब्दी ईसवी
मिराशी, Epi. Ind., XXVII, 48.

(२) **पौनी, भण्डारा;** भार-शासक भगदत्त का शिलालेख, प्रथम शताब्दी ईसवी
मिराशी, Epi. Ind., XXIV, 11.

(३) **एरण, सागर;** सेनापति श्रीधरवर्मन् का लेख, प्रथम शताब्दी ईसवी
मिराशी, Proceedings of the All Indian History Congress, Jaipur.
भा. इ. सं. मं. त्रैमासिक, वर्ष ३३, पृ. ३२-३८

(४) **दुग, दुग:** खण्डित शिलालेख, दूसरी शताब्दी ईसवी
हीरालाल-सूची क्र. २३९

(५) **सेमरसाल, बिलासपुर;** खण्डित शिलालेख, दूसरी शताब्दी ईसवी
ASI, AR., 1930-34, Plate LXXVI, a [चित्र-फलक ६ क्र. २९]

(६) **किरारी, बिलासपुर;** काष्ठमय यूप-लेख
हीरानंद शास्त्री, Epi. Ind., XVIII, 151.

(७) **बघोरा, जबलपुर** (संप्रति महाकोशल महाविद्यालय, जबलपुर)
शिवघोष का बघोरा शिला-लेख; दूसरी शताब्दी ईसवी, **अप्रकाशित** [चित्र-फलक ८ क्र. ३३]

(८) **शिलाहर** (मध्य प्रदेश की उत्तरी सीमा-पर) गुफ़ा का लेख, दूसरी शताब्दी ईसवी
भाण्डारकर, Epi. Ind., XXII, 30-32.

(९) **बुढ़ीखार, बिलासपुर,** वैष्णव मूर्ति-लेख, दूसरी शताब्दी
प्रजावती नामक स्त्री द्वारा दिया गया दान का उल्लेख
डॉ० दिनेशचंद्र सरकार द्वारा सूचना-प्राप्त, **अप्रकाशित**

(ii) शातवाहन-काल की गुफ़ायें

१ पातूर : अकोला — Akola District Gazetteer
२ भांदक : चांदा — Cunningham, ASR, IX, p 124; pl. XXI, XXII.

(iii) मुद्रायें

(अ) शातवाहन मुद्राएँ पूर्व-काल

(१) **सिरि सात** (सातकर्णी) **के सिक्के**
जमुनिया : होशंगाबाद से प्राप्त, कटारे, JNSI., XII, 94-97.

(२) **सातवाहन सातकर्णी प्रथम के सिक्के**
त्रिपुरी में प्राप्त : कटारे, JNSI., XIII, 35.
त्रिपुरी-खुदाई में प्राप्त : दीक्षित, Tripuri Excavation Report, 1954.
[चित्र-फलक ४ क्र. १५]

(ब) शातवाहन मुद्रायें, उत्तरकाल

(३) **आपिलक का सिक्का** [चित्र-फलक ४ क्र. १७]
बालपुर : रायगढ़ में प्राप्त; दीक्षित K. N., JASB, Numismatic Supplement, XLVII, 344; पाण्डेय, JAHRS, X, 225.

(४) **चाँदा संचय** : Rapson, Catalogue etc., pp. 21, 42, 48.

(५) **तहाला संचय** : तहाला, अकोला; १५२५ सिक्के; १९४० ई० में प्राप्त
गौतमीपुत्र से यज्ञश्री तक के ११ शासक, जिनमें-श्री कुंभ सातकर्णी, श्री कर्ण सातकर्णी और श्री शक शातकर्णी के नाम प्रथम बार ज्ञात हुए हैं [चित्र-फलक ४ क्र. १६]
सरकारी नाणक सूची; मिराशी, JNSI., II., 83-94; IHQ., XVI, 503.

(६) **गौतमीपुत्र शातकर्णी** की रजत-मुद्रा
त्रिपुरी से प्राप्त; कटारे, JNSI, XII, 126-134.

(७) **गौतमीपुत्र शातकर्णी** की दूसरी रजत-मुद्रा
त्रिपुरी से प्राप्त; दीक्षित, JNSI., XVIII **अप्रकाशित**

(iv) रोमन सिक्के और पदक

(१) **चकरबेड़ा : बिलासपुर** दो रोमन मुद्राएँ (Aurii) [चित्र-फलक ४ क्र. १८]
अरवमुथन्, JNSI., VII, 8; **सरकारी नाणक सूची**, १९४१-४९ ई०; Pl. II

(२) **ताडली, चाँदा** : १९२९-३० में प्राप्त **सरकारी नाणक-सूची**

(३) **रोमन सवेरस** : बिलासपुर में प्राप्त; नागपुर-संग्रहालय १९०७ ई० की सूची

(४) **खोलापुर, अमरावती**, रोमन मृण्मय पदक, नागपुर-संग्रहालय; **अप्रकाशित**
[चित्र-फलक ४ क्र. १९]

(५) **त्रिपुरी-जबलपुर** कच्चे काँच (फेअन्स) के पदक
त्रिपुरी खुदाई १९५३ ई० **अप्रकाशित**

(v) कुषाण सिक्के और लेख

(१) **धुआँधार (भेड़ाघाट)** जबलपुर मूर्ति-लेख, नागपुर-संग्रहालय
हीरालाल-सूची क्र. ४५ **अप्रकाशित**

(२) कुषाण शासक कनिष्क तथा हुविष्क के सोने के सिक्के (२) हरदा, होशंगाबाद, में प्राप्त
नागपुर-संग्रहालय, १९०७ ई० की सूची

(३) **पेंडरवा, चंद्रपुर, बिलासपुर**; ताँबे के कुषाण-सिक्के
यौधेय मुद्राओं के साथ १९५२ ई० में प्राप्त
पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय के द्वारा सूचना-प्राप्त

(४) कुषाण वासुदेव का ताँबे का सिक्का
सुंदरलाल सोनी-संग्रह, त्रिपुरी में प्राप्त, **अप्रकाशित**

(vi) क्षत्रप सिक्के

(१) **सिवनी, छिंदवाड़ा;** रुद्रसेन प्रथम का चाँदी का सिक्का
आचार्य, JNSI., XII, 167-68.

(२) **सोनपुर, सिवनी के समीप;** रुद्रसेन प्रथम से लेकर रुद्रसेन तृतीय तक की ६२२ मुद्राओं का संचय
आचार्य, JASB., Numis matic Supplement, XLVIII, 115.

(vii) अन्य सामग्री

(१) **ब्रह्मगुप्त की पाषाण-मुहर** (Seal) प्रथम शताब्दी ईसवी
नागपूर के निकट एक स्थान से प्राप्त, मिराशी, JNSI., III, 102

(२) **बालपुर में प्राप्त चार सिक्के**
प्रायः शातवाहनोत्तर काल के, अलतेकर, JNSI., IX, p. 31.

४ गुप्त-वाकाटक-काल

गुप्त-काल के अध्ययन के लिये निम्न लिखित सामग्री अत्यंत उपयुक्त है।

मुजुमदार-अलतेकर, A History of Indian people, Vol. V, Gupta-Vakataka period.
फ्लीट, Gupta Inscriptions, Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. III.
अॅलन, Catalogue of Coins in the British Museum, Gupta Dynasty.
अलतेकर, Catalogue of Coins in the Bayana Hoard.
राखलदास बानर्जी, The Age of the Imperial Guptas.
सालेतोर, Life in Gupta Age; Bombay 1945.

(i) गुप्त सम्राटों के लेख

(१) **समुद्रगुप्त का एरण शिलालेख** (प्रायः ३३०-३७६ ईसवी)
कलकत्ता संग्रहालय में; **भाण्डारकर-सूची** क्र. १५३९; फ्लीट, C. I. I, III, 3.

(२) **बुद्धगुप्त का एरण-स्तंभ-लेख,** गुप्त सं. १६५ (४८४ ईसवी)
भांडारकर सूची क्र. १२८७; फ्लीट, C. I. I., III, 89.

(३) **भानुगुप्त का एरण-स्तंभ-लेख,** गुप्त. सं. १९१ (५१० ईसवी)
भांडारकर-सूची क्र. १२९०; फ्लीट, C. I I., III, 92.

(ii) गुप्त-वाकाटक काल की-मुहरें (Seals)

(१) **माहुरझरी,** नागपुर से १६ मील पर (चौथी शताब्दी ईसवी)
मिराशी, JNSI., III, 99.
हंटर " Antiquities from Mahurjhari " शारदाश्रम वार्षिक, पृ. ३०-३५

(२) **पारसिवनी,** नागपुर से १६ मील पर (चौथी शताब्दी ईसवी)
मिराशी, JNSI., III, 100.

(३)–(४) **नन्दपुर,** नागपुर से २० मील पर (चौथी शताब्दी ईसवी)
मिराशी, JNSI., III, 101.

(iii) गुप्त शासकों के सोने के सिक्के

(१) **सकौर, हट्टा, दमोह;** १९१४ ई० में प्राप्त
समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त प्रथम और स्कंदगुप्त के २५ सिक्कों का संचय; **अप्रकाशित**
हीरालाल-सूची पृ. ६३; दमोह-दीपक, पृ. १०८ [चित्र-फलक ५ क्र. २२]

(२) **पट्टण, मुलताई, बैतूल;** १९३८–४० ई० में प्राप्त
चंद्रगुप्त प्रथम का सिक्का, **अप्रकाशित; सरकारी नाणक-सूची**

(३) **जबलपुर** चंद्रगुप्त प्रथम के तीन सिक्के, **अप्रकाशित**
डॉ० महेशचंद्र चौबे, जबलपुर से सूचना-प्राप्त

(४) ? **चंद्रगुप्त द्वितीय का सोने का सिक्का**
शारदाश्रम वार्षिक, पृ. ४६ सामनेवाली प्रतिमा

(५) **चंद्रगुप्त द्वितीय का सोने का सिक्का** हरदा से प्राप्त
नागपूर-संग्रहालय १९०७ ई० की सूची [चित्र-फलक ५ क्र. २१]

(६) **खैरताल, रायपुर** १९४८ ई० में प्राप्त कुमारगुप्त प्रथम के ५४ सिक्कों का संचय
रोडे, JNSI., X, 137; XI, 101; **सरकारी नाणक-सूची** [चित्र-फलक ५ क्र. २३]

चाँदी के सिक्के

(७) **इलिचपुर** में कुमारगुप्त प्रथम के १३ सिक्कों का संचय, १८५१ ई० में प्राप्त
JRAS., 1889, 124.

(IV) सपाट छत के मन्दिर

(१) **बरगांव,** जबलपुर — **जबलपुर गॅज़ेटियर,** पृ. ३३१

(२) **सकौर,** जबलपुर — **हीरालाल-सूची,** पृ. ६३

(३) **रोण्ड,** जबलपुर — **दमोह-दीपक,** पृ. १०४

(४) **तिगवाँ,** जबलपुर — **जबलपुर-गॅज़ेटियर,** पृ ३८८;
Cunningham, ASR, IX, 42-46; Pl. IX-XI

(५) **कुण्डा,** घनिया के समीप, जबलपुर — **हीरालाल-सूची,** पृ. ४५

(६) **कुण्डलपुर,** दमोह, जबलपुर — **संरक्षित स्मारक-सूची**
कनिंघम, ASR, XXI, 166, Pl. XLII;
VII, 58;

(V) गुप्तों के समकालीन अन्य लेख

(१) **महाराज संक्षोभ** का बैतूल-दान-पत्र, गुप्त-संवत् १९९ (५१८ ईसवी)
प्रस्तर-वाटिका और द्वार-वाटिका नाम का ग्रामों का दान
(बिल्हरी के समीप आधुनिक पटपारा और द्वारा)
भाण्डारकर-सूची, क्र. १२९२; हीरालाल, Epi. Ind., VIII, 284.

(२) **भीमसेन** का आरंग-दान-पत्र, गुप्त-सम्वत् २८२ (संशोधित १८२) (५०१ ईसवी)
दोण्डा और वटपल्लिका नामक ग्रामों का दान (प्रायः आधुनिक दुण्डा, आरंग से पश्चिम में २५ मील और आधुनिक बरपल्ली, आरंग से पूर्व में ३० मील पर)
भाण्डारकर-सूची क्र. १३२९; **हीरालाल-सूची** क्र. १७०; हीरालाल, Epi. Ind, IX, 342

(३) **आरंग**, रायपुर, में प्राप्त शिलालेख (पांचवी शताब्दी) रायपुर-संग्रहालय
हीरालाल सूची क्र. १८३; JAHRS, IV, 46-48.

(४) **आरंग**, रायपुर में प्राप्त दूसरा खंडित शिलालेख; चौथी शताब्दी;
Cunningham ASR., XVII, 21

(५) **स्वामिराज** का नगरधन-ताम्र-पत्र, कल. सं. ३२२ (५७०-७१ ईसवी)
(नागपूर संग्रहालय में संरक्षित)
नन्दिवर्धन से प्रचलित। स्वामिराज के द्वारा शूल नदी पर स्थित अंकोल्लिका नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख; स्थल-निश्चय पक्का नहीं;
मिराशी, Epi. Ind., XXVIII, 1-11; **द. म. इ. सा.**, खण्ड ३, पृ. १०९-११५.

(VI) वाकाटक शासकों के लेख

(अ) वत्सगुल्म शाखा (ब) प्रमुख शाखा

वाकाटक वंश का ऐतिहासिक महत्त्व प्रथम बार डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल ने अपने History of India, Lahore, 1933 में बतलाया। तदुपरान्त संशोधित सामग्री पर आधारित मुजुमदार-अल्तेकर कृत A History of Indian people, Vol. V, देखिये। तथा विस्तृत विवरण मिराशी, "The Vakataka Dynasty of the Central Provinces and Berar", Journal of the Nagpur University Historical Society, I, p. 8. ff. में देखिये।

वत्सगुल्म शाखा के विवरण के लिये, मिराशी, "The Vatsagulma branch of the Vakataka dynasty," Nagpur University Journal, VI, (1940), pp. 41. ff. देखिये।

(अ) वत्सगुल्म शाखा

(१) **वाशीम-ताम्र-पत्र**, राज्य-वर्ष ३७

वत्सगुल्म (वाशीम) से, विन्ध्यशक्ति के द्वारा नांदीकड से उत्तर-मार्ग में स्थित भाका, लक्षा और

उप्रका के समीपवर्ती आकाशमद्र नामक ग्राम के दान का उल्लेख । स्थल-निर्णय निश्चित नहीं हो सका ।

मिराशी, Epi. Ind., XXVI, 137; सरकार, IHQ., XVI, 182; XVII, 110. Pro. Ind. Hist. Cong. Calcutta, 1939, p. 349 ff.

(२) **देवसेन** का इंडिया ऑफिस-ताम्र-पत्र (अपूर्ण)

वत्सगुल्म (वाशीम) से । देवसेन-द्वारा उत्तर मार्ग में नांगर कटक के यप्पज्ज ग्राम के दान का उल्लेख

H. N. Randle, Denison Ross Volume, p. 259;
मिराशी; New Ind. Ant., II p. 721

(ब) वाकाटक वंश—प्रमुख शाखा

(१) प्रभावती गुप्ता

(१) **भारत-इतिहास-संशोधक-मण्डल ताम्रपत्र,** राज्य-वर्ष १३

सुप्रतिष्ठिताहार में से उङ्गुण (आधुनिक हिंगणघाट) ग्राम के दान का उल्लेख
विलवणक (W) = वणी, हिंगणघाटसे २॥ मील पर स्थित
कदापिञ्जन (E) = कधाजन, हिंगणघाट से ३ मील पर
शीर्ष ग्राम (N) = ?
सिदि विवरक (S) = ?

भाण्डारकर-सूची क्र. १७०३; पाठक और दीक्षित, Epi. Ind., XV, 41.
स्थलनिश्चय : मिराशी, **भा. इ. सं. मं. त्रैमासिक,** वर्ष २२, पृ. १.

(२) **ऋद्धिपुर** (ज़ि० अमरावती) ताम्र-पत्र, राज्य-वर्ष १९

रामगिरि (रामटेक) से । कौशिक मार्ग में स्थित अश्वत्थ नगर (= असतपुर, ज़िला इलिचपुर) ग्राम ब्राह्मणों के लिये दान में देने का उल्लेख ।

भाण्डारकर-सूची क्र. १७०६; गुप्ते, J.R.A.S.B., (n. s.), XX, 58.

(२) प्रवरसेन द्वितीय

(१) **कोठूरक ताम्रपत्र,** राज्य-वर्ष २ (जांब, हिंगणघाट से प्राप्त)

नान्दिवर्धन (नगरधन) से । सुप्रतिष्ठिताहार में से कोठूरक ग्राम के कालुङ्क नामक ब्राह्मण को दान देने का उल्लेख

उमा नदी (E) = वुना नदी जाँबसे २॥ मील पर
चिञ्चापल्ली (S) = चिंचोली, जांबसे ¾ मील पर
बोंथिक वाटक (N) = बोथाड
मण्डुकि ग्राम (W) = माण्डगाँव

मिराशी, Epi. Ind., XXVI. 155; **भा. इ. सं. मं. त्रैमासिक,** वर्ष २३, पृ. १०–१६; चक्रवर्ति, JBBRAS., (N.S.), XXII, 49.

(२) **बेलोरा-ताम्र-पत्र,** राज्य-वर्ष ११ (बेलोरा, मोर्शी, अमरावती से प्राप्त)

(a) नान्दिवर्धन (= नगरधन) से। असिभुक्ति में शैलपुर मार्ग के अन्तर्गत महल्लाट ग्राम के दान का उल्लेख।

असिभुक्ति = अष्टी, बेलोरा से आग्नेय कोना में १० मील पर

शैलपुर = सालबर्डी लाडकी ग्राम से पूर्व में १५ मील पर

(b) पाकण्ण राष्ट्र में दीर्घद्रह ग्राम तथा महल्लमलाट ग्राम के दान का उल्लेख

पाकण्ण = ?

दीर्घद्रह = दीघी, वर्धा नदीपर, अष्टी से दक्षिण में २० मील पर

महल्लमलाट = घाट लाडकी, बेलोरा से वायव्य कोना में १८ मील पर

मिराशी, Epi. Ind., XXIV, 260.

(३) **चम्मक-ताम्र-पत्र,** राज्य-वर्ष १८ (चम्मक में इलिचपूर से ४ मील पर प्राप्त)

शत्रुघ्नपुत्र कोण्डराज की प्रार्थना पर भोजकट राज्य में मधुनदी (आधुनिक चंद्रभागा) के तट पर स्थित चर्माङ्क (= चम्मक) ग्राम के दान का उल्लेख

भाण्डारकर–सूची क्र. १७०४; **हीरालाल–सूची** क्र. २४२; फ्लीट, C. I. I., III, 236.

(४) **सिवनी-ताम्र-पत्र,** राज्य-वर्ष १८

बेनाकट कर्पर भाग में से करंजविरक (आमगाँव ज़मीनदारी में कारंजा) भाग के ब्रह्मपुरक (ब्राह्मणी) ग्राम के दान का उल्लेख

वटपुरक (N) = ?

किण्हिखेटक (W) = ?

पवरज्जवाटक (S) = ?

कोल्लापुरक (E) = कुलपा, वैनगंगा से ३६ मीलपर, कारंजा से १ मील

भाण्डारकर–सूची क्र. १७०५; **हीरालाल–सूची** क्र. १२६; फ्लीट, C I. I., III, 245; स्थल-निश्चय : मिराशी, NUJ., I, (1935) p. 3

(५) **इंदूर ताम्र-पत्र,** राज्य-वर्ष २३

यह दानपत्र संभवतः विदर्भ में प्राप्त हुआ था। इसमें दान-विषय ग्राम का उल्लेख नहीं है, परंतु उसकी चतुर्दिक् सीमा वर्णित है।

अंजणवाटक (E) = ?	कोविदारिका (W) = ?
आरामक (S) = ?	कोशंबक (N) = ?

इसमें निर्दिष्ट कोशंबक प्रायः तिरोड़ी के दान-पत्र का कोसम्बखण्ड हो सकता है।

सुशील कुमार बोस, Epi. Ind., XXIV, 52

(६) **तिरोडी दानपत्र,** राज्य वर्ष २३ (कटंगी, बालाघाट से ८ मील पर तिरोड़ी में प्राप्त)
बेनाकट अपरपट्ट में कोसम्बखण्ड ग्राम के दान का उल्लेख

कोसम्ब खण्ड = आधुनिक कोसम्बा, तिरोड़ी से ६ मील पर
जमली (E) = जमुनतोला, कोसम्बा से ३ मील पर
वर्धमानक (S) = ?
मल्लक पेटक (N) = ?
मृगसीमा (W) = ?

प्रो. मिराशी के मतानुसार इसी दानपत्र में वर्णित नरतंगवारी, आधुनिक नरनांला किले के समीप भैरववाडी है।

मिराशी, Epi. Ind., XXII, 167

(७) **दुडिया ताम्र-पत्र,** राज्य-वर्ष २३
(छिंदवाडा से नैऋत्य दिशा में ३० मील पर दुडिया ग्राम में प्राप्त)
चंद्रपुर संगमिका (चंद्रभागा और सरस्वती नदियों के संगम) पर स्थित दर्भमलक ग्राम तथा हिरण्यपुर (चाँदूर के समीप सोनगाँव) में से आरम्मी (आर्वी) विभाग में कर्मकार (= कुलमगाँव) ग्राम के दान करने का उल्लेख
भाण्डारकर–सूची क्र. १७०७; **हीरालाल सूची** क्र. ६८; कीलहॉर्न, Epi. Ind., III, 260

(८) **वडगाँव ताम्र-पत्र,** राज्य-वर्ष २५ (वडगांव, वरोरा चाँदा; १९४२ में प्राप्त)
हिरण्यनदी (= एरई) के तट पर स्थित शिबिर से। एकार्जुनक (= अर्जुनी) के निवासी रुद्रार्य ब्राह्मण को सुप्रतिष्ठिताहार से वेल्लुसुक ग्राम में भूमि-दान का उल्लेख

गृध्रग्राम (W); कदम्बसरक (N); नीलीग्राम (E); कोकिला (S)
आधुनिक स्थान निश्चित रूप से नहीं जाने जा सकते। प्रो. मिराशी के द्वारा निश्चित किये हुए स्थान ठीक नहीं विदित होते।

मिराशी, Epi. Ind., XXVII, 74

(९) **पट्टण ताम्र-पत्र** राज्य-वर्ष २७ (पट्टण, ज़िला बैतूल में प्राप्त)
प्रवरपुर (पवनार) राजधानी से। अश्वत्थखेटक (?) नामक ग्राम में से भूमि महापुरुष विष्णु की पादुका के देवालय में आयोजित सत्र के लिये दान के देने का उल्लेख
वरदाखेट मार्ग = वरूड, पट्टण से दक्षिण में १२ मील पर
लोहनगर भाग = लोणी (?) पट्टण से नैऋत्य में ९ मील पर

मिराशी, Epi.Ind XXIII, 81

(१०) **पटना–संग्रहालय दान-पत्र** (खण्डित) बालाघाट में प्राप्त
सुन्धाति मार्ग के श्री पर्णिका ग्राम के दान का उल्लेख

श्री पर्णिका = ?
सुन्धा = समनापुर ?
मिल्लुकद्रव (E) = मुगरदरा, ब्राह्मणी से ईशान्य कोण में २ मील पर
मधुकज्झरी (S) = मुरझर, ब्राह्मणी से आग्नेय कोण में ३ मील पर

ब्रह्मपुरक (W) = ब्राह्मणी, बालाघाट से वायव्य कोण में ११ मील पर
दर्भपुरक (N) = ?
आल्तेकर, JBORS., XIV, 472; स्थल-निश्चय : मिराशी, NUJ. 2 (1936), 50.

(११) दुग ताम्र-पत्र (खण्डित) [चित्र-फलक ५ क्र. ३१]

इस ताम्रपत्र का पहिला पत्र दुग में पानाबारस तहसील में मोहल्ला नामक ग्राम में मिला था। यह पद्मपुर से संभवतः प्रवरसेन द्वितीय के द्वारा प्रचलित किया गया था। यह अपूर्ण है।

मिराशी, Epi. Ind., XXII, 207; **द. म. इ. सा.**, खण्ड ३, पृ. १–८

(१२) **रामटेक ताम्रपत्र** (खण्डित)

रामटेक में नागपूर के समीप यह दान–पत्र प्राप्त हुआ था, उसके अन्य पत्र अनुपलब्ध है। संभवतः यह प्रवरसेन द्वितीय के द्वारा अंकित किया गया था। इस में ग्रामों का उल्लेख नहीं हैं।

हीरालाल सूची क्र. ५; मिराशी, NUJ., III, (1937), pp. 20–27.

(३) पृथ्वीषेण

(१) **बालाघाट ताम्र-पत्र** (संप्रति रॉयल एशि० सोसायटी बंगाल, कलकत्ता)

यह ताम्र-पत्र वेम्बार से प्रचलित किया गया था। इसमें वाकाटक वंश को अवनत दशा से उत्कर्षपूर्ण स्थिति में लाने का उल्लेख किया गया हैं। यह ताम्र-पत्र भी अपूर्ण है।

भाण्डारकर सूची क्र. १७०८; **हीरालाल सूची** क्र. २६; कीलहार्न, Epi. Ind., IX, 270

(४) रुद्रसेन प्रथम

(१) **देवटेक शिलालेख** (चाँदा ज़िले में, नागपुर से ५० मील पर देवटेक में प्राप्त)
इसमें रुद्रसेन प्रथम के समय में चिक्कम्बरी ग्राम में धर्मस्थान की स्थापना होने का वर्णन है। चिक्कम्बरी, आधुनिक चिकमारा, देवटेक से २ मील पर हैं।

हीरालाल सूची क्र. १६; मिराशी, Proceedings 8th Ori. Conf., p. 613

(VII) वाकाटक शासक और उनके सामंतों के अन्य लेख

मध्य प्रदेश की सीमा पर निम्नलिखित शासक और उनके सामंतो के लेख प्राप्त हैं।

(१) अजंठा शिलालेख (गुफ़ा क्र १६)

भाण्डारकर सूची क्र. १७१२; मिराशी, Hyderabad Archæological Series, No 16

(२) अजंठा शिलालेख (गुफ़ा क्र. १७)

भाण्डारकर सूची क्र. १७१३; मिराशी, Hy. Arch Series No. 17

(३) घटोत्कच गुफ़ा शिलालेख (वाकाटक देवसेन के समय का)

भाण्डारकर सूची क्र. १७११; मिराशी, Hyderabad Ar. Series (1952)
द. म. इ. सा., खण्ड ४ पृ. १-८

(४) पृथ्वीषेण का सामन्त उच्चकल्प महाराज व्याघ्रदेव का नाचना शिलालेख
भाण्डारकर सूची क्र. १७०९, फ्लीट, CII, III, 233

(५) पृथ्वीषेण का सामन्त उच्छ कल्प महाराज व्याघ्रदेव का गंज शिलालेख
भाण्डारकर सूची क्र. १७१०; सुखटणकर, Epi. Ind., XVII, 12.

(VIII) अन्य सामग्री

पवनार (प्राचीन प्रवरपुर) में रामायण की कथा से आधारित कई शिल्पकला के अवशेष पाये गये हैं। संभवतः वे उत्तर–गुप्तकालीन या वाकाटक–काल के प्रतीत होते हैं। किन्तु इसी संबंध में अधिक खोज की जरुरी है। देखिये, मिराशी, "पवनार येथील कांहीं अवशेष" Mahamahopadhyaya D. V. Potdar Volume, pp. 1-7.

माहुरझरी के अवशेष गुप्त काल के बतलाये जाते हैं। हंटर, Antiquities from Mahurjhari, **शारदाश्रम वार्षिक,** पृ. p 30-35.

कौण्डिन्यपुर में भी इसी समय के अवशेष प्राप्त होने की आशा है। आ. रा. देशपांडे, Antiquities from Kaudinyapur., **शारदाश्रम वार्षिक,** पृ. ६८

रामटेक : प्रा. मिराशी के मतानुसार रामटेक में विद्यमान त्रिविक्रम की मूर्ति गुप्तकालीन है। **पोतदार गौरव ग्रंथ,** पृ. ७.

(IX) दक्षिण कोसल के पाण्डव

पाण्डव वंश के विवरण के लिये देखिये

मिराशी, "The Pandava Dynasty of Mekala" INDICA, (Silver Jubilee Volume of the Indian Historical Research Institute, St. Xavier's College, Bombay) pp. 268–273; "प्राचीन भारतांतील पांडववंश," **भा. इ. सं. सं. त्रैमासिक,** वर्ष ३१/४, पृ. १४-४९

भरतबल

(१) **ब्रह्मणी ताम्रपत्र** राज्य वर्ष २ (रीवाँ राज्य में सोहागपुर समीप ब्रह्मणी ग्राम में प्राप्त)
कोशल की राजकन्या लोकप्रकाशा का पति राजन् भरतबल द्वारा दान करने का उल्लेख।
लिपिशास्त्र की दृष्टीसे यह लेख पाँचवीं शताब्दी ईसवी का प्रतीत होता है।
भरतबल और अन्य विख्यात पाण्डव राजाओं का संबंध सुस्पष्ट नहीं है।

छाबड़ा, Epi; Ind., XXVII, 132.

इंद्रबल और ईशानदेव

(२) **खरोद शिलालेख** (लखनेश्वर मन्दिर में संरक्षित)

यह खण्डित लेख में पाण्डववंशी इंद्रबल और उसका पुत्र ईशानदेव का उल्लेख पाया जाता है। लेख पूर्णतया नहीं पढ़ा जा सकता।

भाण्डारकर सूची क्र. १६५१; **हीरालाल सूची** क्र. २०८; भाण्डारकर, PR ASI, WC., 1903-04, p. 54.

नन्नदेव

(३) **भांदक** (मूलतः आरंग) शिलालेख (नागपूर संग्रहालय में संरक्षित)

नन्नदेव के समय का लेख। भवदेव द्वारा सूर्यघोष रचयित बौद्ध देवालय का जीर्णोद्धार करने का उल्लेख

भाण्डारकर सूची क्र. १६५०; **हीरालाल सूची** क्र. १४; कील्हार्न, JRAS., 1905, p.624,

तीवरदेव

(४) **राजीम ताम्रपत्र**; राज्यवर्ष ७ (राजीम के देवालय में संरक्षित)

श्रीपुर से प्रचलित। तीवरदेव द्वारा पेन्ढम भुक्ति में से पिंपरीवद्रक नामक ग्राम दान करने का उल्लेख

श्रीपुर = सिरपुर

पेन्ढम (भुक्ति) = पोन्ढ, राजीम के उत्तर में ६ मील

पिंपरीवद्रक = पिपरोद, राजीम के उत्तर में ३ मील

भाण्डारकर सूची क्र. १६५२; **हीरालाल सूची** क्र. १७२; **फ्लीट**, C.I.I., III,291; स्थल निर्णय: मिराशी, NUJ., II (1936), 48.

(५) **बालोदा ताम्रपत्र**; राज्यवर्ष ९ (सम्बलपुर, बिहार में प्राप्त) नागपूर संग्रहालय में संरक्षित

श्रीपुर से प्रचलित। तीवर देव द्वारा सुंदरिका मार्ग में मेण्कीड्डक नामक ग्राम का दान तथा बिल्वपद्रक ग्राम में सत्र के निर्माण का उल्लेख। स्थल निर्णय नहीं हुआ।

भाण्डारकर सूची क्र. १६५३; **हीरालाल सूची** क्र. १७१; हुल्श, Epi. Ind, VII, 106.

महाशिवगुप्त

(६) **सिरपुर, लक्ष्मण देवालय** शिलालेख (रायपुर संग्रहालय में संरक्षित)

महाशिवगुप्त की माता वासटा के द्वारा हरि (विष्णु) के मन्दिर को निर्माण करने का उल्लेख तथा मन्दिर के लिये निम्नलिखित ग्रामों का दान करने का उल्लेख

तोडाङ्कण = तुरेंगा सिरपुर के आग्नेय में कुलपदर के निकट

मधुवेट = मधुवन तुरेंगा से ४ मील

नालीपद्र = ?

कुरपद्र = कुलपदर, सिरपुर के आग्नेय में १५ मील

वाणपद्र = ?

वर्गुल्लक = गुल्लु, सिरपुर के नैऋत्य में १५ मील

भाण्डारकर सूची क्र. १६५४; **हीरालाल सूची**; क्र. १७३; हीरालाल, Epi. Ind., XI, 185.

(७) **सिरपुर : गंधेश्वर देवालय** शिलालेख (क्र. १ से ६)

(सिरपुर देवालय में संरक्षित)

महाशिवगुप्त के समय में गंधर्वेश्वर देवालय के लिये माला वगैरे देने का उल्लेख

भाण्डारकर सूची क्र. १६५५; **हीरालाल सूची** क्र. १७३

(८) **सिरपुर शिलालेख** (सुरंग नामक टिलेपर प्राप्त; रायपूर संग्रहालय में संरक्षित)

महाशिवगुप्त का उल्लेख

हीरालाल सूची क्र. १८६

(९) **सिरपुर शिलालेख** (नदी के तटपर देवालय के द्वार समीप संरक्षित)
महाशिव गुप्त के समय का लेख;
हीरालाल सूची क्र. १८७

(१०) **बारदुला ताम्र-पत्र**; राज्य-वर्ष ९ (बारदुला, सारंगगढ़ राज्य में प्राप्त)
महाशिवगुप्त-द्वारा कोशीर-नन्दपुर विषय में वटपद्रक नामक ग्राम के दान का उल्लेख
कोशीर-नन्दपुर = नन्दपुर, बिलासपुर ज़िले की सीमा पर, सकती के समीप
वटपद्रक = बटपदक, बारदुला से ४ मील पर
पां. मि. देसाई, Epi. Ind., XXVII, 289.

(११) **लोधिया ताम्र-पत्र** राज्य-वर्ष ५७
(सारंगगढ़ राज्य में सरिया परगणा में लोधिया ग्राम से प्राप्त)
महाशिवगुप्त-द्वारा ओणि-भोग में वैद्यपद्रक नामक ग्राम के दान का उल्लेख
वैद्यपद्रक = वैद पाली, गाईसिलाट तहसील में बोरसम्बार ज़मीनदारी के अन्तर्गत
पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, Epi. Ind., XXVII, 319.

(१२) **मल्लार-ताम्र-पत्र**
(मल्लार, जो बिलासपुर से आग्नेय कोण में १६ मील दूर है, से प्राप्त)
महाशिवगुप्त के द्वारा तरडंशक भोग में कैलासपुर नामक ग्राम बौद्ध भिक्षुओं के 'विहारिका' मठ के लिये दान में देने का उल्लेख
तरडंशक = तरोड, मल्लार से ईशान्य कोण में ११ मील पर
कैलासपुर = केसला, मल्लार से आग्नेय कोण में ८ मील पर
प्रो. वा. वि. मिराशी तथा पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, Epi. Ind., XXIII, 113

(X) पाण्डव वंशीयों के सिक्के, मुहरें (Seals), इत्यादि

(१) **'केसरी' अक्षरान्वित सोने के सिक्के** बालपुर में प्राप्त, १९२७ ई०
प्रायः महाशिवगुप्त के बंधु रणकेसरी के द्वारा प्रचलित; JAHRS., III, p. 181

(२) **राणक श्री बालकेसरि** } ऐसे अक्षरान्वित गोमेद पत्थर की मुहर (Seal)
बालपुर में १९५३ ई० में प्राप्त प्रायः नवीं शताब्दी [चित्रफलक १३ क्र. ४९]
पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय के द्वारा सूचना-प्राप्त; Nagpur Times., 15 Aug. 1953

(XI) ईंट के देवालय

बड़े आकार के ईंट के बने हुए देवालय छत्तीसगढ़ के लिये पाण्डव शासकों के समय की एक विशेष देन है। सिरपुर में प्राप्त शिला-लेख के आधार पर वहाँ स्थित लक्ष्मणमंदिर को महाशिवगुप्त की माता वासटा ने लगभग सातवी शताब्दि के प्रारंभ में निर्मित करवाया था। ऐसे नमूने के कुछ मन्दिर निम्नलिखित स्थानों में हैं, जिनके निर्माण-काल भिन्न भिन्न है।

(१) **सिरपुर** : लक्ष्मण-मन्दिर, राम का मन्दिर, तथा अन्य देवालयों के खण्डहर
कनिंघम, ASR ,VI,169-80;VII,168;XVII,69-70,Plate XIII; XXI, 93.
कज़िन्स-भाण्डारकर, PR. ASI., WC., 1904. pp 20-23.
लांगहर्स्ट, AR., ASI, 1909 10, pp. 11-18, Pl. I-III, fig. I.

(२) **खरोद** : कनिंघम, ASR., VII 201-03;
कज़िन्स-भणडारकर, PR. ASI. WC., 1904, pp. 31-32.
लांगहर्स्ट, AR. ASI, 1909-10, pp. 11-18; Pl. IV

(३) **पुजारी पाली** : कनिंघम, ASR., VII, pp. 217-19.
कज़िन्स-भाण्डारकर, PR., ASI., WC., 1904, pp. 28.
लांगहर्स्ट, AR ASI. 1909-10, Pl. V

(४) **कुरवाई** : कनिंघम, ASR., VII, 196.

(५) **बोरमदेव** : कनिंघम, ASR., XXIII, 34; Plate XXI, XXIII.

(६) **धनपुर,** पेण्ड्रा से उत्तर में ५ मील पर
कनिंघम, ASR , VII, 237

(XII) शरभपुर के शासकों के लेख

महाराज नरेन्द्र

(१) **पिपरदुला-ताम्र-पत्र** राज्य-वर्ष ३

(सारंगगढ़ राज्य में ठाकुरडीया से २० मील पर पिपरदुला में प्राप्त)

शरभपुर से प्रचलित। महाराज शरभ पुत्र नरेन्द्र के द्वारा राहुदेव के प्रार्थना पर नन्दपुर भोग में शर्करापद्र नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

स्थल-निश्चय ठीक तरह से नहीं हुआ, किन्तु नन्दपुर, महानदी के तट पर स्थित नन्दगाँव ही प्रतीत होता है। शर्करापद्र, नन्दगाँव के समीप साकरा नामक ग्राम होने की संभाव्यता है।

दीनेशचंद्र सरकार, IHQ , XIX, 138-146.

महाजयराज

(२) **आरंग-ताम्र-पत्र,** राज्य-वर्ष ५

(आरंग में प्राप्त, नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

शरभपुर से प्रचलित। महाजयराज द्वारा पूर्वराष्ट्र में स्थित पम्त्रा नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख
पम्त्रा = पामगढ़, बिलासपुर से पूर्व में २० मील पर

भाण्डारकर सूची क्र. १८७८; हीरालाल सूची क्र. १७५; फ्लीट, CII , III, p 191.

महासुदेवराज

(३) **खरियार-ताम्र-पत्र,** राज्य-वर्ष २

(रायपुर से ११६ मील पर खरियार में प्राप्त; नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

शरभपुर से प्रचलित। महासुदेव-द्वारा क्षितिमण्डहार में स्थित, तथा शाम्बिलक के समीप नवण्णक नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख।

नवण्णक = नन्हा, खरियार से दक्षिण में ३ मील पर

भाण्डारकर सूची क्र. १८७९; **हीरालाल सूची** क्र. १७७; कोनौ, Epi. Ind., IX,170.

(४) **सारंगगढ़ ताम्रपत्र,** राज्य वर्ष ७

श्रीपुर से प्रचलित। महासुदेवराज द्वारा धकरी भोग में सुणिका नामक ग्राम दान करने का उल्लेख

पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, IHQ., XXI, p. 294-95.

(५) **आरंग-ताम्र-पत्र,** राज्य-वर्ष ८

शरभपुर से प्रचलित। महासुदेव-द्वारा तोसड्ड-भुक्ति में शिवलिङ्गिका नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

तोसड्ड = तुसडा, आरंग से आग्नेय कोण में ३० मील पर

शिवलिङ्गिका = ?

हीरालाल-सूची क्र. १७७ अ; पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, Epi. Ind., XXIII, 18.

(६) **रायपुर-ताम्र-पत्र** राज्य-वर्ष १०

(नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

शरभपुर से प्रचलित। महासुदेव-द्वारा पूर्वराष्ट्र में स्थित श्रीसाहिका नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

श्रीसाहिका = सिरसाही, बालोदा बझार के समीप

भाण्डारकर सूची क्र. १८८०; **हीरालाल सूची** क्र. १७६; फ्लीट, CII. III, 196.

स्थलनिर्णय : हीरालाल, Epi Ind. IX. 281.

(७) **सारंगगढ़ ताम्रपत्र** (नागपुर संग्रहालय में संरक्षित)

शरभपुर से प्रचलित। महासुदेव-द्वारा तुण्डरक भुक्ति में स्थित चुल्लण्डर्क नामक ग्राम दान के करने का उल्लेख

तुण्डरक = तुण्डा, सारंगगढ़ से पश्चिम में ३५ मील पर

चुल्लण्डर्क = चिल्दा, सिरपुर से पूर्व में १७ मील पर

भाण्डारकर-सूची क्र. १८८१; **हीरालाल-सूची** क्र. ३१०; हीरालाल, Epi Ind, IX, 281.

(८) **सिरपुर-ताम्र-पत्र**

(संप्रति उपलब्ध नहीं)

हीरालाल-सूची क्र. १७७ ब, में उल्लिखित, **अप्रकाशित**

महाप्रवरराज

(९) **ठाकुरडिया-ताम्र-पत्र** राज्य-वर्ष ३ (नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

श्रीपुर से प्रचलित। महाप्रवरराज के द्वारा तुण्डराष्ट्र में स्थित आषाढक नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

तुण्डराष्ट्र = तुण्डा, सेवरीनारायण से पूर्व में २५ मील पर

आषाढक = असौंद, महानदी के उत्तर तट पर सेवरीनारायण से पूर्व में ७ मील पर

मिराशी, Epi, Ind, XXII, 6.

महाभवगुप्तराज

(१०) **महाकोशल-ऐतिहासिक समिति-ताम्र-पत्र;** राज्य-वर्ष ११ (७-८ वीं शताब्दी)
(१९३२ ई० में प्राप्त, बिलासपुर में संरक्षित)

किसरकेल्ला से प्रचलित। शरभपुर शासक (?) महाभवगुप्तराज द्वारा चक्रधर-सुत भट्ट नामक ब्राह्मण को पृथुरा-भुक्तिगत लिङ्किर नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

किसरकेल्ला = केसरकला, पाटना राज्यांतर्गत बोलांगीर से पूर्व में ६ मील पर
पृथुरा = पिठोरा, केसरकला से पूर्व में २० मील पर, सम्बलपुर से वायव्य कोण में ४५ मील पर
लिङ्किर = सारंगगढ़ राज्य में

पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, Epi. Ind., XXII, 135.

(XIII) शरभपुर के राजाओं के सिक्के

प्रसन्नमात्र

चाँदी के सिक्के

साल्हेपाली, महानदी मान्ध संगम पर, बालपुर से १० मील पर [चित्रफलक ५ क्र. २७]
पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय-द्वारा संशोधित, JAHRS., IV, pp. 195-198; IHQ, IX, p. 595 Proceedings, 5th Ori Conf., p. 461.

हीरालाल-सूची : प्रतिमा-पत्र C.

(XIV) नल राजाओं के लेख

नल वंश के विवरण के लिये देखिये; मिराशी, **भा. इ. सं. मं. त्रै.** वर्ष, २० पृ. ९-२१.

अर्थपति

(१) **केसरिबेढ-ताम्र-पत्र** कोरापुट, ओड़ीसा में प्राप्त
अर्थपति भट्टारक-द्वारा प्रचलित

दिनेशचंद्र सरकार, Epi. Ind., XXVIII, 12

भवदत्तवर्मन्

(२) **ऋद्धिपुर-ताम्र-पत्र** राज्य-वर्ष ११ (भारत इति. सं. मंडळ, पूना, में संरक्षित)
नन्दिवर्धन से प्रचलित। भव[द]त्तवर्म्मन-द्वारा मात्राढ्यार्य और उनके आंठ पुत्रों को कदम्बगिरि नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

मालुकविरक
मधुकलतिका
बक्षामलक्ष
त्रिमन्दर विरक
} स्थल-निश्चय नहीं हुआ

भाण्डारकर-सूची क्र. १८७६; य. रा. गुप्ते, Epi. Ind., XIX, 102; **भा. इ. सं. मं. त्रैमासिक,** वर्ष ४, पृ. ११५.

(३) पोढ़ागढ़-शिला-लेख राज्य-वर्ष १२ (पांचवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध)

बस्तर राज्य की पूर्व सीमा से ६ मील पर

इस खण्डित लेख में ब्राह्मणो कों कई दान देने का उल्लेख तथा भवदत्तवर्मन् पुत्र स्कन्दवर्मन् के द्वारा नल वंश की पुनः स्थापना तथा पुष्करी को राजधानी बनवाने का उल्लेख किया गया है

सी. कृष्णम्मा चार्ल्ड, Epi. Ind., XXI, 153-158,

विलासतुंग

(४) राजीम-शिला-लेख (राजीव लोचन के मंदिर में संरक्षित) (प्रायः ७०० ईसवी)
विलासतुंग के द्वारा-विष्णु के मन्दिर (= राजीव लोचन) के निर्माण कराने का उल्लेख

मिराशी, Epi. Ind., XXVI, 54.

(XIV) नलवंशीय राजाओं के सोनें के सिक्के

एडेंगा, कोंडेगाँव तहसील, बस्तर में प्राप्त
अर्थपति, वराहराज तथा भवदत्त के द्वारा प्रचलित [चित्र-फलक ५ क्र. २४-२६]
सरकारी नाणक-सूची; मिराशी, JNSI., II, 29–35; Pl. I, C. 1-7.
भा. इ. सं. मण्डळ त्रैमासिक, वर्ष २०, पृ. ९-२३

५ राष्ट्रकूट-वंश

राष्ट्रकूट वंश के अध्ययन के लिये आल्तेकर, "Rashtrakutas and their times' Poona 1934. देखिये

(१) अचलपुर-शाखा (२) सम्राट्-शाखा (३) अन्य शाखाएँ

(१) अचलपुर-शाखा

नन्नराज

(१) पद्मनगर-ताम्र-पत्र, शक सं. ६१५ (६९३ ईसवी) [चित्र-फलक ७ क्र. ३२]
(अकोला से पूर्व की दिशा में १२ मील पर स्थित सांगळूद नामक ग्राम से प्राप्त)

पद्मनगर से नन्नराज युद्धासुर-द्वारा प्रचलित ।
वटपूरक, उम्बरिका तथा अन्य ग्रामों में भूमीदान का उल्लेख ।
य. खु. देशपांडे, **पराग,** वर्ष २ अंक ६ में प्रकाशित; इस ताम्र-पत्र के पुर्नमुद्रण की आवश्यकता प्रतीत होती है

(२) मुलताई-ताम्र-पत्र, शक सं. ६३१ (७०९ ईसवी)

(मुलताई-बैतूल में प्राप्त)

नन्नराज युद्धासुर-द्वारा प्रचलित । जलौकुहे नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

किणिहीवत्तार	(E)	= ?
पिप्परिका	(S)	= ?
जलुका	(W)	= ?
अर्जुनग्राम	(N)	= ?

स्थल निर्णय नहीं हो सकता ।

भाण्डारकर-सूची क्र० १०८३; हीरालाल-सूची क्र० १६२; फ्लीट, Ind, Ant., XVIII, 230

(३) तिवरखेड-ताम्र-पत्र (बनावट) शक **सं०** ५५३ (६३१-३२ ईसवी)

(मुलताई से १४ मील पर तिवरखेड में प्राप्त । रायबहादुर हीरालाल के घर में संरक्षित)

राष्ट्रकूट नन्नराज-द्वारा अचलपुर से प्रचलित । तिवेरे खेटक तथा धुईखेटक नामक ग्रामों के दान का उल्लेख । उसके दो अधिकारियों के द्वारा सारसवाहला तथा दर्भवाहला नदियों के तटों पर करंजमल्य नामक क्षेत्र के दान का उल्लेख।

तिवेरे खेटक	= तीवरखेड, मुल्ताई से १४ मील पर
धुई खेटक	= धुईखेड, तिवरखेड से ४० मील पर
अम्बेविअरक नदी	= अंभोरा नदी तीवरखेड के समीप
करञ्जमल्य	= कारंजा ?

काल का उल्लेख और लिपि इत्यादि विसंगतिओं के आधार पर यह ताम्र-पत्र बनावटी माना जाता है।

भाण्डारकर-सूची क्र. १०८२; **हीरालाल-सूची** क्र. १६१; हीरालाल, Epi.Ind., XI, 279

(२) सम्राट्-शाखा (मान्यखेट)

कृष्णराज प्रथम

(१) भांदक-ताम्र-पत्र शक ६९४ (७७२ ईसवी)

नान्दिपुरी द्वारि से प्रचलित। कृष्णराज के द्वारा उदुम्बरमंति में स्थित आदित्य-मंदिर पूजन में करनेवाले ब्राह्मण को "णग्ण" नामक ग्राम के देने का उल्लेख

णग्ण		= गणोरी
उदुम्बरमंति		= राणी उमरावती
नान्दिपुरिद्वारी		= नाँदूर ?
नागामा ग्राम	E	= नायगाँव
उम्ब (म्ब) र ग्राम	S	= उमरी
अन्तरई ग्राम	W	= अंतरगाँव
कपिद्ध ग्राम	N	= वाभुळगाँव

हीरालाल-सूची क्र. १५; सुक्थणकर, Epi. Ind., XIV, 121.

गोविन्द तृतीय

(२) **अंजनावती-ताम्र-पत्र;** शक सं० ७२२ (८०० ईस्वी) अंजनावती, चाँदूर से प्राप्त

गोविंद तृतीय के द्वारा अचलपुर विषय में स्थित अंजुणवती नामक ग्राम के १३ ब्राह्मणों को दान में देने का उल्लेख

अचलपुर = इलिचपुर
अंजुणवती = अंजनावती
रंगलच्छि E = ? मरिच नदि
गोहसोद्धा S = गहवा, अंजनावती से दक्षिण में ¾ मील पर
सले–माल–भाम W = सलोरा, अंजनावती से पश्चिम में २¾ मील पर
अमला, अंजनावती से नैऋत्य में ५ मील पर
कुरेग्राम N = कुन्हा, अंजनावती से वायव्य में ३ मील पर
वटपुर = वडुर, कुन्हा से पूर्व में १ मील पर
वेयगांव (प्रतिग्राही ब्राह्मण का निवास-स्थान) वाईगाँव, अंजनावती से दक्षिण में ३ मील पर
तलेवाटक („) तलेगाँव, अंजनावती से नैऋत्य कोण में १० मील पर

मिराशी, Epi. Ind., XXIII., 8

(३) **शिसवै-ताम्र-पत्र,** शक सं० ७२९ (८०७ ईसवी) शिसौं, मुर्तिझापुर, अकोला में प्राप्त

मयूरखण्डी से प्रचलित। गोविन्द तृतीय के द्वारा धाराशिव-निवासी ऋषियप्प ब्राह्मण को सिसवै तथा मोरगण नामक ग्रामों के दान का उल्लेख।

सिसवै = शिर्सौं, मुर्तिझापुर के समीप
माणक (विषय) = माना, मुर्तिझापुर से पूर्व में ८ मील
हरिपुर E = हिरपुर, शिर्सौं से पूर्व में २ मील पर
खैराडे S = खरबाडी, शिर्सौं से आग्नेय कोणा में ३ मील पर
अयकवाटक W = अटकली, शिर्सौं से पश्चिम में ३॥ मील पर
लखैपुरी N = लाखपुरी, शिर्सौं से उत्तर में ५ मील पर
मोरगण = ?

मिराशी, Epi. Ind., XXIII, 204

(४) **भारत-इतिहास-संशोधक मण्डल-ताम्र-पत्र,** शक सं० ७३२ (८१० ईसवी)

मयुरखण्डी से प्रचालित। गोविन्द तृतीय के द्वारा धाराशिव–निवासी ऋषियप्प ब्राह्मण को दशपुर नामक ग्राम के दान में देने का उल्लेख।

दशपुर = दसुर, इलिचपुर के दक्षिण में २ मील पर
सुकलि
तियडि
इन्दउरिका E = ?
देवभोग तियडि S = ?

पिट्ट...का NW

विन्ध्य N = विंध्य पर्वत

पिप्पिरिका = पिंपरी

खेड (विषय) = खेड

लाडावल्लिका W= घाट लाडकी

आम्बिलीकुण्ड = दसूर के समीप

गुप्ते, JIH., XI, 100; XIII, 98; खरे, **द. म. इ. सा.**, खण्ड ३, पृ. २७-३६;
स्थल-निर्णय : मिराशी, Epi. Ind., XXIII, 214

(५) **लोहारा-ताम्र-पत्र**, शक सं. ७३४ (८१२ ईसवी)

(शिर्सो में क्र. २ के साथ प्राप्त)

मयूरखण्डि से प्रचलित। गोविन्द तृतीय के द्वारा धाराशिव-निवासी ऋषियप्प ब्राह्मण को लोहारा नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

लोहारा = लोहारा, कारंजा, मुर्तिझापुर से पश्चिम में ८ मील पर

लघुलोहारा E = लोहारा

मुदुप S = माण्डव, लोहारा से आग्नेय में ३ मील पर

मारुरिका W = ?

पिप्परीका W = पिंपळगांव, लोहारा से ४ मील पर

सामरिपल्ल N = ?

खेड N = ?

मिराशी, Epi. Ind., XXIII. 212.

कृष्णराज तृतीय

(६) **देवळी-ताम्र-पत्र**, शक सं. ८५२. (८३० ईसवी) देवळी में (वर्धा से ११ मील) प्राप्त कृष्णराज तृतीय के द्वारा, नागपुर–नन्दिवर्धन में तालापुरुंषक नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

नागपुर = नागपुर

नन्दिवर्धन = नागरधन, नागपुर से २० मील पर

तालापुरुंषक = ?

कन्हना नदी S = कन्हान नदी

मोहमग्राम W = मोहोगाँव, नागपुर से उत्तर में २० मील पर

वर्द्दिरा = मोहोगाँव से ईशान्य कोणा में २ मील पर

मादाटाढिंदर = ?

हीरालाल सूची क्र. ९; भाण्डारकर, Epi. Ind., V, 188
स्थलनिर्णयः मिराशी, N. U. J. (1935),

(७) **जुरा प्रशस्ति** (प्रायः ९६३-६४ ईसवी)

(मैहर राज्य में जुरा नामक ग्राम में बानर्जी-द्वारा संशोधित)

मध्य प्रदेश की उत्तरी सीमा के जुरा स्थान में प्राप्त यह लेख, कृष्णराज की केवल प्रशस्ति, कन्नड भाषा में है।

लक्ष्मीनारायण राव, Epi, Ind., XIX, 287.

(८) **निलकंठी-शिला-लेख** १; खण्डित (छिंदवाड़ा के दक्षिण में निलकंठी ग्राम में)

यह शिला-लेख ग्राम में स्थित देवालय के खंभेपर खुदा है। इसमें राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय का नाम पाया जाता है

हीरालाल-सूची क्र. १६९; **छिंदवाड़ा गॅझेटियर**, पृ. २२२

(९) **निलकंठी शिलालेख** २; खण्डित (नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

यह खाण्डित लेख, जिसमें राष्ट्रकूट कृष्ण का नाम आया है, ठीक तरह से नहीं पढ़ा जा सकता।

हीरालाल सूची क्र. १६९; **छिंदवाड़ा-गॅझेटियर**, पृ. २२३

(३) अन्य शिलालेख

राष्ट्रकूट गोल्हण

(१) **बाहुरीबंद जैन-मूर्ति लेख** (१२ वी शताब्दी)

कलचुरि गयाकर्ण के सामन्त राष्ट्रकूट गोल्हण के द्वारा शांतिनाथ जिनालय के निर्माण का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. १५८०; **हीरालाल-सूची** क्र. ४७ कनिंघम, A S R, IX,40; कज़िन्स, PR. ASI, WC, 1904, 34, 54.

(२) **राघोली-ताम्र-पत्र** **जयवर्धन** (आठवीं शताब्दि)

(बालाघाट से पूर्व में ३० मीलपर राघोली में प्राप्त; नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

श्रीवर्धनपुर से प्रचलित। शैल-वंशीय शासक जयवर्धन द्वितीय के द्वारा कटेरक विषय में खड्डिका नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

श्रीवर्धनपुर = ?
खड्डिका = खाडी, राघोली से पूर्व में ३ मील पर
कटेरक = कटेरा, राघोली से ६० मील पर

भाण्डारकर सूची क्र. २७; हीरालाल, Epi. Ind., IX, 41.

प्रतापशील

(३) **खामखेड-ताम्र-पत्र** (मेहकर के समीप खामखेड से प्राप्त) (आठवीं शताब्दि)

प्रतापशील के समय में दानरुद्रभट नामक व्यक्ति के द्वारा पर्णिखेट के समीप स्थित नन्दपुर नामक ग्राम के दान का उल्लेख

नन्दपुर = खामखेड ?
व्याघ्रविरक E = वाघेर, खामखेड से ईशान्य कोण में १ मील पर
पर्णिखेट E = पांगारखेड, खामखेड से वायव्य कोण में १½ मील पर
भ्रमशक S = ?
चिह्नरक N = ?

मिराशी, Epi. Ind., XXII, p. 93-98

(४) ससानियन सिक्के

(Indo Sassanian Coins)

राष्ट्रकूटों के लेखों से कई प्रकार के सिक्कों का पता चलता है। किन्तु वह अभी तक उपलब्ध नहीं हो सके। इस समय में प्रचलित केवल एक मात्र सिक्कों का प्रकार ज्ञात है, जिसका आकार, रूप इत्यादि ससानियन सिक्कों से मिलता-जुलता है, और जिनको संभ्रमवशात् गधिया के पैसे कहा जाता है। वे ताँबे तथा चाँदी के बनाये गये हैं और उनकी एक ओर भ्रष्ट शीर और दूसरी ओर यज्ञ-कुण्ड का दर्शन होता है।

मध्य प्रदेश में पाये गये ससानियन सिक्कों के प्राप्ति-स्थान

(१) **बुलढाणा,** चाँदी के ६ सिक्के, १८९१ ई० में प्राप्त
(२) **नागपुर,** चाँदी के ६ सिक्के, १८९५ ई० में प्राप्त
(३) **जबलपुर,** चाँदी के ३२ सिक्के, १९०५ ई० में प्राप्त
(४) **बालाघाट,** ताँबे के १२ सिक्के
} **नागपुर-संग्रहालय १९०७ ई० की सूची**

(५) **कनसारी,** गढ़ी चिरोली, चाँदा; १९२० ई० में प्राप्त **सरकारी नाणक-सूची**

(६) **खेरुआ,** दमोह जिला, १९३१ ई में प्राप्त ४२ सिक्कों का संचय; **सरकारी नाणक सूची**

(७) **मुलताई,** बैतूल ज़िले में १९३४-३७ ई० में प्राप्त; **सरकारी नाणक-सूची**

(८) **लोहारा,** मुर्तिज़ापुर, अकोला १९५०-५२ ई० में प्राप्त ४ सिक्कों का संचय; **सरकारी नाणक सूची**

(५) शंख-लिपि में उत्कीर्ण लेख

इसवी सातवीं शताब्दि में उत्तर भारत के कई स्थानों में शंख-लिपि का प्रचलन बहुत अधिक रहा। इस लिपी के लेख अभीतक ठीक तरह से पढ़े नहीं जा सकते। बेलपत्तियाँ, वृत्ताकार जुडाव एवं सुंदरता के विचार सें यह उल्लेखनीय हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार वह गुप्त-काल के लेखों में सम्मिलित किये जा सकते है।

मध्य प्रदेश में निम्न-लिखित स्थानों में यह विद्यमान है।

(१) **भांदक,** हीरालाल-सूची क्र. २१

(२) **कारीतलाई,** हीरालाल-सूची क्र. ७४.

(३) **रामटेक,** टर्नर-द्वारा संशोधित, JBORS., Dec. 1933.

(४) **तिगवाँ,** हीरालाल-सूची क्र० ३१

(५) **एरण,** Annual Report of Indian Epigraphy, 1946-47, Nos. 166, 170-172.

(६) **शिलाहर-गुफाएँ,** Epi. Ind., XXII, 30.

(७) **पचमढ़ी,** कर्नल गॉर्डन के द्वारा सूचना-प्राप्त

६ कलचुरी वंश

(१) त्रिपुरी-शाखा (२) रतनपुर-शाखा

कल्चुरि वंश के विवरण के लिये निम्न-लिखित सामग्री बहुत उपकारी है

हेमचंद्र रे, Dynastic History of Northern India, Vol. II, pp. 738-815.
राखलदास बानर्जी, Haihayas of Tripuri and their Monuments, Memoirs oj the Archæological Survey of India, 23, Delhi 1931.
वा. वि. मिराशी, Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. IV. Inscriptions dated according to the Kalachuri-Chedi era
हीरालाल, Kalachuris of Tripuri, ABORI., 1927-28, pp. 280-295.
वा. वि. मिराशी, Coins of the Kalachuri Dynasty, Journal of the Numismatic Society of India, Vol. III, pp. 21-39

(१) त्रिपुरी-शाखा

लक्ष्मणराज

(१) **कारीतलाई-शिला लेख** कल्चुरी संवत् ५९३ (८४२ ईसवी)
(कारीतलाई, कटनी से उत्तर में २९ मील पर)

देवी के मढ़िया में। यह लेख खण्डित है, किन्तु उसके एक बाजू में लक्ष्मणराज का नाम और समय का उल्लेख आया है

हीरालाल-सूची क्र. ७५; मिराशी, Epi. Ind., XXIII, 256.

(२) **कारीतलाई-शिला-लेख** (नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

लक्ष्मणराज के द्वारा खारीवाप-निवासी ब्राह्मण को मन्दिर के लिये दीर्घ-शाखिक नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

दीर्घ-शाखिक	=	दिवी, कारीतलाई से आग्नेय कोण के में ६ मील पर
चक्रहृदि	=	चकदहि, कारीतलाई से दक्षिण में ७ मील पर
खारीवाप	=	?
अंतरपाट	=	?
वटगर्तिका	=	?
धवलाहार में चाल्लिपाटक	=	?

भाण्डारकर सूची क्र. १५७५; **हीरालाल-सूची** क्र. ४०; कीलहार्न, epi. Ind., II, 175

शंकरगण

(३) **छोटी देवरी-शिला-लेख**

(छोटी देवरी, जुकेही से पश्चिम में १६ मील पर)

शंकरगण के समय में कई स्थानों में धान्यागार के निर्माण का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. १५७६; **हीरालाल-सूची** क्र. ४६; मिराशी, Epi. Ind., XXVII, 170

(४) **मुरीया-शिला-लेख** (खण्डित)

इसमें शंकरगण का नाम अंकित है, त्रुटित होने से पुरा लेख नहीं पढ़ा जा सकता

डा० महेशचंद्र चौबे के द्वारा सूचना प्राप्त

मिराशी, Proceedings, All India Ori. Conf. Ahmedabad, 1953; **अप्रकाशित**

(५) **सागर-शिला-लेख**

(अन्य स्थलों से प्राप्त सागर-आर्टीलरी मेस में संरक्षित)

शंकरगण के समय में कृष्णादेवी के द्वारा धार्मिक स्थान (शिवमंदिर) के बनवाने का उल्लेख

हीरालाल-सूची क्र. ८४; मिराशी, Epi Ind., XXVII, p. 163.

युवराजदेव द्वितीय

(६) **बिल्हरी-शिलालेख**

(बिल्हरी में कटनी से ९ मील पर उपलब्ध; नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

(i) केयूरवर्ष की पत्नी नोहला देवी के द्वारा एक शिवालय की स्थापना और उसके लिये धंगटपाटक, पोण्डी, नागबल, खैलपाटक आदि ग्रामों के दान देने का उल्लेख।

(ii) नोहला के पुत्र युवराजदेव द्वितीय के द्वारा मठों के दान का उल्लेख।

पोण्डी = बिल्हरी से वायव्य कोण में ४ मील पर

खैल पाटक = कैलवाड़ा बिल्हरी से पूर्व में ६ मील पर

निपाणीय = निपाणीया, बिल्हरी से नैऋत्य कोण में १० मील पर

सौभाग्यपुर = सोहागपुर

धंगट पाटक, नागबल, वीड़ा, सज्जहली, गोष्टपाली, लवणनगर, दुर्लभपुर, विमानपुर, अम्बापाटक, आदि अन्य उल्लिखित ग्रामों के आधुनिक स्थानों का निश्चय नहीं हो सका।

भाण्डारकर-सूची क्र. १५७७; **हीरालाल-सूची** क्र. ३३; कीलहॉर्न, Epi.Ind., I, 254

गाँङ्गेय देव

(७) **पियावाँ-शिला-लेख**, कलचुरी-सम्वत् ७८९ (१०३८ ईसवी)

(रीवाँ राज्य में रीवाँ से उत्तर में २५ मील पर)

गांगेयदेव के समय में अस्संग द्वारा लेख कोरने का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. १२२२; कनिंघम, A. S. R., XXI, 113.

कर्णदेव

(८) **बनारस-ताम्र-पत्र**, कल. सं. ७९३ (१०४२ ईसवी)

(बनारस में प्राप्त, अभी उपलब्ध नहीं)

प्रयाग से अपने पिता गांगेयदेव के श्राद्ध-दिवस पर कर्ण के ईस अंकित किया हुअ, दान-पत्र में ब्राह्मण विश्वरूप को सुसी नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है

सुसी = प्रायः झुसी, इलाहाबाद के निकट गंगा के द्वारा उत्तर तीर पर

भाण्डारकर-सूची क्र. १२२३; **हीरालाल-सूची** क्र. ४१; कीलहार्न, Epi Ind., II,305

(९) **गोहरवा-ताम्र-पत्र,** राज्य-वर्ष ७ (१०४७ ईसवी)

(मंझनपुर तहसील से गोहरवा में, इलाहाबाद से ८ मील पर प्राप्त)

कर्णतीर्थ से। शासक कर्ण के द्वारा, कोशम्ब पट्टला में चन्दपहा नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

कोशम्ब = कौशाम्बी, प्रयाग से ३४ मील पर

चन्दपहा = चनपाहा, कौशाम्बी से वायव्य कोण में २ मील पर

भाण्डारकर-सूची क्र. १५७८.; हुल्श, Epi. Ind., XI, 142

स्थल निश्चय : मिराशी, N.U.J, II, (1936), p. 48.

(१०) **रीवाँ-शिला-लेख,** कर्ण के समय का; कल. सं. ८०० (१०४९ ईसवी)

(डॉ० चक्रवर्ति-द्वारा १९३६ ई० में संशोधित)

कर्ण के समय में उनके प्रधान मंत्री के द्वारा शिवालय के निर्माण का उल्लेख। कायस्थ जाति के इतिहास पर प्रकाश डालनेवाला लेख

मिराशी, Epi. Ind., XXIV, 101

(११) **सारनाथ-मूर्त्ति-लेख,** कर्ण के समय का; कल. सं. ८१० (१०५८ ईसवी)

(बनारस से १२ मीलपर सारनाथ में प्राप्त)

कर्ण के समय में महायान बौद्धों का सद्धर्म-चक्र-प्रवर्त्तन नामक विहार के निर्माण का उल्लेख; मामका-द्वारा अष्ट साहस्रिका ग्रंथ के लेखन का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची, क्र. १२२५; डा. फोगेल, A.S.I.,A.R, 1906-07, p. 100.

(१२) **रीवाँ-शिला-लेख,** कर्ण के समय का; कल. सं. ८१२; राज्य-वर्ष ९ (१०६१ ईसवी)

(रीवाँ में संरक्षित)

कर्ण के समय में वपुल नामक दो लडाईओं में सहाय्य करने वाले सामन्त के द्वारा वपुलेश्वर नामक शिवलिंग की स्थापना तथा उनकी पत्नी प्रवरा (उपनाम नयनावली) के द्वारा माहेश्वरी की मूर्ति की स्थापना करने का उल्लेख।

भाण्डारकर-सूची, क्र. १२२६; PR,ASI,WC, 1920 21, p. 52.

बानर्जी, MASI., 23, pp. 130-33.

(१३) **पाईकोरे-मूर्त्ति-लेख**

(विरभूम में, मुरराई रेल्वे स्टेशन से ३ मील पर)

कर्ण के समय में मूर्ति-शिल्प के निर्माण करने का उल्लेख

भाण्डारकर सूची क्र. १५७९; दीक्षित, ASI, AR., 1921-22, p. 80, 115.

यशः कर्ण

(१४) **खैरहा-ताम्र-पत्र** कल. सं. ८२३ (१०७२ ईसवी)

(रीवाँ राज्य के पन्ना राज्य की सीमा पर खैरहा में प्राप्त)

यशः कर्ण के द्वारा देवग्राम पत्तलान्तर्गत में से देऊला पंचेल ग्राम स्थान दान करने का उल्लेख

देवग्राम = देवगव्हाण

देऊला पंचेल = ?

भाण्डारकर-सूची क्र. १२२७; हीरालाल, Epi. Ind., XII, 210.

(१५) **जबलपुर-ताम्र-पत्र** कल. सं. ८२९ (१०७८ ईसवी)

(नागपुर-संग्रहालय में एक पत्र और दूसरे का प्रतिलेख उपलब्ध प्रायः सिहोरा में प्राप्त)

यशः कर्ण के द्वारा जौलीपट्टन में पाटींकर नामक ग्राम के दान का उल्लेख

जौलीपट्टन = जबलपुर ?

पाटींकर = ?

भाण्डारकर-सूची क्र० १२२८; **हीरालाल-सूची** क्र. ३४; कीलहॉर्न, Epi. Ind, II,3.

(१६) **त्रिपुरी-जैन-मूर्त्तिलेख,** कल. सं. ९००. (११४९ ईसवी) (सागर-विश्वविद्यालय में संरक्षित) तीर्थंकर की प्रतिमा के मथुरा-निवासी, जसदेव और जसधवल के द्वारा निर्माण करने का उल्लेख। इस में शासक का नाम नहीं दिया है।

डॉ० दीक्षित के द्वारा संशोधित, **अप्रकाशित**

गयाकर्ण

(१७) **तेवर (त्रिपुरी) शिला-लेख,** कल० सं० ९०२; (११५१ ईसवी)

(तेवर में प्राप्त; नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

शासक गयाकर्ण और युवराज नरसिंह देव के समय में भाव ब्राह्मण के द्वारा शिव-मन्दिर के निर्माण करने का उल्लेख।

भाण्डारकर-सूची क्र. १२३५. **हीरालाल-सूची** क्र. ३८; कीलहॉर्न, Ind Ant., XVIII, 209.

(१८) **बाहुरीबंद-जैन-मूर्त्ति-लेख** (बारवी शताब्दि)

(जबलपुर से ४३ मील पर बाहुरीबंद में प्राप्त)

गयाकर्ण के सामंत राष्ट्रकूट गोल्हणदेव के समय में शान्तिनाथ जिनालय में स्तंभ के निर्माण का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. १२८०; **हीरालाल-सूची,** क्र. ४७; भाण्डारकर, PR ASI., W. C. 1903-45, 54.

नरसिंह

(१९) **भेड़ाघाट-शिला-लेख;** कल. सं. ९०७ (११५५-५६ ईसवी) (सांप्रत अमेरिका में)

गयाकर्ण की पत्नी और राज-माता अल्हणदेवी तथा नरसिंहदेव के समय का शिला-लेख।

अल्हणदेवी के द्वारा जाउलीपत्तल में नामडण्डी नामक ग्राम, तथा नर्मदा के दाक्षिण में स्थित पहाड़ में मकरपाटक नामक; ग्राम के दान मठ की स्थापना; वैद्यनाथ-शिवालय का निर्माण का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. १२३७; **हीरालाल-सूची** क्र. ३५; कीलहार्न, Epi. Ind., II, 10.

(२०) **लाल पहाड़-चट्टान-लेख**; कल. सं. ९०९ (११५८ ईसवी)

(नागौद राज्य में भरहुत के निकट)

नरसिंहदेव के समय का शिला-लेख

राउत बल्लाल्देव द्वारा ' वहा ' नामक पानी की नहर के निर्माण का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. १२३८; कीलहॉर्न, Ind. Ant., XVIII, 212.

(२१) **अल्हघाट-शिला-लेख**; विक्रम सं. १२१६ (११५९ ईसवी)

(रीवाँ राज्य में टोंस नदी की घाटी में अल्हघाट से प्राप्त)

कल्चुरी शासक नरसिंह और उसके सामन्त राणक छीहुल के द्वारा प्रचलित। **षट्षडिका** नामक घाट के निर्माण का उल्लेख

भाण्डारकर सूची क्र. ३०८; कीलहॉर्न, Ind. Ant, XVIII, 214; कार्निंघम, ASR., IX, Pl. II.

जयसिंह

(२२) **जबलपुर-कोतवाली ताम्र-पत्र**; कल. सं. ९१८ (११६७ ईसवी)

(जबलपुर के पास प्राप्त)

जयसिंह के द्वारा अखरौद के समीप आगर नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. २११३; **हीरालाल सूची** क्र. ३७; हीरालाल, Epi Ind., XXI, 91

(२३) **रीवाँ-ताम्र-पत्र**; कल. सं. ९२६; (११७५ ईसवी) (रीवाँ में प्राप्त)

जयसिंह के सामन्त कीर्तिवर्मन् के द्वारा, प्रचलित। अपने स्वर्गीय पिता के स्मरण में खण्डगहा पत्तला में स्थित अहड़पाड़ नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख।

कक्करेडी कालिंजर के समीप है।

भाण्डारकर-सूची क्र. १२४४; कीलहार्न, Ind. Ant., XVII 224. कार्निंघम, ASR, XXI 145

(२४) **जबलपुर शिला-लेख**; कल. सं. ९२६. (११७५ ईसवी) (सांप्रत नागपुर-संग्रहालय)

जयसिंह के समय में विमलशिव द्वारा निर्मित शिवालय के लिये नवपत्तला विषयान्तर्गत टेकभर नामक ग्राम; तथा समुद्रपाट में कंडरवाडी तथा बडोह इत्यादि ग्रामों के दान का उल्लेख

नवपत्तला = ?

टेकभर = टिखारी, जबलपुर से नैऋत्य कोणा में ६ मील पर

समुद्रपाट = समंद पिपरीया, जबलपुर से दक्षिण में ४ मील पर

बडोह = बडोह

कंडरवाडी = कुंडम ?

भाण्डारकर-सूची क्र. १२४५; **हीरालाल-सूची** क्र. ६१; मिराशी, Epi Ind., XXV, 131

(२५) **भेड़ाघाट–शिला-लेख**; कल. सं. ९२८ (११७६ ईसवी)

(भेड़ाघाट में कार्निंघम–द्वारा प्राप्त)

भाण्डारकर सूची क्र. १२४६; कार्निंघम, ASR., XI, 111.

कीलहार्न, Ind Ant., XVII 217.

(२६) **तेवर-शिला-लेख**; कल. सं. ९२८ (११७७ ईसवी) (संप्रति अमेरिका में संरक्षित)
जयसिंह के समय में, मालव देशांतर्गत सीखा ग्राम के निवासी केशव के द्वारा शिवालय के निर्माण का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. १२४७; **हीरालाल-सूची** क्र. ४३; कीलहार्न, Epi. Ind., II, 18.

(२७) **करणवेल शिलालेख**; खण्डित (प्रायः ११६०–११८० ईसवी)
जयसिंह देव के समय का; जिस में केवल प्रशस्ति आयी है।
भाण्डारकर-सूची क्र. १५८१; कीलहार्न, Ind. Ant., XVIII, 216.

विजयसिंह देव

(२८) **कुंभी-ताम्र-पत्र**; कल. सं. ९३२ (११८० ईसवी)
(जबलपुर से ईशान्य कोण में ३५ मील पर कुंभी ग्राम से प्राप्त)
विजयसिंह की माता घोसल देवी के द्वारा संबला पट्टला में चोरलायी नामक ग्राम के दान का उल्लेख
स्थल-निश्चय नही हो सका। ताम्र-पत्र अभी अप्राप्य है।
भाण्डारकर-सूची क्र.१२४८; **हीरालाल-सूची** क्र. ४२; फिटज़ेराल्ड, JASB., XXI 116.

(२९) **तेवर-शिला-लेख**; कल. सं. ९४३ (११९२ ईसवी) (तेवर में १९५३ में प्राप्त)
विजयसिंह के समय का यह लेख शिवालय के निर्माण को सूचित करता है
डॉ० दीक्षित के द्वारा संशोधित, **अप्रकाशित**

(३०) **रीवाँ-शिला-लेख**; कल. सं. ९४४ (११९३ ईसवी)
विजयसिंह के सामन्त मलयसिंह के द्वारा बौद्ध-स्थान पर तलाव के खोदने का उल्लेख
भाण्डारकर सूची क्र. १२५१; बानर्जी, Epi. Ind., XIX, 296; MASI, 23,133-41

(३१) **रीवाँ-ताम्र-पत्र**; विक्रम सम्वत् १२५३ (११९५ ईसवी)
कर्करेडी से प्रचलित। विजयसिंह के सामन्त सल्खणवर्म के द्वारा पाँच ब्राह्मणों को कुयिसवपालिस पत्तला में चिल्हौडा नामक ग्राम के दान देने का उल्लेख। स्थल-निश्चय नहीं हुआ।
भाण्डारकर सूची क्र. ४३२; कीलहार्न, Ind. Ant., XVII, 218.

(३२) **गोपालपुर-शिला-लेख**
विजयसिंह के समय में काश्यप वंशीय मल्हण, जोगला, हरिगण, महादेवी इत्यादिओं के द्वारा विष्णु-मंदिर के निर्माण करने का उल्लेख
भाण्डारकर-सूची क्र. १५८२; कीलहार्न, Ind. Ant., XVIII, 218.

(३३) **भेड़ाघाट-शिला-लेख** (गौरीशंकर देवालय में संरक्षित)
महाराजी गोसलदेवी विजयसिंह तथा अजयसिंह का उल्लेख
भाण्डारकर सूची क्र. १५८३; **हीरालाल सूची** क्र. ४४; बानर्जी, Haihayas of Tripuri. and their monuments, MASI., 23, p. 142.

(२) रतनपुर शाखा

पृथ्वीदेव प्रथम

(१) **महाकोशल पुरातत्त्व समिती ताम्रपत्र;** कल. सं. ८२१ (१०६९ ईसवी)

रत्नपुर से प्रचलित। सकल-कोशलाधिपति महेश्वर द्वारा कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण को असंथा नामक ग्राम दान करने का उल्लेख

Annual Report of Indian Epigraphy, 1945-46, Appendix A, No. 54.

[कल्चुरी शासकों में से यह सबसे प्राचीन ताम्रपत्र हाल में ही उपलब्ध हुआ है। महेश्वर का अन्य शासकों से सम्बंध इसमें सुस्पष्ट नहीं है]

(२) **आमोदा-ताम्र-पत्र;** कल. सं. ८३१ (१०७९ ईसवी)

(जांजगीर से पश्चिम में १० मील पर आमोदा ग्राम सें प्राप्त)

पृथ्वीदेव के द्वारा केशव नामक ब्राह्मण को ययपरमण्डल में बसहा नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

बसहा = बसहा, बिलासपुर से ३३ मील पर
ययपर मण्डल = जैजैपुर, आमोदा से १० मील पर
तुम्मान = तुमान, बिलासपुर के उत्तर सें ५१ मील पर
कोमोमंडल = कोमो, पेन्ड्रा जमीनदारी में, बिलासपुर की उत्तरी सीमा पर ६० मील पर

भाण्डारकर-सूची क्र. २०३१; **हीरालाल-सूची** क्र. १९९; हीरालाल, Epi. Ind., XIX, 78.

जाजल्लदेव प्रथम

(३) **रतनपुर-शिला-लेख;** खण्डित, कल. सं. ८६६ (१११४ ईसवी)

(नागपूर-संग्रहालय में संरक्षित)

मठ, बगीचा तलाव इत्यादि के जाजल्लपुर में निर्माण करने का उल्लेख

खिमिडी = खिमिडी, गंजम ज़िले में
वैरागर = वैरागढ़, चांदा से ४० मील पर
लांजीका = लांजी, बालाघाट ज़िले में
बाणारा = ?
तलहारी = ?
जाजल्लपुर = जांजगीर, पाली रतनपुर से पूर्व में १२ मील पर

दण्डकपुर, नन्दावली, कुक्कुट, सिहली, अर्जुनकोण्णशरण, इत्यादि अन्य उल्लिखित स्थान अद्यपि अशोधित

भाण्डारकर-सूची क्र. १२३०; **हीरालाल-सूची** क्र. १९६; कीलहार्न, Epi. Ind., I, 34

रत्नदेव द्वितीय

(४) **सिवरी-नारायण-ताम्र-पत्र,** कल. सं. ८७८ (११२७ ईसवी)

रत्नदेव के द्वारा अनर्घवल्ली विषय में तिणेरी नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

अनर्घवल्ली = ?
तिणेरी = ?
तुम्मान = तुम्मान

हीरालाल-सूची क्र. २१२, हीरालाल, IHQ., III, 31.

(५) **सरखों -ताम्र पत्र**; कल. सं. ८८० (११२८ ईसवी)

जांजगीर तहसील के सरखों ग्राम से प्राप्त (महाकोशल पुरातत्त्व सो० में संरक्षित)

रत्नदेव द्वारा अनर्घवल्ली मण्डल में चिंचातलाई नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

अनर्घवल्ली = ?

चिंचातलाई = चिंचोला, सरखों के ईशान्य में ८ मील

हीरालाल-सूची क्र. २१३; मिराशी, Epi. Ind., XXII, 259.

(६) **पारगांव-ताम्र-पत्र**; कल. सं. ८८५ (११३५ ईसवी)

(बिलासपुर के निकट पारगाँव ग्राम से प्राप्त)

रत्नदेव के द्वारा वोडल मण्डल में गोरी नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

महामहोपाध्याय मिराशी से सूचना प्राप्त; **अप्रकाशित**

(७) **कोटगढ़-शिला-लेख**

(संप्रति अकलतारा ग्राम में संरक्षित)

रत्नदेव के सामंत वल्लभराज के द्वारा विकर्णपुर में रेवन्त के मन्दिर तथा वाह्याली (अश्वशाला) और वल्लभ-सागर-सरस् नामक तालाब के निर्माण का उल्लेख

विकर्णपुर = कोटगढ़

भाण्डारकर सूची क्र. १५८४; **हीरालाल-सूची** क्र. २०२

भाण्डारकर, PR, ASI, WC, 1503-04 p 51, No. 2024.

(८) **अकलतारा-शिला-लेख** (संप्रति रायपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

इस खण्डित लेख में रत्नदेव द्वितीय तक कलचुरी-शासक तथा सामन्त वल्लभराज तथा जयसिंह-देव आदि के उल्लेख मिलते हैं।

भाण्डारकर-सूची क्र. १५८५, **हीरालाल-सूची** क्र. १०४; कीलहार्न, Ind. Ant, XX, 84

भाण्डारकर PR. ASI, WC, 1903-05, p. 52 No. 8

पृथ्वीदेव द्वितीय

(९) **डैकोणी ताम्र-पत्र**; कल. सं. ८९० (११३९ ईसवी) (डैकोणी में प्राप्त)

पृथ्वीदेव के द्वारा विष्णु त्रिवेदी नामक ब्राह्मण को मध्यदेशान्तर्गत बुड्डुकुनी नामक ग्राम के दान में देने का उल्लेख मध्यदेश = संप्रति बिलासपुर ज़िला

बुड्डुकुनी = प्रायः डैकोणी

वेंकटरामय्या, Epi. Ind., XXVIII, 146

(१०) **कुगडा-शिला-लेख**; कल. सं. ८९३ (११४२ ईसवी)

(बिलासपुर ज़िले में वछौढ़गढ़ के निकट, कुगडा ग्राम में प्राप्त; बालोदा से पश्चिम में ५मील पर) प्रायः पृथ्वीदेव का सामन्त वल्लभराज के समय का खण्डित लेख।

भाण्डारकर-सूची क्र. १२३१; **हीरालाल सूची** क्र. २१९; कीलहॉर्न, Ind Ant, XX, 84.

(११) **बिलैगढ़-ताम्र-पत्र,** कल० संवत् ८९६ (११४५ ईसवी)

(सिवरी-नारायण से आग्नेय कोण में १० मील पर नागपुर संग्रहालय में संरक्षित)

पृथ्वीदेव के द्वारा देल्हक नामक ब्राह्मण को एवडीमण्डल में पाण्डरतलाई नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

पाण्डरतलाई = पाण्डरतलाई बिलासपुर से पश्चिम में ५२ मील पर

नागपुर-संग्रहालय तथा प्रो० मिराशी-द्वारा सूचना-प्राप्त; **अप्रकाशित**

(१२) **राजीम-शिला-लेख;** कल. सं.८९६ (११४५ ईसवी) (राजीव लोचन के मन्दिर में संरक्षित)

पृथ्वीदेव के सामन्त जगपालदेव के द्वारा राम-मन्दिर के निर्माण तथा इस मंदिर के लिये सालमलीय नामक ग्राम के दान तथा कल्चुरियों के राज्य-विस्तार के संबंध में कई ग्रामों का उल्लेख है

बडहर = बडहर　　　　काकरय = कांकेर

भट्टविल = बघेलखंड में

डँडोर = सिरगुजा राज्य में

राठ =
तेरम =
तामनाल = तमनार } रायगढ़ से उत्तर में

तल्हारी =

सरहरागढ़ = सोरार

मचका सिहावा = मेचका सिहावा

भ्रमरवद्र = भ्रमरकूट बस्तर राज्य

कान्तार = ?

काण्डा डोंगर = रायपूर से ७७ मील पर

कुसुममेला = ?

भाण्डारकर-सूची क्र. ११३२; **हीरालाल-सूची** क्र. १८७; कील्हॉर्न, Ind. Ant , XVI, 139

(१३) **पारगाँव ताम्र-पत्र** कल. सं. ८९७ (११४४ ईसवी)

(बिलासपुर के ज़िले में पारगाँव से प्राप्त)

पृथ्वीदेव के द्वारा वोडद मण्डल में गौरी नामक ग्राम के दान का उल्लेख

वोडद = बदरा, पारगाँव से आग्नेय कोण में २२ मील पर

गौरी = गोर, पारगाँव से १८ मील पर

प्रो० मिराशी-द्वारा सूचना-प्राप्त; **अप्रकाशित**

(१४) **सिवरीनारायण मूर्त्ति-लेख;** कल. सं. ८९८ (११४५ ईसवी)

(नारायण के मन्दिर में संरक्षित)

बालसिंह और अमणदेवी के पुत्र वीर संग्रामसिंह की मूर्त्ति के निर्माण का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. १२३३; **हीरालाल-सूची** क्र. २१८, भाण्डारकर, PRAS WC 1903-04, p. 53.

(१५) आमोदा-ताम्र-पत्र (१); कल० सं० ९०० (११४९ ईसवी)

(नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

पृथ्वीदेव के द्वारा टकारी–निवासी पीयम और लखनु नामक ब्राह्मणों को मध्यमंडल में आवला नामक ग्राम के दान में देने का उल्लेख

मध्यमण्डल = बिलासपुर ज़िले का भाग

आवला = औरा-भाटा, लाफ़ा ज़मीनदारी में

जडेर = ? बहुशः जोण्डरा, जांजगीर तहसील के सीमा पर

भाण्डारकर-सूची क्र. १२३४, **हीरालाल-सूची** क्र. २००; हीरालाल, I H.Q. I, 409.

(१६) कोणी-शिला-लेख; कल० सं० ९०० (११४९ ईसवी)

(बिलासपुर से आग्नेय कोण में १२ मील पर कोणी नामक ग्राम से प्राप्त)

पृथ्वीदेव के सर्वाधिकारी पुरुषोत्तम के द्वारा पंचायतन शिव-मन्दिर के निर्माण तथा सलोणी नामक ग्राम के दान का उल्लेख

सलोणी = सरवणी, कोणी से नैऋत्य कोण में १॥ मील पर

मिराशी, Epi. Ind, XXVII, 176

(१७) रतनपुर-शिला-लेख; विक्रम सं० १२०७ (११४९–५० ईसवी)

(नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

पृथ्वीदेव के समय में देवगण के द्वारा साम्बा ग्राम में शिवालय के निर्माण का उल्लेख

यह लेख वि. सं. १२४७ का माना गया था, किन्तु संशोधित काल वि. सं. १२०७ है.

भाण्डारकर-सूची क्र. ४२१; **हीरालाल-सूची** क्र. १९७; कीलहार्न, Epi. Ind, I, 45.

काल-निर्णय : मिराशी, Epi. Ind, XXVI, p. 257.

(१८) आमोदा-ताम्र-पत्र (२) कल. सं. ९०५ (११५४ ईसवी)

(नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

पृथ्वीदेव द्वारा के शीलण, पियम तथा लखनु नामक ब्राह्मणों को मध्यमण्डल में स्थित बुड्डबुड्ड नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

मध्यमण्डल = बिलासपुर ज़िले का अंश

बुड्डबुड्ड = बुरबुर, लाफा जमीनदारी में

भाण्डारकर-सूची क्र. १२३६; **हीरालाल सूची** क्र. २००; हीरालाल, I.H.Q., I., 405

(१९) रतनपुर-शिला-लेख; कल० सं० ९१०. (११५९ ईसवी)

(नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

खण्डित पंक्ति क्र. १८–१९ में हट्टकेश्वर पुरी का उल्लेख (प्रायः हट्टा ग्राम निर्देशित है)

भाण्डारकर-सूची क्र. १२३९; **हीरालाल-सूची** क्र. २२५ कानिंघम, ASR, XVII. pl. XX.

(२०) रतनपुर (बादल महाल) शिला-लेख, कल. सं ९१५ (११६३–६४ ईसवी)

(नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

पृथ्वीदेव और उसके सामन्त ब्रह्मदेव के समय का लेख

ब्रह्मदेव के द्वारा मल्लाल में शिव-मन्दिर, अन्य स्थलों में १० शिव-मन्दिर, बरेलापुर में श्रीकण्ठ के देवालय, रत्नपुर में पार्वती के ९ मन्दिर, कई वापीयों, तथा गोठाली में तालाव, नारायणपुर में धूर्जटि के देवालय, बह्मणी, चरौय और तेजल्लपुर में तालाव, कुमराकोट में शिवालय और सत्र आदि के निर्माण करने तथा सोमनाथ के देवालय के लिये लोणाकर नामक ग्राम के दान में देने का उल्लेख है।

मल्लाल = मल्लार, बिलासपुर के नैऋत्य कोण में १६ मील पर
बरेलापुर = बरेला, रतनपुर के दक्षिण में १० मील पर
नारायणपुर = नारायणपुर, महानदी के तटपर
बह्मणी = बह्मणी, अकलतारा से ईशान्य में ४ मील पर
शेष स्थल अनिर्णित

भाण्डारकर-सूची क्र. १२३०; **हीरालाल-सूची** क्र. २११; मिराशी, Epi. Ind., XXVI, 255.

(२१) महामद्पुर-शिला-लेख

(बिलासपुर से पूर्व में १५ मील पर)

इस खण्डित लेख में पृथ्वीदेव द्वितीय और उनके भ्राता अकालदेव का उल्लेख है

भाण्डारकर-सूची क्र. १५८५; **हीरालाल-सूची** क्र. २०५; कीलहार्न, Ind. Ant., XX, 85

(ii) पृथ्वीदेव के बनावट ताम्र-पत्र

(१) लाफा-ताम्र-पत्र

भाण्डारकर-सूची क्र. १२२४; **हीरालाल-सूची** क्र. २२३; हीरालाल, Epi, Ind., XI, 295

(२) घोटिया ताम्रपत्र

भाण्डारकर-सूची क्र. १२५६; **हीरालाल-सूची** क्र. १९५; हारालाल, Ind. Ant, LIV, 44.

जाजल्लदेव

(२२) सिवरीनारायण-शिला-लेख; कल. सं. ९१९ (११६८ ईसवी)

जाजल्लदेव द्वितीय के समय में, उनके बंधु के वंश में से सर्वदेव नामक राजकुमार द्वारा सोण्ठिव में शिवालय, पथरिया में कुछ दान, बाणारी में तालाव, पजनी में आम्रवृक्ष तथा चंद्रचूड शिवालय के लिये चिंचोली नामक ग्राम के दान इत्यादि का उल्लेख

सोण्ठिव = सोंठी, सिवरीनारायण के उत्तर में २० मील पर
पथरिया = पथरिया, सिवरीनारायण के आग्नेय कोण में १६ मील पर
बाणारी = बाणारी, सिवरीनारायण के उत्तर में २५ मील पर
पजनी = पचरी, जांजगीर तहसील में
चिंचोली = चिंचोली, सिवरीनारायण के पश्चिम में २५ मील पर

भाण्डारकर सूची क्र. १२४२; **हीरालाल सूची** क्र. २०३; भाण्डारकर, PR. ASI, W. C., 1904, p. 52–53

(२३) **मल्लार-शिला-लेख**; कल. सं. ९१९ (११६८ ईसवी)

जाजल्लदेव के समय में मध्यदेशान्तर्गत के कुम्भटी निवासी, और तुम्मान में रहने वाले गंगाधर के द्वारा मल्लाल में केदार (शिव) मन्दिर के निर्माण करने का उल्लेख, जिसको कोसम्बी ग्राम राज के द्वारा प्राप्त हुआ था।

मल्लाल = मल्लार, बिलासपुर के आग्नेय कोण में १६ मील पर

कोसम्बी = कोसम डिह, मल्लार से ८ मील पर

भाण्डारकर-सूची क्र. १२४१; **हीरालाल-सूची** क्र. २०६; कीलहार्न, Epi. Ind., I,39.

(२४) **आमोदा ताम्र-पत्र**; कल. सं. ९१९ (११६८ ईसवी)

अपना प्राण-रक्षण करने के पुरस्कारार्थ जाजल्लदेव द्वारा ब्राह्मणों को बुंदेरा नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. २०३०; **हीरालाल-सूची** क्र. २०१; हीरालाल, Epi.Ind., XIX, 209

रत्नदेव तृतीय

(२५) **खरोद-शिला-लेख**, कल. सं. ९३३ (११८२ ईसवी)

(लखणेश्वर के देवालय में संरक्षित)

रत्नदेव तृतीय के समय में गंगाधर के द्वारा किये गये निम्नलिखित धर्मकृत्यों का उल्लेख

(खरोद में) शिवालय, मठ, शौरि-मण्डप

रत्नपुर में एकवीरा देवी का देवालय

वडद के अरण्य में शिवालय तथा मण्डप

दुर्ग में दुर्गा देवी का देवालय

? में सूर्य का मन्दिर

पोरथ में शिवालय

रत्नपुर के उत्तर दिशा में ढुण्ढी गणपति का देवालय

तिपुरग, गिरहाली, उल्लव तथा सेणार इत्यादि ग्रामों में तालाब

नारायणपुर में सत्र

खरोद = बिलासपुर से आग्नेय कोण में ३७ मील पर

वडद = बलोद, खरोद से उत्तर में ३० मील पर

पोरथ = पोरथ, खरोद से ईशान्य में ३० मील पर

उल्लव = उल्व, रायपुर ज़िले में

सेणार = सेन्द्रि, रत्नपुर बिलासपुर के बीच में

नारायणपुर = नारायणपुर, खरोद के ईशान्य कोण में २० मील पर

भाण्डारकर-सूची क्र. १२४९; **हीरालाल-सूची** क्र. १९८; चक्रवर्ती, Epi. Ind, XIX, 163.

(२६) **साहसपुर-मूर्त्ति-लेख**; कल. सं. ९३४ (११८३ ईसवी)

(दुग ज़िले में दुग से ३७ मील पर साहसपुर में संरक्षित)

कलचुरि-शासकों के सामन्त यशोराज की प्रशस्ति

भाण्डारकर-सूची क्र. १२५०; **हीरालाल-सूची** क्र. २३४; कनिंघम, ASR., XVIII, 43

प्रतापमल्ल

(२७) पेन्ड्रा बंध ताम्र-पत्र; कल. सं. ९६५ (११८४ ईसवी)

(बलोदा बझार में पेन्ड्राबंध ग्राम से प्राप्त)

पल्सदा शिबिर से प्रचलित। प्रतापमल्ल के द्वारा अनर्घवल्ली विषय में कायठा नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

पल्सदा = परसोडी, कैता के उत्तर में १ मील पर

अनर्घवल्ली = जांजगीर तहसिल का अंश

कायठा = कैता, पेन्ड्राबंध के पश्चिम में १४ मील पर

मिराशी, Epi. Ind., XXIII, 1

(२८) बिलैगढ़-ताम्र-पत्र; कल० सं० ९६९ (११८८ ईसवी)

(बिलैगढ़ के समीप पौनी ग्राम से प्राप्त, रायपुर संग्रहालय में संरक्षित)

प्रतापमल्ल के द्वारा हरिदास नामक ब्राह्मण को सिरल नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख

नागपुर-संग्रहालय तथा प्रो० मिराशी के द्वारा सूचना-प्राप्त; **अप्रकाशित**

कलचुरी सिक्के

कलचुरीओं के सिक्कों के विस्तृत विवरण के लिये निम्न लिखित लेखों बहुत उपकारी हैं।

मिराशी, "The oins of the Kalachuris" J N S I., III, 21-39.

लोचनप्रसाद पाण्डेय, "Types and legends of Haihaya Coins of Mahakoshala" JAHS., XII, 169.

लोचन प्रसाद पाण्डेय "Haihaya Coins of Mahakoshala" IHQ., XIX, 281.

लोचन प्रसाद पाण्डेय "Silver coins of Haihaya Princes in Mahakoshala" JNSI., III, 41.

ॲलन "Coins acquired by the British Museum," Numismatic Chronicle, XVII 5th Series, p. 297.

कनिंघॅम, Coins of Mediæval India 1894

,, A S R., X,

विशिष्ट सिक्के

नेल्सन राईट, "Gold coins of Gangeyadeva" N. S. (1912), XVII, 101.

लोचन प्रसाद पाण्डेय, "Hanuman type coins of Prithvideva and Jajalladeva" IHQ., XVIII, 375.

लोचन प्रसाद पाण्डेय "Copper coins of Pratapamalla," IHQ., III, 173.

त्रिपुरी शाखा कृष्णराज के चाँदी के सिक्के

इनका प्रसार राजपुताना, मालवा, बम्बई राज्य में नाशिक, कन्हाड, देवलाणा, मरोल, तुलसी तलाव से प्राप्त सिक्कों से खूप दूर प्रदेश तक फैला हुआ माळूम होता है। मध्यप्रदेश में वे निम्नलिखित स्थानों से प्राप्त हैं।

पट्टण, ज़िला बैतूल; १९३७ में प्राप्त, चंद्रगुप्त के सिक्कों सहित **सरकारी नाणक सूची**
मिराशी, JNSI., III, p. 24.

धामोरी, ज़िला अमरावती; १९३७ में प्राप्त १६०० सिक्कों का संचय **सरकारी नाणक सूची,**
मिराशी, JNSI , III, p 24

गाङ्गेयदेव

गाङ्गेयदेव के सिक्के, सोना, चाँदी तथा ताँबे के मिलते हैं। वे उत्तरप्रदेश के पश्चिमी तथा दक्षिण के सभी ज़िले में बहुसंख्य उपलब्ध होते हैं। इसी कारण कल्चुरीओं के सबसे प्रथम ज्ञात सिक्के है। सिक्के के एक ओर लक्ष्मी की प्रतिमा और दूसरी ओर बिंदुयुक्त वृत्त में तीन पंक्तियों में

(१) श्रीमद्गा
(२) ङ्गेयदे
(३) वः

अैसे अक्षर पढ़े जा सकते हैं। उनका वर्णन निम्नलिखित ग्रंथों पर आधारित हैं।

प्रिन्सेप, J A S B., IV (1835) plate L facing p, 668.

प्रिन्सेप, Essays on Indian Antiquities, (1858), p. 291, pl. XXIV.

कनिंघम, A S R , X (1880), p. 21

कनिंघम, Coins of Mediæval India, (1894), p. 72

रॅपसन, Indian coins, (1897), p. 33.

व्हिन्सेंट स्मिथ, J A S B., LXVI, (1897), pp. 305-06.

व्हिन्सेंट स्मिथ, Catalogue of Coins in Indian Museum. I,(1906),p.251;plate I, No. 2

मध्यप्रदेश में गाङ्गेयदेव के सोने के सिक्के निम्नलिखित स्थानों में प्राप्त हुअे हैं।

त्रिपुरी, जबलपुर—श्री. सुंदरलाल सोनी संग्रह, तेवर

? जबलपुर—श्री. स. आ. जोगळेकर, पूना, संग्रह (जबलपुर में खरिदा हुआ सिक्का)

इसुरपुर, रेहली के समीप, सागर (१९११ में प्राप्त सोने के ८ सिक्के)
नेल्सन राईट, N. S., XVII, (1912), Art 101.

रतनपुर शाखा

यह शाखा में से केवल चार शासकों के सिक्के उपलब्ध हैं। वे यह प्रकार के होते हैं।

(१) **जाजल्लदेव**	**सोने का सिक्का**	एक ओर उड़ता घोड़ा और दूसरी ओर दो या तीन पंक्तियों में **श्रीमज्जाजल्लदेव** ऐसे अक्षर
	ताँबे का सिक्का	एक ओर द्विभुज हनुमानकी प्रतिमा ओर दुसरी ओर **श्रीमज्जाजल्लदेव** ऐसे अक्षर
(२) **रत्नदेव द्वितीय**	**सोने का सिक्का**	एक ओर सवारी का घोड़ा और दूसरी ओर दो पंक्तियों में **श्रीमद्रत्नदेव** ऐसे अक्षर
	ताँबे का सिक्का	उपरिनिर्दिष्ट प्रकार का

(३) पृथ्वीदेव द्वितीय सोने का सिक्का		एक ओर सवारी का घोडा और घुड्सवार दुसरी ओर दो पंक्तियों में " श्रीमत्पृथ्वीदेव " ऐसे अक्षर
	चाँदी का सिक्का	उपरिनिर्दिष्ट प्रकार का
	ताँबे का सिक्का	एक ओर चतुर्भुज हनुमान की प्रतिमा बाये हात में गदा, सीधे हाथपर पर्वत (?) नीचेवाले दोनों हाथ दो असुरों को दबाने वाले, जिसमें से एक पैर के नीचे।
(४) प्रतापमल्ल	ताँबे का सिक्का	एक ओर सिंह और दूसरी ओर तीन पंक्तिओं में " श्रीमत्प्रतापमल्लदेव " ऐसे अक्षर

जाजल्लदेव के सोने के सिक्के दो प्रकार के हैं। एक बड़ा, जिसका वजन ६१ ग्रेन तक होता है, और दूसरा छोटा १५-१५$\frac{3}{4}$ ग्रेन का। छोटे चार सिक्के प्रायः एक बड़े सिक्के से तुल्यमान होते हैं। रत्नदेव द्वितीय के सिक्के भी इसी प्रकार के हैं। उनके ताँबे के सिक्कों में भी छोटे और बड़े ऐसा भेद प्रतीत होता है। छोटे २३–२५ ग्रेन तक और बड़े वजन में १०० ग्रेन के हैं। पृथ्विदेव के सोने के सिक्के, छोटे १५ ग्रेन के और बड़े ६१ ग्रेन के पाये गये हैं, किन्तु चाँदी के सिक्के बहुत पतले केवल ६ ग्रेन के हैं। उनके ताँबे के सिक्के १०० ग्रेन तक के तथा ६८ और ७२ ग्रेन के हैं। प्रतापमल्ल जिनके केवल तांबे के सिक्के ज्ञात हैं, वे २९ से ३८ ग्रेन तक के पाये गये है।

सिक्कों का विवरण : कल्चुरी शासकों के **सोने के सिक्कों** का वितरण साथ के कोष्ठक में दिया गया है

जाजल्लदेव		रत्नदेव द्वितीय		पृथ्वीदेव द्वितीय		प्राप्तिस्थान	वर्ष	संख्या	परिचय
छोटे	मोटे	छोटे	मोटे	छोटे	मोटे				
१७	१	०	२९	०	१	सारंगगढ़, राज्य	१८९२,	(६)	Proc. A. S. B., 1893, p. 92 I M C., I, 254-255, pl. XXVI, 11-13
१	२	०	०	०	०	आंगनदी, रायगड़	१८९२,	(३)	Proc. A. S. B, 1893, p. 141.
७	२९	२८	६८	५४	४०५	सोनसारी, बिलासपुर	१९१२,	(६००)	**सरकारी नाणक सूची** J N S I., III, p. 27.
१	२८	३	०	३७	६७	दलाल सिवनी, रायपुर	१९४०,	(१३६)	**सरकारी नाणक सूची** J N S I.. III, p. 28
०	०	–१२–		०	०	भगोण्ड, जांजगीर, बिलासपुर	१९४०,	(१२+३)	**सरकारी नाणक सूची** J N S I., III, p. 28
०	०	०	०	८	१	बच्छौद, चंद्रपुर	१९४१,	(९)	पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय द्वारा सूचना प्राप्त

चाँदी के सिक्के

प्रायः सभी चाँदी के सिक्के केवल पृथ्वीदेव के द्वारा प्रचलित बाल्पुर के समीप महानदी की खोज में पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय द्वारा संशोधित और महाकोशल हिस्टॉरिकल सोसायटी के संग्रह में हैं।

१९३४ महानदी के पात्र में प्राप्त पाण्डेय, JAHRS., XII, p. 169.
१९३८ " " पाण्डेय, JNSI., III, 42., pl. III, 12.
१९४० बाल्पुर, महानदी के पात्र में प्राप्त; पाण्डेय, JNSI., III, 42.
१९५३ त्रिपुरी, सागर विश्वविद्यालय की खुदाई में प्राप्त;
डॉ. दीक्षित द्वारा संशोधित, **अप्रसिद्ध**

ताँबे के सिक्के

रत्नदेव

१९४० भगोण्ड में प्राप्त १५ सिक्कों का संचय; जिनमें से सोने के १२ सिक्के उपरिनिर्दिष्ट हैं। और शेष ३ रत्नदेव द्वितीय के हैं।
१९१९ बाल्पुर में पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय द्वारा संशोधित
IHQ., III, 173-176.
१८८५ कनिंघम द्वारा संशोधित, CMI., pp. 75-76, No. 45.
१८३५ कनिंघम द्वारा संशोधित, CMI., pp. 75-76 No. 45.
? तलोरा, रायगढ़ में प्राप्त ४३ सिक्कों का संचय } पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय
१९३६ खैरागढ़ में प्राप्त २०० सिक्कों का संचय } द्वारा संशोधित

प्रतापमल्ल

१९२४ बाल्पुर में प्राप्त; पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, IHQ., III, 173-176.

कलचुरी स्थापत्य-कला एवं मूर्त्ति-कला

असंख्य उदाहरणों की प्राप्ति होने पर भी इस विषय का अध्ययन अभि तक अच्छे ढंग से नहीं हो सका, जैसा हम कुषाण मूर्त्ति-कला या गुप्तकालीन मूर्ति-कला के विषय में पढ़ सकते हैं। सबसे अच्छा और विस्तृत विवरण राखलदास बानर्जी द्वारा रचयित Haihayas of Tripuri and their Monuments, MASI., 23 में किया गया है, किन्तु वह केवल त्रिपुरी शाखा के तक मर्यादित हैं। रतनपुर शाखा की स्थापत्यकला का परिचय और उनके विशिष्टत्व पर अधिक ध्यान केन्द्रित होने बहुत ही जरूरी हैं।

त्रिपुरी शाखाः– शासन काल तथा कला-वैशिष्टय के दृष्टी से कलचुरी स्थापत्य कला के तीन खंड माने जाते हैं। इन तीनों काल-खण्ड के अवशेष मध्यप्रदेश बघेलखंड, विशेषतः रीवाँ राज्य में बिखरे हुए हैं। दुर्भाग्यवशात् उनमें से कई अवशेष अभी अच्छे स्थिती में नहीं हैं और अज्ञानतः लोगोंने उनको ताड़फाड़ कर दिया है।

मध्यप्रदेश में प्राप्त अवशेष

(१) **रीठी** : सागर–कटनी रेल्वे लाईनपर, रिठी स्टेशन से १ मील पर देवालयों के खण्डहर कनिंघम, ASR, XXI, 160, **गॅज़ेटीयर**

(२) **सलैया** : सागर कटनी रेल्वे लाईनपर सलेया स्टेशन के समीप; देवालय के खण्डहर बानर्जी, MASI., 23.

(३) **बरगांव** : सलैया स्टेशन से ६ मीलपर
कनिंघम, ASR., XXI, 101, 163; बानर्जी, MASI., 23, Plate IX, XVIII a, XXXIX, b **शिलालेख**

(४) **सिमरा** : कटनी के उत्तर में १० मील, देवालयों के खण्डहर; **शिलालेख;**
कनिंघम, ASR, XXI, 101, 154., **गॅंज़ेटीयर** पृ. १८५

(५) **त्रिपुरी** : जबलपुर के पश्चिम में ८ मीलपर तेवर ग्राम के समीप
करणबेल, हथियागढ़, कारीसुरी, चौगान इत्यादी नामोंसे परिचित ४ वर्ग मील का विस्तृत क्षेत्र
कनिंघम, ASR., IX, 54-77, XVII, 72.
बानर्जी, PRASI, WC, 4894, p. 5; MASI., 23, pl. XIX-XX b, XXI, XXXIV b, XXXV, XI.

सागर विश्वविद्यालय द्वारा १९५२–५३ खुदाई में राजा कर्ण का एक बड़ा दुर्ग, तट, गोलकी मठ इत्यादि अवशेष प्राप्त हुए हैं।
डॉ. दीक्षित, Tripuri Excavation Report

(६) **भेड़ाघाट** : जबलपुर के पश्चिम में ११ मीलपर कलचुरीओं द्वारा निर्मित भव्य वृत्ताकार ६४ योगिनी मंदिर
कनिंघम, ASR., IX, 60-61, Pl. XII-XVI,
बानर्जी, MASI. 23, pl. XXII, a b, XXIX-XXXIV, pl. LVI, LVII,

(७) **नान्द चान्द** : केन नदीमें स्थित द्वीप पर देवालय के अवशेष, दमोह के ईशान्य में ४० मील
कनिंघम, ASR, XXI, 160, pl. XL, XLI,

(८) **पनागर** : जबलपुर के पूर्व में २४ मील
प्रचंड वराह मूर्ति **संरक्षित स्मारक**

(९) **छोटी देवरी** : देवालयों के खण्डहर **शिलालेख**
कनिंघम, ASR, XXI, 100, 158, pl. XXVIII, a,

(१०) **कारीतलाई** : कटनी से वराहमूर्ति, देवालयों के खण्डहर, और प्राचीन मूर्तियाँ, **शिलालेख**

(११) **बिल्हरी** : कटनी के ईशान्य में १० मील
कामा काण्डला, तथा अन्य देवालयों के खण्डहर, **शिलालेख**
कनिंघम, ASR, IX, 34-37, pl. VII बानर्जी, PRASI WC. 1904 p 33. MASI, 23, pl. VII, VIII, XXI a, pl. XXXVII b.

(१२) **नन्हवारा**, कलचुरी कालीन मूर्ति शिल्प
AR, ASI, 1930-34, pl. LXXVI, b, c.

(१३) **नोहटा** : नोहटेश्वर मन्दिर
PRASI, WC; 1894, p. 6; 1904, p. 36.

(१४) **मझौली** : वराहमूर्ति
कंनिंघम, ASR, IX, 48.

(१५) **घनसोर**, सिवनी के समीप

कर्निंघम, ASR, VII, 107-118.

(१६) **बाहुरीबंद**, शिलालेख, मूर्ति-शिल्प

PR,ASI, WC, 1904, p. 35; MASI, 23, pl. LII, b.

(१७) **बांदकपुर** : सागर-कटनी रेल्वे मार्गपर बांदकपुर स्टेशन के उत्तर में १ मील; देवालयों के खण्डहर

(१८) **सागर** : सागर के आर्टीलरी मेस में एकत्रित किये हुए और कई अन्य स्थानों से लाये हुए मूर्ति-शिल्प के अवशेष तथा शिलालेख

कर्निंघम, ASR., XXI, 93.

(१९) **पोण्डी** : देवालय के अवशेष

बानर्जी, MASI , 23 में उल्लिखित.

(२०) **लखनादौन** : जबलपुर-नागपुर मार्ग जबलपुर के नैर्ऋत्य में ३० मील देवालय के खण्डहर तथा मूर्ति शिल्प के नमूने **कझिन्स सूची**

(२१) **कानोड़ावारी** : कानोड़ावारी के देवालय में प्राप्त अवशेष

कझिन्स, PR.ASI, WC, 1894, p 7.

(२२) **मदनपुर** :

कझिन्स, PR.AS.I. WC, 1894, p 7.

(२३) **गुर्गी दशार्णी** : सिहोरा के उत्तर में १२ मील पर मूर्ति-शिल्प के अवशेष

डॉ. महेशचंद्र चौबे, जबलपुर द्वारा संशोधित

अन्य अवशेष

(२४) **अल्हाघाट** : रीवाँ राज्य मूर्ति शिल्प के अवशेष, शिलालेख

कर्निंघम, ASR., XXI, 114, plate XXVIII.

(२५) **अमरकण्टक** : रीवाँ राज्य देवालय तथा मूर्ति शिल्प के अवशेष [चित्र १० क्र. ३७]

कर्निंघम, A.S.R., VII. 227-234, pls. XX, XXI.

बानर्जी, MASI., 23, pl. XIII-XVI. XLIX, LI, LII, a, LV-LVI,

(२६) **चंद्रेहे** : रीवाँ राज्य देवालय, मठ के अवशेष, तथा शिलालेख

कर्निंघम, ASR.,XIII,6-11;pls I-IV. PRASI , WC,1921, p.82-85

बानर्जी, MASI., 23, pl I-IV.

(२७) **गुर्गी तथा मसोन** : रीवाँ राज्य देवालय तथा मूर्ति-शिल्प के अवशेष

कर्निंघम, ASR., XIII, 13; XIX, 85, pl. XX; XXI, 149-153 pl. XXXV.

बानर्जी, MASI., 23 pl. V-VI, pl. XXV-XXVI, XXVII, XXXVII a XXXIX, a ,LIV, a; PRASI., WC, 1921, p. 76-81

(२८) **परैनी** : रीवाँ राज्य; वराह मूर्त्ति-शिल्प
कनिंघम, ASR., XXI, 158.

(२९) **सोहागपुर** : रीवाँ राज्य; देवालय तथा मूर्त्ति शिल्प PR,ASI., WC, p. 91-96.
कनिंघम, ASR., VII, 240-45, plate XX, XXI.
बानर्जी, MASI., 23, pl. X.-XII XL,-XLV, XLVIIIa LV.

(३०) **मरई** :
बानर्जी, MASI., 23. pl. XXa, XXXVIII,XLVI. b, XLVII. a,

(३१) **देवतलाव** : रीवाँ राज्य, देवालय के खण्डहर
बानर्जी, MASI., 23 pl. XXIV, PR,ASI., WC; 1921, pp. 75-76.

(३२) **बैजनाथ** : रीवाँ राज्य, देवालय के खण्डहर
बानर्जी, MASI., 23, pl. XVIII b; PR,ASI., WC, 1921 pp. 81-82

(३३) **पाईकोरे**,

(३४) **सारनाथ**,

(३५) **सतना**, ASI. AR, 1925-26 pl. LIX a-b

(३६) **मैहर**, मूर्त्ति-शिल्प ASI, AR, 1922-23, pl. XL, C.

(३७) **दुधिया**, MASI., 25, pl. L; PR,ASI., WC., 1921 p. 76.

रतनपुर शाखा

रतनपुर शाखा से संबंधित तथा अन्य मध्य-युगीन अवशेषों का विवरण

जाजल्लपुर (जांजगीर-पाली) : देवालय तथा अन्य खण्डहर
PR. ASI, W. C., 1904, p. 29; ASR., VII, 204-07; 217-219;

कोटगढ़ : ASR., VII, 212.

तुम्माण : Ind. Ant., 1924, p. 122.

कुगडा : ASR., VII, 211., Ind. Ant., XX, 84.

सोरार : ASR., VIII, 137-142.

मचका सिहावा : ASR., VII, 145-46.

कोणी : Epi Ind., XXVII, 176.

सिवरी नारायण : ASR., XXI, 94; VII, 196-99; PR. ASI, W. C; 1904, p. 30-31

मलार : देवालय तथा अन्य अवशेष ASR., VII, 204.

नारायणपुर : देवालय ASR, VII, 193-94, Pl. XIX; ASI, AR., 1930-34, Pl. LXXVII, a-d. [चित्र फलक १० क्र. ३८]

रतनपुर : देवालय तथा अन्य खण्डहर ASR, VII, 214; XVII, 72-78
PR,ASI, W. C., 1904, p. 31-32.

खरोद : देवालय, ASR, VII, 201-203; PR. ASI., W. C. 1904, p 32.

साहसपुर : ASR., XVII, 43, Pl. XXII.

पुजारी पाली : देवालय ASR., XVII, 68; PR. ASI WC., 1904, p. 32

अडभार : देवालय PR, ASI., WC., 1904, p. 32-33

कोसगई : ASR., XIII, 153-153-57.

खलारी : देवालय ASR., VII, 156-57, pl. XVII.

देववालोद : देवालय PR, ASI., WC., 1904, p. 27.

बिलासपुर : मूर्ति शिल्प PR, ASI, WC., 1904, p. 27.

७ यादव साम्राज्य

यादवों का पुरा इतिहास ग्रंथ रूप से प्रकाशित नहीं हुआ। किन्तु कतिपय विवरण शिलालेखों, ताम्रपत्रों और तत्कालीन ग्रंथों द्वारा ज्ञात होते हैं। बम्बई गॅज़ेटियर में भाण्डारकर और फ्लीट द्वारा सर्वोत्कृष्ट विवरण संग्रहीत है। फिर भी उसमें निरन्तर खोज द्वारा उपलब्ध सामग्री के संकलित करने की आवश्यकता है।

(१) यादव शिलालेख

सिंघण

(१) बार्शी टाकली शिलालेख; शक १०९८
हीरालाल सूची क्र. २५१; मिराशी, Epi. Ind., XXI, 127.

(२) अमड़ापुर शिलालेख; शक ११३३
हीरालाल सूची क्र. २५१; मिराशी, Epi. Ind., XXI, 127.

कृष्ण

(३) नान्दगांव शिलालेख; शक ११७७
(खण्डेश्वरी देवालय में संरक्षित)
हीरालाल सूची क्र. २४३; मिराशी, Epi. Ind., XXVII, 9
भा. इ. सं. मं. त्रैमासिक वर्ष २८, पृ. ८-११

रामचंद्र

(४) रामटेक शिलालेख; शक १२२२
हीरालाल सूची क्र. ३ मिराशी और कुलकर्णी, Epi. Ind., XXV, 7
मिराशी और कुलकर्णी, **सरदेसाई स्मारक ग्रंथ**, पृ. ११५

(५) काटा शिलालेख; शक १२२७; **सुषमा**, फेब्रुवारी १९५४ [चित्रफलक १३ क्र. ४८]

(६) लांजी शिलालेख (लांजी के देवालय के खंभेपर)
हीरालाल सूची क्र. २८ **अप्रकाशित**

यादव रामचंद्र का शक संवत् १२२२ का एक अन्य लेख मध्यप्रदेश की पश्चिमी सीमा पर पांढरकवड़ा (यवतमाल) से दस मील दूर उनकेश्वर में स्थित है।

य. खु. देशपांडे, **भारत इति. संशो. मं. त्रैमासिक**, वर्ष ९.

सिंवण के सेनापति खोलेश्वर के कतिपय दानों का उल्लेख आंबेजोगाई शिलालेख क्र. २ में किया गया है। खरे, **दक्षिणच्या मध्ययुगीन इतिहासाचीं साधनें,** खण्ड २, पृ. ५६ यह लेख से सिंवण द्वारा चांदा के परमारों से किया हुआ परामर्श ज्ञात होता है।

(२) यादवकालीन अन्य लेख

(१) **ठाणेगांव** शक ११४५ का शिलालेख; **हीरालाल सूची** क्र. ११

(२) **कोरंबी,** भण्डारा शिलालेख; **अप्रकाशित**

(३) **सिरपुर,** वाशिम, शक १२३४ का शिलालेख; **हीरालाल सूची** क्र. २५३

(४) **सातगांव,** बुलढाणा जैनमूर्त्ति-लेख शक ११७३; **हीरालाल सूची** क्र. २६४

(५) **मार्कण्ड, चाँदा** सिंवण का उल्लेख किया हुआ मराठी शिलालेख;
कर्निंघम, ASR , IX, 143–49; pl. XXX
देशपांडे, **भा. इ. सं. मं. त्रैमासिक,** वर्ष १९, ८५–८८

(३) चाँदा के परमारों के लेख व सिक्के

(१) **नागपूर संग्रहालय** (अमरकंटक?) शिलालेख

उदयादित्य के समय का वि. सं. ११६१ (११०४–०५ ईसवी)
हीरालाल सूची क्र. १; कीलहार्न, Epi. Ind., II, 180.

(२) **डोंगरगांव** शिलालेख; जगदेव के समय का; श. १०३४ (देशमुख द्वारा संशोधित)
मिराशी, Epi. Ind., XXVI, 177

(३) **उदयदेव का सिक्का** (मध्यप्रदेश में प्राप्त)

राखलदास बानर्जी, Numismatic Supplement, XXXIII (1920) p. 82; Plate XIII, 2
प्रो. मिराशी के मतानुसार यह सिक्का कल्चुरी शासक गांगेयदेव का है
JNSI., III, p. 25, f. n. 32

— — —

(४) हेमाडपंती देवालयों की सूची

[यादवकालीन हेमाडपंती देवालयों का निर्माण निम्नलिखित स्थानों में हुआ था। यह सूची गॅझेटियर, कझिन्स की सूची तथा पुरातत्व सर्वे की रिपोर्ट आदि ग्रंथों पर आधारित है।]

नागपूर जिला

१ **अदासा**--नागपुर से १८ मील वायव्य में
२ **अंभोरा**--वैनगंगा नदीपर, भंडारा से दक्षिण में १० मील
३ **भूगांव**--नागपूर से आग्नेय में १४ मील
४ **जाखपुर**--नागपुर से उत्तर में ७ मील

५ **कंद्रल**--नागपुर से ईशान्य में १३ मील
६ **केलोध**—नागपुर से वायव्य में ३० मील
७ **पारसिवनी**--नागपुर से उत्तर में १६ मील
८ **रामटेक**--नागपुर से ईशान्य में २८ मील, **संरक्षित स्मारक**
९ **सावनेर**--नागपुर से वायव्य में २३ मील
१० **वळणी**—नागपुर से वायव्य में २० मील

वर्धा जिला

११ **पोहना**—वर्धा नदी पर हिंगणघाट से नैर्ऋत्य में १६ मील
१२ **तळेगांव**, १०,०००; वर्धा से १० मील दक्षिण में
१३ **ठाणेगांव**--आर्वी से ईशान्य में २६ मील; शक ११४५ का लेख, **हीरालाल सूची** क्र. ११
कनिंघम, **ASR, VII**, 126

चाँदा जिला

१४ **आमगांव**--मूल से नैर्ऋत्य में २२ मील
१५ **भोजेगांव**--मूल से दक्षिण में ५ मील, **संरक्षित स्मारक**
१६ **चाँदपुर**--मूल से आग्नेय में ५ मील
१७ **चुरुल**--मूल से नैर्ऋत्य में ६ मील, **संरक्षित स्मारक**
१८ **घोसरी**--मूल से दक्षिण में १२ मील, **संरक्षित स्मारक**
१९ **खरवर्द**—वरोरा से पूर्व में ८ मील
२० **महावाड़ी**--वरोरा से ईशान्य में ४६ मील, **संरक्षित स्मारक**
२१ **मारोती**—मूल से वायव्य में २ मील, **संरक्षित स्मारक**
२२ **पालेबारस**--मूल से उत्तर में २२ मील, **संरक्षित स्मारक**
२३ **वागनाक**—नागरी रेल्वे स्टेशन से दक्षिण में २ मील
२४ **येड्डा**—रंगी जमींदारी में
२५ **नलेश्वर**—चाँदा से ईशान्य में २४ मील, **संरक्षित स्मारक**

भंडारा जिला

२६ **अड्यार**--भंडारा से दक्षिण में १७ मील
२७ **चकाहेटी**—भंडारा से उत्तर में ४० मील
२८ **गणेशतोला**--आमगांव रेल्वे स्टेशन के निकट
२९ **कोरंबी**—भंडारा से नैर्ऋत्य में ३ मील; शिलालेख
३० **पिंगळाई**--भंडारा से पास ½ मीलपर

बालाघाट जिला

३१ **भीर**

अकोला जिला

३२ **अनसिंग**—वाशीम से वायव्य में १५ मील

३३ **बार्शी टाकली**—अकोला से आग्नेय में १२ मील **संरक्षित स्मारक** कझिन्स, Mediæval Temples. pl. XCIX-XCX. शिलालेख शक १०९८

३४ **गोरेगांव**—अकोला से ८ मील

३५ **कुटासा**—अकोला से उत्तर में २४ मील शिलालेख (!)

३६ **महेशपुर**--अकोला से दक्षिण में ८ मील PR,ASI, WC. 1902., p. 9

३७ **निरट**--अकोला से उत्तर में १४ मील

३८ **पांग्रा**--बालापूर से दक्षिण में १६ मील

३९ **पाटखेड**—अकोला से दक्षिण में १८ मील

४० **पिंजर**—अकोला से आग्नेय में २० मील शिलालेख, PR,ASI WC. 1902, p. 2

४१ **सिंदखेड**—अकोला से दक्षिण में ११ मील

४२ **व्याला**—बालापुर से पूर्व में ८ मील

४३ **सिरपुर**—वाशिम से वायव्य में १२ मील **संरक्षित स्मारक**, शिलालेख; शक १३३४ **भाण्डारकर सूची** क्र. १३३४ हीरालाल सूची क्र. २५३ कझिन्स, Mediaeval temples, pl.CII. PR,ASI, WC. p.3.

अमरावती जिला

४४ **लासुर**--आनंदेश्वर देवालय; ASI. AR. 1921-22 pl. IX; [चित्र फलक १२ क्र.४७]

बुलढाणा जिला

४५ **अमडापुर**--बुलढाणा से पूर्व में २० मील शिलालेख शक ११३३; Epi Ind.,XXI, 127.

४६ **अंजनी**--मेहकर से नैर्ऋत्य में ६ मील

४७ **अँत्री**—मेहकर के समीप

४८ **ब्रह्मपुरी**—मेहकर से वायव्य में ८ मील

४९ **चिखली**—बुल्ढाणा से दक्षिण में १४ मील

५० **चिंचखेड**--पिंपळगांव राजा के नैर्ऋत्य में ७ मील, PR ASI, WC., 1902, p. 7.

५१ **देऊलघाट**--चिखली से वायव्य में १४ मील

५२ **धोत्रा**--चिखली से दक्षिण में १७ मील **संरक्षित स्मारक**, PR ASI, WC., 1902. p. 3 कज़िन्स Mediæval Temples, pl. CXII.

५३ **दुधा** : चिखली से वायव्य में १३ मील; अतिशय सुंदर देवालय

५४ **गिरोली** : चिखली नैऋत्य में ३० मील

५५ **कोठाली** : मलकापुर से दक्षिण में १५ मील; **संरक्षित स्मारक** PR AS.I., WC. 1902, p. 7.

५६ **लोणार** : मेहेकर से दक्षिण में १२ मील; **संरक्षित स्मारक**; PRASI., WC. 1902, p. 10-13; कज़िन्स Mediæval temples, pl. CIV-CV.

५७ **म्हसाळे** : मलकापुर से पश्चिम में २० मील

५८ **नान्द्रे** : चिखली से वायव्य में १० मील

६९ **साकेगांव** : चिखली से पश्चिम में ४ मील; **संरक्षित स्मारक,** PR,ASI., WC, 1903. p. 16; कज़िन्स Mediæval temples, pl. CX.

६० **सातगांव** : चिखली से उत्तर में ४ मील **संरक्षित स्मारक,** PR.ASI. WC. 1902, p. 14-16 कझिन्स Mediaeval temples, pls. CVI-CIX.

६१ **सायखेडा** : मेहेकर से नैऋत्य में ३० मील

६२ **वडाळी** : मेहेकर से उत्तर में १६ मील; PR,ASI., WC., 1902, p.8.

६३ **मद** : चिखली से वायव्य में २२ मील

६४ **मासरूल** : चिखली से पश्चिम में २० मील

६५ **मेहेकर** : बुल्ढाणा से आग्नेय में ३६ मील; **संरक्षित स्मारक;** PR,ASI., WC, 1902, p. 9

६६ **सेंदुरजना** : मेहकर से पश्चिम में १२ मील

६७ **सिंदखेड** : मेहकर से पश्चिम में ३२ मील **संरक्षित स्मारक**

६८ **सोनरी** : ?

६९ **वरवंड** : मेहकर से उत्तर में १६ मील

७० **गीर्दा** : बुल्ढाणा से पश्चिम में १६ मील

७१ **सोनटी** : मेहकर से पूर्व में ६ मील

वाशीम जिला

७२ **पोफळी** : उमरखेड से वायव्य में ६ मील

७३ **पुसद** : वाशीम से नैऋत्य में ३२ मील

यवतमाल जिला

७४ **दाभाडी** : दारव्हा से दक्षिण में २५ मील

७५ **दुधगांव** : दारव्हा से पूर्व में २ मील, PR,ASI., WC, 1902 p. 5

७६ **जवळगांव** : दारव्हा से ईशान्य में ९ मील PR,ASI., WC, 1902 p. 5

७७ **जुगड** : वुण से दक्षिण में १४ मील

७८ **कलमनेर** : केलापुर ताल्लुका में

७९ **केलापुर** : वूण से पश्चिम में २८ मील

८० **कुन्हाड** : केलापुर से वायव्य में २५ मील

८१ **लाक** : दारव्हा से दक्षिण में ६ मील, गॅझेटियर पृ. २२२ PR,ASI, WC, 1902 p. 6

८२ **लारखेड** : दारव्हा के पूर्व में १० मील; गॅझेटियर पृ. २२५ PR,ASI., WC. 1902 p.5

८३ **लोहारा** : यवतमाल से २॥ मील; **संरक्षित स्मारक** PR,ASI, WC, 1902. p. 4

८४ **पांढरदेवी** : केलापुर तालुका में

८५ **पाथरोट** : दारव्हा के पूर्व में ५० मील. **संरक्षित स्मारक;** PR,ASI., WC, 1902, p.4.

८६ **सोने वरोना** : दारव्हा के उत्तर में १६ मील

८७ **वाई** : केलापुर ताल्लुका में

८८ **वरूड** : दारव्हा से वायव्य में १० मील

८९ **यवतमाळ** :

९० **झाडगांव** : केळापुर तालुका में

९१ **तपोना** : जवळगांव के दक्षिण में ४ मील; गॅज़ेटियर पृ. २३३ **संरक्षित स्मारक**

९२ **नेर** : **संरक्षित स्मारक**

हेमाडपंती देवाळ्यों की यह सूची अपूर्ण है। कई देवालयों का काल तथा स्थापत्य निश्चित स्वरूप से नहीं बतलाया गया है। ऐसा भी हो सकता है कि इस सूची में से कई स्थान खोज के बाद परिचय की दृष्टि ठीक प्रतीत न हों। साधनाभाव से यह सूची प्रस्तावित ही है।

यादव सिक्के

कलंब यवतमाळ के पूर्व में १६ मील पर सिंघण, महादेव तथा रामचंद्र के ३८ सुवर्ण टंक का संचय १९५०-५१ में प्राप्त; **सरकारी नाणक सूची** [चित्रफलक १३ क्र. ४९]

८ गुफाएँ

नागपुर : **गारपैली** : कोला सुरान पहाड में ४ गुफाएँ नागपुर के पूर्व में ३२ मील

चाँदा : **भांदक** : ASR,IX,121-131,Pl.XIV,XXI-XXIII; **संरक्षित स्मारक**

देऊळवाडा : भांदक से पश्चिम में ६॥ मील ASR, IX, 135

गांवरार : भांदक से दक्षिणमें १॥ मील; जोवनास गुंफा; ASR, IX, 121-31

घुगुस : चांदा से पश्चिम में १३ मील

झाडापापडा : इंद्रावती नदी के तट पर, टीपगड से दक्षिण में २७ मील **संरक्षित स्मारक**

मारन : रंगी जमीनदारी में गुहा

भण्डारा : **बिजली** : भण्डारा ज़िले के वायव्य सीमापर

कचरगड : दरेकसा रेल्वे स्टेशन से २ मील पर (गोण्ड)

गायमुख : भण्डारा से उत्तर में २० मील

कोरम्बी : पौनी से वायव्य में ३ मील

बालाघाट : **सौरझरी**, मिरी से वायव्य में ६ मील

होशंगाबाद : **पचमढी** : चट्टानाश्रयों और इतिहासपूर्वकालीन गुफ़ाओं का बड़ा समूह

तामिया : पचमढ़ी से २० मील
झलई : पचमढ़ी से ४० मील
सोनभद्र : पचमढ़ी से २५ मील
} **संरक्षित स्मारक**

बुढी माई } बनापूर तथा
भोंडीया काफ } सिवनी मालवा, रेल्वे स्टेशन से ६ मील
नायगांव } गॉर्डन द्वारा सूचना प्राप्त

बैतूल : **धानोरा** : तापी के दक्षिण तट पर, अटनेर से नैऋत्य में ८ मील
भोपाली : बैतूल से पूर्व में २३ मील
झापळ : बैतूल से वायव्य में ४० मील
खैरी : बैतूल से पश्चिम में १२ मील. ५ गुफाएँ
लालवाडी : भोपाली से उत्तर में ४ मील
नागझिरी : बैतूल से दक्षिण में ५ मील
गोपाळतलाई : मुलताई से दक्षिण में ६ मील

अचलपुर : **मंजिरा** : मेलघाट में
अकोला : **पातूर** : अकोला से दक्षिण में २० मील; **संरक्षित स्मारक**
यवतमाल : **कलंब** : यवतमाल से उत्तर में देवालय
निंवदारव्हा : दारव्हा से पूर्व में ९ मील
रायपुर : **सिहावा** : धमतरी से आग्नेय में ३२ मील; ASR, VII, 145-46.
बिलासपुर : **सिंघणपुर** : नाहपल्ली रेल्वे स्टेशन से २ मील
जांजगीर : ASR, VII, 204-07
कोरबा : रतनपुर के पूर्व में ३२ मील
वर्धा : **ढागा** : वर्धा के उत्तर में २५ मील
सिवनी : **दिघोरी** : सिवनी से वायव्य में २५ मील गुफा थल नदी पर

९ दुर्गों की सूची

(i) प्राचीन (ii) मुसलमानी दुर्ग (iii) मराठा शासकों के दुर्ग (iv) गोण्ड दुर्ग (v) अन्य दुर्ग

(i) **प्राचीन दुर्ग** : मध्यप्रदेश में बैरागट के अतिरिक्त अति प्राचीन दुर्ग विद्यमान नही हैं ।

(ii) **मुसलमानी दुर्ग :**

नागपुर : **कलमेश्वर** : नागपूर से पश्चिम में १४ मील; **कझिन्स सूची; गॅझिटिअर** (कई विद्वानों के मतानुसार गोण्ड राजाओं का)
वर्धा : **पवनार** : वर्धा से आग्नेय में ५ मील शिलालेख
चाँदा : **खटोरा** : चाँदा से उत्तर में २६ मील; **संरक्षित स्मारक**
जबलपुर : **बटिहागद** : दमोह से वायव्य में २० मील शिलालेखों के अनुसार इन में कतिपय इमारतें १३२४ इसवी के हैं । **हीरालाल सूची**
डिंगरिया : बाँदकपुर से उत्तर में ३ मील
दमोह :
देवगढ : छिंदवाड़ा से २४ मील

रायपुर : **सरघा** : रायपुर से नैऋत्य में ४४ मील ASR, VII, 133–137
सोरार : बालोद से पश्चिम में ८ मील, ASR, VII, 137–42
दौंडी : बालोद से दक्षिण में १६ मील

सागर : **खिमलासा** : सागर से वायव्य में ४२ मील ASI AR, 1923–23, **संरक्षित स्मारक**
राहतगढ़ : सागर से पश्चिम में २५ मील ASI.AR 1921–22 **संरक्षित स्मारक**
मालथोन : सागर से उत्तर में ३८ मील

इलिचपुर : **गाविलगढ़** : चिखलदा के समीप; **संरक्षित स्मारक**
इमादशाही किला : ई. स. १४२५ में अहमदशाहा बहमनी के द्वारा निर्मित
फारसी शिलालेख : ई. स. १४८८ अहमदशाहा के राज्यकाल का
फारसी शिलालेख : ई. स १५७७ बुर्ज इ. बहराम की निर्मिती
संस्कृत शिलालेख : ई. स. १५५७ (शक १४८९) बुर्हानशहा का जन्म
Epi. Indo-Moslemica, 1297-8, p. 10.
हीरालाल सूची क्र. २४४, २४५, ASI,AR, 1922–23

नेमाड : **असिरगढ़** : ASR, IX, 113–121, Pl. XIX.
बऱ्हाणपुर : तापी नदी पर, खांडवा से आग्नेय में ४० मील; **संरक्षित स्मारक**

होशंगाबाद : **जोगा** : हर्दा से २४ मील
हंडीया :
सोहागपुर : होशंगाबाद से पूर्व में ३२ मील

भण्डारा : **सोनगढ़ी** : भण्डारा से आग्नेय में २५ मील

बैतूल : **खेरला** : बैतूल से दक्षिण में ५ मील

अकोला : **बालापुर** : अकोला से पश्चिम में १६ मील; **संरक्षित स्मारक**
ई. स. १५५७ में निर्मित ASI. AR; 1922-23.
शिलालेखों का समय, ई. १५५७, १७३७; **हीरालाल-सूची** क्र. २५५
नरनाला : अकोला के उत्तर में ३६ मील; **संरक्षित स्मारक**
१४२५ में दुर्ग की निर्मिति
१४८७ महाकाली द्वार की निर्मिति
१५३४ तोफों पर उत्कीर्ण लेख
ASI, AR, 1922–23, **हीरालाल सूची** क्र. २५०
मालेगांव : अकोला से वायव्य में ३८ मील

मुसलमानी शिलालेख

मध्यप्रदेश पर मुसलमानी शासन होने पर, उनके कातिपय लेख फारसी भाषा में खुदे हुअे कबरे, मसजिदों तथा दुर्गों के अन्तर्गत मिलते हैं उनमें से कई लेखों की सूची नीचे दियी जाती है। यह हीरालाल सूची पर आधारित हैं।

हीरालाल सूची

क्रमांक १२-१३	**अष्टी** : वर्धा, नियाझी के कबर में खुदे हुअे लेख
८८	**कारोंदा** : सागर, ग्यासुदिन खलजी के समय का लेख ई. १४१६
८९	**खिमलासा** : सागर, १२ फारसी लेख, ई. स. १४९० से लेकर १५७२ तक के
९०	**धामोणी** : सागर, मसजिद के निर्माण का उल्लेख, ई. स. १६७४
९१	**गढ़ौला** : सागर, खाज़ा शम्स खान का मृत्यु-काल का उल्लेख, ई. स. १५५६
९२	**कंजिया** : सागर, ई. स. १६४०,१६४२, तथा ई. स. १७०२ में उत्कीर्ण लेख
१०३-१०६,१०९	**बटिहागढ़** : दमोह, १३२४, १३२८, १३२८, १४६३ के लेख
१०८, ११०	**दमोह** : दमोह के किले का लेख १४८०; महमूद खल्जी का लेख, ई. स. १५१२
१४२-१४६,१८	**अशिरगढ़** : नेमाड़, अकबर, दानियाल, शहाजहान, औरंगझेब आदि मोगल बादशहाओं के लेख; ई. स. १६००, १६२७, १६५०, १६५८
१४७-१५०, १५६,१५७,१५९	**बऱ्हाणपुर** : नेमाड़ कई लेख १५९० से १६०० तक के
१६४	**सोमारी पेठ** : खेरला, बैतूल हजरत निजामशहा का उल्लेख
२४४-२४५,	**गाविलगढ़**, अमरावती द्वार के निर्माण का लेख; इ. स. १४८८ बुर्ज का लेख; ई. स. १५७७ बुऱ्हाण इमादशहा का लेख; ई. स. १५५७
२४६	**इलिचपुर** : (५० लेख) ई. स. १५८२ से लेकर १७८५ तक के
२४७-२४८	**अमनेर**, अमरावती : दो लेख; एक का समय इ. स. १६४६
२४९	**अकोला** : कई लेख ई. स. १७०२ से १७८६ तक के
२५०	**नरनाला** : अकोला, ४ लेख; ई. स. १४८७ से १८७४ तक के
२५२	**पातुर** : अकोला, २ लेख; ई. स. १३८८ से १६०६ तक के
२५५	**बाळापुर** : अकोला द्वार के निर्माण का लेख; ई. स. १७५७
२५६	**पंचगव्हाण** : अकोला, कई लेख; ई. स. १६१६ से १६३७
२५७	**मंगळूरपीर** : अकोला, महमदशहा के समय का लेख; ई. स. १७३३
२५८	**अकोट** : अकोला, २ लेख औरंगझेब के समय का लेख; ई. स. १६६७
२६०	**मलकापुर** : बुलढाणा, चंडी वेस पर उत्कीर्ण ई. स. १७२९
२६१	**रोहिणखेड** : बुलढाणा, खुदावंद खान का लेख; ई. स. १५८२
२६२	**साखर खेडला** : बुलढाणा, द्वार के निर्माण का लेख; ई. स. १५८१
२६३	**मेहेकर** : बुलढाणा, द्वार के निर्माण का लेख; ई. स १४८८
२६७	**जलगांव** : बुलढाणा, मसजिद के निर्माण का लेख; ई. स. १६३०

(III) मराठा शासकों के दुर्ग

नागपुर ज़िला : नगरधन : रामटेक से दक्षिण में ४ मील केवल तटबंदी सुरक्षित है।

उमरेड : नागपुर से नैऋत्य में २८ मील ASR, VII, 118

बझारगांव : नागपुर से पश्चिम में २५ मील

गुमगांव : नागपुर से दक्षिण में २० मील

अकोला ज़िला : दहिहंडा : अकोट से आग्नेय में १८ मील

हिवरखेड : अकोट से १४ मील

कुरम : मुर्तिझापुर से पूर्व में १४ मील

पंचगौहाड : अकोट से १७ मील

व्याला : अकोला से ८ मील

वर्धा ज़िला : आष्टी : वर्धा से वायव्य में ५२ मील

विरुल : (गढ़ी) वर्धा से पश्चिम में १८ मील

सोनेगांव : (गढ़ी) वर्धा से पश्चिम में १३ मील

अलिपुर : वर्धा से आग्नेय में १६ मील

अंजी : वर्धा से वायव्य में ९ मील

सेलू : वर्धा से ईशान्य में ११ मील

रोहना : वर्धा से वायव्य में २३ मील

नाचणगांव : वर्धा से वायव्य २१ मील

हिंगणी : वर्धा से ईशान्य में १६ मील (अठरावी शताब्दि)

पवनार : वर्धा से आग्नेय में ५ मील

चाँदा ज़िला : वैरागढ़ : चांदा से ईशान्य में ८० मील **संरक्षित स्मारक** (प्राचीन) ASR, VII, 127. pl XIII

शंकरपुर : चिमूर से ईशान्य १६ मील

भंडारा ज़िला : प्रतापगढ : भंडारा से ईशान्य में ४० मील; गोण्ड व मराठा अवशेष; **संरक्षित स्मारक**

संघरी : भंडारा से आग्नेय में २४ मील

पौनी : भंडारा से दक्षिण में ३२ मील; किले का दरवाजा प्रेक्षणीय; **संरक्षित स्मारक**

जबलपुर ज़िला : विजयराघोगढ़ : कटनी से ईशान्य में १८ मील

ASR, XXI, 168

दमोह ज़िला : **दमोह :**
गुगरा कलाँ : दमोह से वायव्य में ३४ मील
जटाशंकर : हट्टा से वायव्य में ७ मील **संरक्षित स्मारक**
कानोडा : हट्टा से वायव्य में १४ मील
मरियाडोह : हट्टा से उत्तर में १२ मील **संरक्षित स्मारक**
नरसिंघगढ़ : दमोह से वायव्य में १२ मील. मुसलमानी अवशेष भी है
पुरणखेडा : हट्टा से उत्तर में ९ मील, चंदेलों के समय का
रामनगर : हट्टा से पश्चिम में ९ मील; शक १८२३
रानगिर : दमोह से उत्तर में १२ मील

सिवनी ज़िला : **आदेगांव** : लखनादौन से पश्चिम में ८ मील
छपारा : सिवनी से उत्तर में २२ मील; गोण्ड अवशेष भी है

अमरावती ज़िला: **बडनेरा** : अमरावती से दक्षिण में ५ मील, मट्टी की बनी हुई गढ़ी

सागर ज़िला : **सागर :**
बिनैका : सागर से उत्तर में २४ मील
गढ़ाकोटा : सागर से पूर्व में २८ मील
रेहली : सागर से आग्नेय में २८ मील
कंजिआ : सागर से वायव्य में ६९ मील
खुरई : सागर से पश्चिम में ३२ मील
गढौला : सागर से दक्षिण में ३० मील
देवरी : खुरई से दक्षिण में ९ मील, सागर से दक्षिण में ४० मील
सानौदा : सागर से पूर्व में ८ मील

बिलासपुर ज़िला : **मल्हार** : बिलासुर से आग्नेय में १६ मील

बुलढाणा ज़िला : **पिंपळनेर** : मेहकर से आग्नेय में १४ मील
वाढवा : मेहेकर से दक्षिण में १५ मील. (गॅज़ेटीयर)

बैतूल ज़िला : **अटनेर** : बैतूल से दक्षिण में २० मील
भैंसदेही : बैतूल से नैऋत्य में ३२ मील

होशंगाबाद ज़िला : **बागरा** : होशंगाबाद से पूर्व में १८ मील

निमाड ज़िला : **भामगड** : खांडवा से पूर्व में ८ मील

रायपुर ज़िला : **कागडीह** : आरंग से उत्तर में १२ मील

(IV) गोंड शासकों के दुर्ग

नागपुर ज़िला : **भिवगड** : नागपुर से उत्तर में १८ मील **संरक्षित स्मारक**
भिवपुर : नागपुर से ईशान्य में १६ मील
जलालखेडा : काटोल से पश्चिम में १४ मील
पारसिवनी : नागपुर से उत्तर में १६ मील
पाटणसांगवी : नागपुर से वायव्य में १६ मील
सावनेर : नागपुर से वायव्य में २३ मील

चांदा ज़िला : चांदा :

बल्लालपुर : चाँदा से आग्नेय में ८ मील
भांदक : चांदा से वायव्य में १६ मील
चंदनखेडा : टिपगढ के समीप
पळसगड : वैरागढ़ से नैऋत्य में २० मील
टिपगढ़ : वैरागढ़ से पूर्व में ३८ मील ASR, VII, 130-32

भंडारा ज़िला : भंडारा :

प्रतापगढ़ : भंडारा से नैऋत्य में ४० मील **संरक्षित स्मारक**

बालाघाट ज़िला : लांजी : भंडारा से आग्नेय में ९० मील
सोनसार : मऊ से पूर्व में ८ मील
हट्टा : भंडारा से नैऋत्य में ८० मील

जबलपुर : मदनमहाल : जबलपुर से पश्चिम में ६ मील **संरक्षित स्मारक** ASR. XVII, 51-53
मगरधा : बिल्हेरी के उत्तर में ६ मील

दमोह : हट्टा : दमोह से ईशान्य में २७ मील **संरक्षित स्मारक**
जटाशंकर : हट्टा से वायव्य में ७ मील **संरक्षित स्मारक**
पंचमनगर : दमोह से वायव्य में २६ मील
सिंगोरगढ़ : दमोह से आग्नेय में २८ मील **संरक्षित स्मारक**, ASR, IX, 48-50
कोटा : दमोह से ईशान्य में २२ मील
राजनगर : **संरक्षित स्मारक**

सागर : धामोणी : सागर से उत्तर में २९ मील **संरक्षित स्मारक**
शहागढ़ : सागर से ईशान्य में ४० मील
गढ़पेहरा : सागर से उत्तर में ५ मील **डांगी शासकों का**
गौरझामर : सागर से दक्षिण में २८ मील
जयसिंगनगर : सागर के नैऋत्य में २१ मील **डांगी शासकों का**
खुरई : सागर से पश्चिम में ३२ मील
एरण : खुरई से पश्चिम में १८ मील **संरक्षित स्मारक**
गढ़ाकोटा : सागर से पूर्व में २८ मील
पिठोरिया : सागर से उत्तर में १८ मील
रमना : गढ़ा कोटा से जंगल में; **डांगी**
मरियाडोह : हट्टा से उत्तर में १० मील

मंडला : रामनगर : मंडला से पूर्व में १० मील

नरसिंवपुर : **चौरागड** : नरसिंवपुर से नैऋत्य में २० मील **संरक्षित स्मारक**
चवरपथा : नरसिंवपुर से वायव्य में १४ मील
धिलवार : नरसिंवपुर से वायव्य में २५ मील
बैतूल : **अमला** : बदनूर से १८ मील
छिंदवाडा : **देवगड** : **संरक्षित स्मारक**
दुग : **धमदा** : दुग से उत्तर में १८ मील **संरक्षित स्मारक**
वर्धा : **सेलू** : वर्धा से ईशान्य में ११ मील, **गॅजेटीयर**
सिवनी : **सोनगड** : लखनादौन के नैऋत्य में २० मील **गॅजेटीयर**
यवतमाल **दुर्गी** : यवतमाल से आग्नेय में १ मील

(V) अन्य दुर्ग

नागपुर : **काटोल** : नागपुर से वायव्य में ३६ मील
केलोद : नागपुर से वायव्य में ३० मील
धापेवाडा : नागपुर से वायव्य में २५ मील
वर्धा : **केलझर** : वर्धा से ईशान्य में १७ मील ASR, IV, 140
बिलनुर : आर्वी से ५ मील
वायफळ : वर्धा से पश्चिम में १२ मील
चांदा : **देऊळवाडा** : चांदा से पश्चिम में ६॥ मील
सेंगांव : वरोरा से वायव्य में १३ मील
रिपगड : वैरागढ़ के पूर्व में २८ मील; कनिंघम, ASR, VII, 131-33
मुरुमगांव :
बल्लारपुर : चांदा से दक्षिण में ३ मील
जबलपुर : **बालाकोरी** : कटनी से नैऋत्य में ९ मील (कझिन्स सूची)
दमोह : **तेजगढ़** : दमोह से दक्षिण में १९ मील
दुर्ग : **सोरार** : दुर्ग से दक्षिण में ४४ मील
दोंदी : बालोद से दक्षिण में २२ मील
बिलासपुर : **अजमिरगढ़** : अमरकंटक के समीप ASR, VII, 219
बच्छौद : जांजगीर से वायव्य में १४ मील ASR, VII, 211
बिलैगढ़ : सिवरी नारायण से दक्षिण में ११ मील
अकलतारा : बिलासपुर से दक्षिण में १७ मील ASR, VII, 211
कोसगई : छुरी जमींनदारी में बिलासपुर से ६० मील; ASR, XIII, 156
कोटगढ़ : जांजगीर से वायव्य में १२ मील **संरक्षित स्मारक** ASR, VII, 212
कोरमी : अकलतारा से पश्चिम में ६ मील **संरक्षित स्मारक** ASR, VII, 213
लाफागढ़ : पाली से उत्तर में १२ मील ASR, VII, 218
पेण्ड्रा : अमरकंटक से पूर्व में १४ मील
रतनपुर : बिलासपुर से उत्तर में १६ मील

बस्तर : गडफुलझर : सराईपाली से दक्षिण में १६ मील; **संरक्षित स्मारक**
चैतुरगड :
कुशीगड :
कोनारगड : **संरक्षित स्मारक**

नेमाड : पुनासा : खांडवा से उत्तर में ३३ मील

छिंदवाडा सौसर : छिंदवाडा से नैऋत्य में ३४ मील

सागर : बरेठा : सागर से नैऋत्य दिशा में ३७ मील
बरोदिया कलाँ : सागर से उत्तर में ३० मील
बिल्हरा : सागर से दक्षिण में १७ मील
धामोनी : सागर से उत्तर में २९ मील
दुगह : खुरई से ९ मील पर
गढ़ा कोटा : सागर से पूर्व में २८ मील
गरोला : सागर से पश्चिम में २२ मील
हीरापुर : सागर से उत्तर में ४७ मील
कटनैलगढ़ : सागर ज़िला की उत्तरी सीमा पर
मालथौन : सागर से पश्चिम में ४० मील
नरयावली : सागर से पश्चिम में ६ मील
पिठौरिया : सागर से वायव्य में १२ मील
राजवंस : सागर से दक्षिण में २७ मील
सानौदा : सागर से पूर्व में १२ मील
शाहगढ़ : सागर से उत्तर में ४३ मील

बालाघाट : हट्टा : बालाघाट से आग्नेय में १२ मील

नरसिंहपुर : बचई : नरसिंहपुर से आग्नेय में ११ मील

रायपुर : डमरु : लवन से वायव्य में ९ मील
गढ़सिवनी : सिरपुर से नैऋत्य में ८ मील
गीधपुरी : सिरपुर से पश्चिम में २ मील
रायपुर : ई. स. १४६० में बना हुआ
साकरा : सिरपुर से पूर्व में ३६ मील
गढफुलझरी : रायपुर से पूर्व में १८ मील
कुरुग : सिरपुर से पूर्व में २॥ मील

सिवनी : **छपारा** : सिवनी से पूर्व में ६ मील

सोनगढ़ : लखनादौन से नैऋत्य में २० मील

जबलपुर : **अभाना** : सिहोरा से वायव्य में १२ मील

अमोदा : स्लीमनाबाद से उत्तर में २० मील

बरगी : जबलपुर से दक्षिण में १४ मील

इटौरा : कटनी से ईशान्य में ३० मील

कनवारा : कटनी से उत्तर में ९ मील

सलैया : कटनी से पश्चिम में ११ मील

यवतमाल ज़िला : **कलम्ब** : यवतमाल से ईशान्य में १४ मील

रावेरी : रालेगांव से दक्षिण में २ मील

वर्धा ज़िला : **नाचणगाँव** : वर्धा से ३० मील

वाईफळ : वर्धा से पश्चिम में १२ मील

सोनेगांव : वर्धा से ११ मील

चाँदा ज़िला : **चिमूर** : चाँदा के उत्तर में ४८ मील

खटोरा : चाँदा से उत्तर में मील

सिरोंचा : चाँदा से आग्नेय में ११६ मील

अकोला ज़िला : **माना** : मुर्तिज़ापुर से पूर्व में ७ मील

पुरातत्त्वीय अवशेषों की सूची

१ नागपुर ज़िला

अदासा : हेमाडपंती मंदिर
अंभोरा : हेमाडपंती मंदिर
उबाली : वृत्ताकार शवस्थान
उमरेड : मराठा दुर्ग
कळमेश्वर : प्रागैतिहासिक अवशेष; दुर्ग
काटोल : दुर्ग
केलोध : हेमाडपंती मंदिर, दुर्ग
कोराडी : वृत्ताकार शवस्थान
कोहली : वृत्ताकार शवस्थान
गारपैली : गुहा
गुमगांव : दुर्ग
गोंडी : वृत्ताकार शवस्थान
घोरार : वृत्ताकार शवस्थान
जलालखेडा : दुर्ग
जाखपुर : हेमाडपंती मंदिर
जुनापाणी : वृत्ताकार शवस्थान
टाकळघाट : वृत्ताकार शवस्थान
धापेवाडा : दुर्ग
नगरधन : प्राचीन नाम नंदिवर्धन, वाकाटक राजधानी; ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान; मराठी दुर्ग
नवेगांव : प्रागैतिहासिक अवशेष
नन्दपुर : गुप्तकालीन मुहरों का प्राप्तिस्थान
नागपुर : वाकाटक ताम्रपत्रों में उल्लिखित
निळधोआ : वृत्ताकार शवस्थान
पाटणसांगवी : दुर्ग
पारसिवनी : गुप्तकालीन मुहरों का प्राप्तिस्थान, हेमाडपंती मंदिर, दुर्ग
बडगांव : वृत्ताकार शवस्थान
बझारगांव : दुर्ग
बोरगांव : वृत्ताकार शवस्थान
भिवगड : दुर्ग
भिवपुर : दुर्ग
भूगांव : हेमाडपंती मंदिर
माहुरझरी : गुप्तकालीन अवशेषों का प्राप्तिस्थान, प्राचीन मणी, वृत्ताकार शवस्थान
रामटेक : (प्राचीन नाम रामपादगिरी) वाकाटक कालीन शिल्पावशेष; ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान हेमाडपंती मंदिर; यादवकालीन शिलालेख; पवित्र तीर्थ-स्थान
रायपुर : वृत्ताकार शवस्थान
वळणी : हेमाडपंती मंदिर
वाठोरा : वृत्ताकार शवस्थान
सावनेर : हेमाडपंती मंदिर तथा दुर्ग
सावरगांव : वृत्ताकार शवस्थान
हिंगणे : वृत्ताकार शवस्थान

२ वर्धा ज़िला

अलिपुर : दुर्ग
अंजी : दुर्ग
आष्टी : दुर्ग
केलझर : दुर्गों के लिये प्रसिद्ध
ठाणेगांव : यादवकालीन लेख तथा देवालय
ढागा : गुहा
तळेगांव : हेमाडपंती मन्दिर, शिल्पावशेष
देवळी : राष्ट्रकूट ताम्रपत्र का प्राप्तिस्थान
नाचणगांव : दुर्ग के लिये प्रसिद्ध
पवनार : आहत मुद्राओं का प्राप्तिस्थान; प्रवरपुर नामक वाकाटक राजधानी दुर्ग इत्यादि ओं से सुप्रसिद्ध; शिल्पावशेष; उत्खनन-योग्य क्षेत्र

पोहना : हेमाडपंती मन्दिर;
बिसनुर : दुर्ग
बिरुल : दुर्ग
रोहना : दुर्ग
वायफळ : दुर्ग के लिये प्रसिद्ध
हिंगणघाट : (प्राचीन नाम उङ्गुण) आहत-मुद्राओं का प्राप्तिस्थान
हिंगणी : दुर्ग के लिये प्रसिद्ध

३ भंडारा ज़िला

कचरगड : गुहा
कोरम्बी : यादवकालीन लेख, गुहा
तिलोता खैरी : वृत्ताकार शवस्थान
पिंपळगांव : वृत्ताकार शवस्थान
पौनी : प्राचीन मुद्राओं का प्राप्तिस्थान; शातवाहन-कालीन लेख; दुर्ग
प्रतापगड़ : दुर्ग
बिज़ली : गुहा
ब्रम्बी : वृत्ताकार शवस्थान
भण्डारा : आहत-मुद्राओं का प्राप्तिस्थान, दुर्ग
सोनगढी : दुर्ग
संघरी : दुर्ग

४ चांदा ज़िला

आमगांव : हेमाडपंती मंदिर
कनसारी : मध्ययुगीन सिक्कों का प्राप्तिस्थान
केलझर : वृत्ताकार शवस्थान
खटोरा : दुर्ग
खरवर्द : हेमाडपंती मंदिर
खैर : प्रागैतिहासिक अवशेष
गांवरार : प्राचीन गुहा
घुगुस : गुहा
घोसरी : हेमाडपंती मंदिर
चार्मुसी : वृत्ताकार शवस्थान
चुरुल : हेमाडपंती मंदिर
चिमूर : दुर्ग
चंदनखेडा : दुर्ग
चांदपुर : हेमाडपंती मंदिर
चांदा : (प्राचीन नाम चाहंद) प्रागैतिहासिक अवशेष शातवाहन सिक्कों का प्राप्तिस्थान, गोंड दुर्ग तथा राजधानी, मुसलमानी अवशेष
झाडापापडा : गुहा
टीपगड़ : दुर्ग
ढोकी : प्रागैतिहासिक अवशेष
ताडली : रोमन सिक्कों का प्राप्तिस्थान
देऊळवाडा : गुहा, दुर्ग
देवटेक : मौर्यकालीन शिलालेख, वाकाटक लेख
नलेश्वर : हेमाडपंती मंदिर
परसोरा : प्रागैतिहासिक अवशेष
पळसगड़ : दुर्ग
पालेबारस : हेमाडपंती मंदिर
बल्लालपुर : दुर्ग
भोजेगांव : हेमाडपंती मंदिर
भांदक : शातवाहन कालीन लेख, राष्ट्रकूट ताम्रपत्र का प्राप्तिस्थान, प्राचीन गुफ़ा, पांडव-वंशीय लेख का प्राप्तिस्थान, दुर्ग
महावाडी : हेमाडपंती मंदिर
मारन : गुहा
मारोती : हेमाडपंती मंदिर
मार्कण्ड : मध्ययुगीन देवालय, यादव शिलालेख
मुरुमगांव : दुर्ग
येङ्गा : हेमाडपंती मंदिर
वडगांव : वाकाटक-लेख का प्राप्तिस्थान
वागनाक : वृत्ताकार शवस्थान, हेमाडपंती मंदिर
वैरागड़ : प्राचीन दुर्ग, प्राचीन काल से हिरा के लिये प्रसिद्ध
शंकरपुर : दुर्ग
सिरोंचा : दुर्ग
सेगांव : दुर्ग

५ बालाघाट ज़िला

गुंगेरिया : प्राचीन ताम्र अवजारों का प्राप्तिस्थान
तिरोडी : वाकाटक ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
बालाघाट : वाकाटक ताम्रपत्र का प्राप्तिस्थान
भीर : हेमाडपंती मंदिर
राघोली : शैलवंशी राजा के ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
लांजी : यादव लेख, गोण्ड अवशेष, दुर्ग
सोनसार : दुर्ग
सौरझरी : गुहा
हट्टा : दुर्ग

६ जबलपुर ज़िला

अभाना : दुर्ग
अमोदा : दुर्ग
कारीतलाई : कलचुरि शिलालेख, मध्ययुगीन शिल्पावशेष
कुण्डम : प्रागैतिहासिक अवशेष
कुण्डा : गुप्तकालीन मन्दिर
कुंभी : कलचुरी ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
गोपालपुर : कलचुरी लेखों का प्राप्तिस्थान, मध्ययुगीन अवशेष, बौद्ध मूर्तिओं का प्राप्तिस्थान
गुर्गी-दशार्णी : कलचुरि शिल्पावशेष
छोटी-देवरी : कलचुरी अवशेष तथा लेख
जबलपुर : (बड़ा सिमला पहाड़ी) प्रागैतिहासिक अवशेष
जबलपुर : प्राचीन नाम जौलीपट्टन (?) गुप्तकालीन सिक्कों का प्राप्तिस्थान, कलचुरी लेख तथा शिल्पावशेष
तिगवाँ : गुप्तकालीन मन्दिर
त्रिपुरी (तेवर) : प्रागैतिहासिक अवशेष, आहत मुद्रा, प्राचीन त्रिपुरी गण-राज्य की मुद्राएँ, मौर्यकालीन अवशेष, शातवाहन मुद्रा तथा भग्नावशेष, रोमन मृण्मय पात्रों, कुषाण सिक्कों इत्यादिओं का प्राप्तिस्थान; कलचुरि राजधानी; बहुसंख्य शिल्पावशेष तथा लेखों का प्राप्तिस्थान
देवगढ़ : दुर्ग
पनागर : कलचुरी शिल्पावशेष
बघोरा : शातवाहन कालीन लेख
बरगांव : गुप्तकालीन देवालय, कलचुरी लेख
बरगी : दुर्ग
बाहुरीबंद : राष्ट्रकूट लेख, कलचुरी शिल्पावशेष
बिल्हरी : कलचुरी लेख तथा शिल्पावशेष
भेड़ाघाट : प्रागैतिहासिक अवशेष, कुषाणकाल के लेख, कलचुरी शिलालेख तथा ६४ योगिनीओं के मन्दिर लिये सुप्रसिद्ध
मगरधा : दुर्ग
मझौली : कलचुरी शिल्पावशेष
मदनमहाल : गोण्ड वास्तुशिल्पावशेष
मुनई : प्रागैतिहासिक अवशेष
मुरीया : कलचुरी लेख
रूपनाथ : अशोक के शिलाशासन
रोण्ड : गुप्तकालीन मन्दिर
हिंडोरीया : दुर्ग
सिमरा : कलचुरी-लेख तथा शिल्पावशेष
सिहोरा : प्रागैतिहासिक अवशेष

७ सागर ज़िला

एरण : (प्राचीन नाम ऐरिकिण) आहत मुद्राओं, प्राचीन गणराज्य की मुद्राओं का प्राप्तिस्थान, शातवाहन कालीन शिलालेख, गुप्त शिलालेख तथा शिल्पावशेष; दुर्ग

इसुरपुर : कलचुरी सिक्कों का प्राप्तिस्थान
कटनैलगढ़ : दुर्ग
केडलारी : प्रागैतिहासिक अवशेष
कांजिआ : मुसलमानी दुर्ग
खिमलासा : मुसलमानी शिल्पावशेष
खुरई : दुर्ग
गढ़ पेहरा : डांगी दुर्ग
गढ़ा कोटा : डांगी दुर्ग
गढ़ी मोरीला : प्रागैतिहासिक अवशेष
गढ़ौला : मुसलमानी दुर्ग
गरोला : दुर्ग
गौरझामर : दुर्ग
जयसिंहनगर : दुर्ग
देवरी : प्रागैतिहासिक अवशेष, कलचुरी शिल्पावशेष, दुर्ग
दुगह : दुर्ग
धामोणी : मुसलमानी दुर्ग
नरयावली : दुर्ग
पिठोरीया : दुर्ग
बरगांव : कलचुरी अवशेष
बरेठा : दुर्ग
बरोदिया कलाँ : दुर्ग
बहुतराई : प्रागैतिहासिक अवशेष
बिनैका : दुर्ग
बिल्हरा : दुर्ग
बुरखेरा : प्रागैतिहासिक अवशेष
बुरधाना : प्रागैतिहासिक अवशेष
मरीया डोह : मुसलमानी दुर्ग
मालथोन : दुर्ग
मोर : प्रागैतिहासिक अवशेष
रमना : गोंड दुर्ग
राहतगढ़ : मुसलमानी दुर्ग
राजवंश : दुर्ग
रीठी : कलचुरी शिल्पावशेष
रेहली : दुर्ग
शहागढ़ : मुसलमानी दुर्ग
सलैया : कलचुरी शिल्पावशेष
सागर : कलचुरी शिल्पावशेष तथा लेख, मराठी दुर्ग
सानोदा : दुर्ग
हिरापुर : दुर्ग

८ दमोह ज़िला

इटौरा : दुर्ग
कनवारा : दुर्ग
कानोड़ा बारी : कलचुरी शिल्पावशेष
कुण्डलपुर : जैन तीर्थ, गुप्तकालीन तथा कलचुरी काल के शिल्पावशेष
गुगरा कलाँ : दुर्ग
जटाशंकर : दुर्ग
तेजगढ़ : दुर्ग
दमोह : प्रागैतिहासिक अवशेष, दुर्ग
नरसिंहगढ़ : दुर्ग
नांदचान्द : कलचुरी शिल्पावशेष
नोहटा : कलचुरी देवालय शिल्पावशेष
पंचमनगर : दुर्ग
पुरणखेडा : दुर्ग
फतेहपुर : प्रागैतिहासिक चित्रित शिला
बालाकोरी : दुर्ग
बांदकपुर : कलचुरी शिल्पावशेष, देवालय
बुरचेका : प्रागैतिहासिक अवशेष
मदनपुर : कलचुरी शिल्पावशेष
मरियाडोह : दुर्ग
सकौर : गुप्त सिक्कों का प्राप्तिस्थान
सिंगोरगढ़ : दुर्ग
सिमरा : कलचुरी शिल्पावशेष, शिलालेख
सिंग्रामपुर : प्रागैतिहासिक अवशेष
राजनगर : दुर्ग
रामनगर : दुर्ग
रानगीर : दुर्ग

९ मांडला ज़िला

कुकर मठ : मध्ययुगीन जैन (?) देवालय

रामनगर : गोण्ड दुर्ग

१० सिवनी ज़िला

आदेगांव : मराठी दुर्ग
छपारा : मराठी दुर्ग
घनसोर : कल्चुरी शिल्पावशेष
लखनादौन : प्राचीन मणी
दिघोरी : गुहा
सरेखा : वृत्ताकार शवस्थान
सोनगढ़ : दुर्ग
सोनपुर : क्षत्रप सिक्कों का प्राप्तिस्थान
सिवनी : क्षत्रप सिक्कों का प्राप्तिस्थान; जैन केन्द्र

११ होशंगाबाद् ज़िला

उमरिया : प्रागैतिहासिक अवशेष
खिडीया : प्राचीन मुद्राओं का प्राप्तिस्थान
जामुनिया : प्राचीन मुद्राओं का प्राप्तिस्थान
जोगा : दुर्ग
झाँसीघाट : प्रागैतिहासिक अवशेष
झलई : प्रागैतिहासिक गह्वर
जामुनिया : प्राचीन मुद्राओं का प्राप्तिस्थान
तामिया : प्रागैतिहासिक गह्वर, गुफ़ा
पचमढ़ी : प्रागैतिहासिक गह्वर, गुप्तकालीन लेख, गुफ़ा
बर्मन घाट : प्रागैतिहासिक अवशेष
बागरा : मुसलमानी दुर्ग
बुढ़ीमाई : प्रागैतिहासिक गह्वर, गुफ़ा
भुतरा : प्रागैतिहासिक अवशेष
हरदा : कुषाण तथा गुप्तकालीन सिक्कों का प्राप्तिस्थान
हांडीया : मुसलमानी दुर्ग
होशंगाबाद : प्रागैतिहासिक अवशेष
सोनभद्र : प्रागैतिहासिक गह्वर
सोहागपुर : दुर्ग

१२ नरसिंहपुर ज़िला

चवरपथा, चौरागढ़, धिलवार, बचई : दुर्गों के लिये प्रसिद्ध
नरसिंहपुर : और नर्मदा तटस्थ अन्य क्षेत्र : प्रागैतिहासिक अवशेषों के लिये सुप्रसिद्ध क्षेत्र
भुतरा : प्रागैतिहासिक अवशेष

१३ इलिचपुर ज़िला

इलिचपुर : (प्राचीन नाम अचलपुर) गुप्तकालीन सिक्कों का प्राप्तिस्थान, यादव-काल में सुप्रसिद्ध शहर; मुसलमान-काल में राजधानी
चम्मक : (चर्मङ्क) वाकाटक ताम्रपत्र का प्राप्तिस्थान
गाविलगढ़ : सुप्रसिद्ध मुसलमानी दुर्ग
मंजिरा : गुफ़ा के लिये प्रसिद्ध

१४ बैतूल ज़िला

अटनेर : दुर्ग
अमला : दुर्ग
खेरला : मुसलमानी दुर्ग
खैरी : गुहा
गोपाळतलाई : गुफा
झापळ : गुहा
तिवरखेड : राष्ट्रकूट ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
धानोरा : गुहा
नागझिरी : गुहा
नैआगांव : प्रागैतिहासिक गह्वर
पट्टण : गुप्तकालीन सिक्कों का प्राप्तिस्थान, वाकाटक ताम्रपत्र तथा कल्चुरी सिक्कों का प्राप्तिस्थान
बैतूल : गुप्तों के समकालीन ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
भोपाळी : गुहा
भोंडीया-काफ : प्रागैतिहासिक गह्वर
भैसदेही : दुर्ग
मुलताई : राष्ट्रकूट ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
लालवाडी : गुहा

१५ छिंदवाड़ा ज़िला

दुडीया : वाकाटक ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
देवगड़ : दुर्ग
निलकंठी : राष्ट्रकूट कालीन लेख तथा मध्ययुगीन शिल्पावशेष
सौसर : दुर्ग

१६ रायपुर ज़िला

आरंग : गुप्तोत्तर कालीन जैन देवालय; शरभपुर के सम्राटों के ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
कुरुग : मध्ययुगीन दुर्ग
कागडीह : दुर्ग
कुर्वई : पाण्डव वंशी राजाओं के समकालीन ईंट के देवालय
खलारी : कल्चुरी अवशेष
खरियार : शरभपुर राजाओं के लेखों का प्राप्तिस्थान
खैरताल : कुमारगुप्त के सिक्कों का प्राप्तिस्थान
गड़-फुलझरी : दुर्ग; **गढसिवनी** : दुर्ग
गिधपुरी : दुर्ग
डमरु : दुर्ग
तुरतुरीया : नवीं शताब्दि के बौद्ध अवशेष
तारापुर : आहत-मुद्राओं का प्राप्तिस्थान
दलाल सिवनी : कल्चुरी सिक्कों का प्राप्तिस्थान
देवबालोद : कल्चुरी कालीन अवशेष
दौण्डी : दुर्ग
नारायणपुर : कल्चुरी कालीन देवालय
पेण्ड्राबंध : कल्चुरी लेखों का प्राप्तिस्थान
बायर : आहत मुद्राओं का प्राप्तिस्थान
बोरमदेव : पाण्डव-वंश के समकालीन देवालय
राजीम : पाण्डव, नल वंशीयों के लेखों का प्राप्तिस्थान, समकालीन देवालयों का समूह
रायपुर : शरभवंशीयों के लेखों का प्राप्तिस्थान मध्ययुगीन दुर्ग
सरधा : दुर्ग
भाकरा : दुर्ग
सिरपुर : पाण्डव वंशी राजाओं की राजधानी; ईंट के देवालय शिलालेख, मूर्ति-शिल्प इत्यादि अवशेष
सिङ्गावा : मध्ययुगीन गुफा
सोनाभीर : वृत्ताकार शवस्थान
सोरार : दुर्ग

१७ विलासपुर ज़िला

अकलतारा : आहत-मुद्राओं का प्राप्तिस्थान, कल्चुरी लेख, दुर्ग
अजमिरगढ़ : दुर्ग
अडभार : कल्चुरी अवशेष; दुर्ग
आमोदा : कल्चुरी ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
किरारी : शातवाहन कालीन काष्ट स्तंभ-लेख
कुगडा : कल्चुरी लेख तथा अवशेष
कोटगढ़ : कल्चुरी शिलालेख व अवशेष
कोणी : कल्चुरी लेख व शिल्पावशेष
कोटमी : दुर्ग
कोरबा : गुहा
कोसगई : कल्चुरी शिलालेख तथा शिल्पावशेष, दुर्ग
खरोद : ईंट के देवालय शिलालेख तथा अन्य अवशेष
घोटीया : कल्चुरी लेख
चकरबेढ़ : रोमन सिक्कों का प्राप्तिस्थान
जांजगीर पाली : कल्चुरी देवालय तथा अन्य अवशेष, गुहा
ठठारी : आहत-मुद्राओं का प्राप्तिस्थान
डैकोणी : (प्राचीन नाम वुडुकुनी) कल्चुरी ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
तुम्मान : कल्चुरी-वंश का आद्यस्थान, कल्चुरी शिल्पावशेष
धनपुर : ईंट के मन्दिर
पारगांव : कल्चुरी ताम्रपत्र का प्राप्तिस्थान
पेंडरवा : कुषाण, कल्चुरी तथा यौधेय सिक्कों का प्राप्तिस्थान
पेण्ड्रा : दुर्ग
पौनी : कल्चुरी शिल्पावशेष
बच्छौद : दुर्ग
विलासपुर : आहत-मुद्रा, रोमन सिक्कों तथा कल्चुरी शिल्पावशेष
विलैगढ़ : कल्चुरी लेख, शिल्पावशेष तथा दुर्ग
बुढीखार : शातवाहन कालीन लेख
भगोण्ड : कल्चुरी सिक्कों का प्राप्तिस्थान
मल्लार : कल्चुरी शिल्पावशेष, देवालय
महामदपुर : कल्चुरी लेखों का प्राप्तिस्थान
लाफा : कल्चुरी ताम्रपत्र का प्राप्तिस्थान
रतनपुर : (प्राचीन नाम रत्नपुर) कल्चुरी राजधानी, शिलालेख, शिल्पावशेष, दुर्ग
सरखों : कल्चुरी ताम्रपत्र का प्राप्तिस्थान
सेमरसाल : शातवाहन कालीन शिलालेख
सिवरी नारायण : कल्चुरी शिल्पावशेष, देवालय, शिलालेख, ताम्रपत्र इत्यादि
सोनसारी : कल्चुरी अवशेष, तथा सिक्कों का प्राप्तिस्थान

१८ द्रुग ज़िला

अर्जुनी : प्रागैतिहासिक अवशेष
कन्हीभाडार : वृत्ताकार शवस्थान
कात्राहाट : वृत्ताकार शवस्थान
चिरचोरी : वृत्ताकार शवस्थान
द्रुग : शातवाहन कालीन लेख, वाकाटक ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान, दुर्ग
दोंदी : दुर्ग
धमदा : दुर्ग
बालोद : मध्ययुगीन देवालय
मजगहान : वृत्ताकार शवस्थान
सोरार : वृत्ताकार शवस्थान

१९ अमरावती ज़िला

ऋद्धिपुर : वाकाटक तथा नल राजाओं के ताम्रलेख, तीर्थक्षेत्र
खोलापुर : रोमन पदक का प्राप्तिस्थान, यादव-कालीन अवशेष
धामोरी : कलचुरी सिक्कों का प्राप्तिस्थान
नांदगांव : यादव कालीन शिलालेख तथा वास्तु-शिल्प
बेलोरा : वाकाटक ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
लासुर : हेमाडपंती मंदिर
बडनेरा : दुर्ग

२० अकोला ज़िला

अनसिंग : हेमाडपंती मंदिर
कुटासा : हेमाडपंती मंदिर
कुर्रम : दुर्ग
गोरेगांव : हेमाडपंती मंदिर
तन्हाला : शातवाहन सिक्कों का प्राप्तिस्थान
दहिहंडा : दुर्ग
नरनाळा : मुसलमानी दुर्ग, शिलालेख
निरट : हेमाडपंती मंदिर
पातुर : शातवाहन कालीन गुहा
पाटखेड : हेमाडपंती मंदिर
पांगरा : हेमाडपंती मंदिर
पिंजर : हेमाडपंती मंदिर और लेख
पंचगौहाड : दुर्ग
बार्शी-टाकळी : हेमाडपंती मंदिर, यादवकालीन लेख
बाळापुर : मुसलमानी दुर्ग, शिलालेख
महेशपुर : हेमाडपंती मंदिर
मालेगांव : दुर्ग
माना : दुर्ग
लोहारा : राष्ट्रकूट ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान; मध्ययुगीन सिक्के
व्याला : हेमाडपंती मंदिर दुर्ग
शिसवै : राष्ट्रकूट ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
सांगळूद : राष्ट्रकूट ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
सिंदखेड : हेमाडपंती मंदिर
हिवरखेड : दुर्ग

२१ बुलढाणा ज़िला

अमडापुर : हेमाडपंती मंदिर, यादव कालीन लेख
अंजनी : हेमाडपंती मंदिर
अंत्री : हेमाडपंती मंदिर
कोठाली : हेमाडपंती मंदिर
खामखेड : मध्ययुगीन ताम्रपत्रों का प्राप्तिस्थान
गिरोली : हेमाडपंती मंदिर
गीर्दा : हेमाडपंती मंदिर
चिखली : हेमाडपंती मंदिर
चिंचखेड : हेमाडपंती मंदिर
देऊळघाट : हेमाडपंती मंदिर
दुधा : हेमाडपंती मंदिर
धोत्रा : हेमाडपंती मंदिर
नान्द्रे : हेमाडपंती मंदिर
पिंपळनेर : दुर्ग
ब्रह्मपुरी : हेमाडपंती मंदिर
मढ : हेमाडपंती मंदिर
मासरूळ : हेमाडपंती मंदिर
मेहेकर : हेमाडपंती मंदिर यादव कालीन लेख
म्हसाळे : हेमाडपंती मंदिर
लोणार : हेमाडपंती मंदिर
वडाळी : हेमाडपंती मंदिर
वरवंड : हेमाडपंती मंदिर
वाढवा : दुर्ग
साकेगांव : हेमाडपंती मंदिर

सातगांव : हेमाडपंती मंदिर
सायखेडा : हेमाडपंती मंदिर
सिंदखेडा : हेमाडपंती मंदिर
सेंदुरजना : हेमाडपंती मंदिर
सिंदखेड : हेमाडपंती मंदिर
सोनरी : हेमाडपंती मंदिर

२२ यवतमाल ज़िला

कळमनेर : हेमाडपंती मंदिर
कळम्ब : यादव सिक्कों का प्राप्तिस्थान, गुफ़ा, दुर्ग इत्यादि अवशेष
कुन्हाड : हेमाडपंती मंदिर
जवळगांव : हेमाडपंती मंदिर
जुगद : हेमाडपंती मंदिर
झाडगांव : हेमाडपंती मंदिर
तपोना : हेमाडपंती मंदिर
दाभाडी : हेमाडपंती मंदिर
दुधगांव : हेमाडपंती मंदिर
नेर : हेमाडपंती मंदिर
पाथरोट : हेमाडपंती मंदिर
पांढरदेवी : हेमाडपंती मंदिर
यवतमाल : हेमाडपंती मंदिर
लाक : हेमाडपंती मंदिर
लारखेड : हेमाडपंती मंदिर
लोहारा : हेमाडपंती मंदिर
वरुड : हेमाडपंती मंदिर
वाई : हेमाडपंती मंदिर
सोने वरोना : हेमाडपंती मंदिर
दुर्ग : दुर्ग
रावेरी : दुर्ग
ढोकी : प्रागैतिहासिक अवशेष
परसोरा : प्रागैतिहासिक अवशेष

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१	पहिके हथियरों की	पहिले हथियारों की
३	२२	नर्मदा की के घाटी	नर्मदा की घाटी
३	२९	ज़िलों म	जिलों में
४	१५	गुहाअयो	गुहाश्रयों
१६	११	भंडारा	वर्धा
१८	१०	खेरियार	खरियार
९२	३२	ड्रिंगेरिया	हिंडोरिया

4
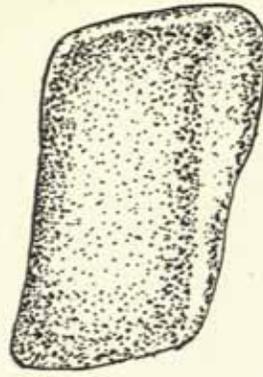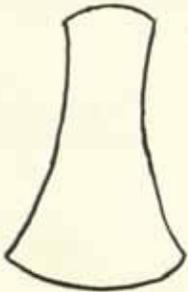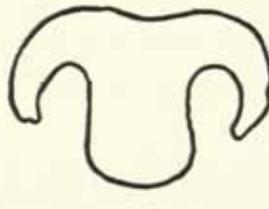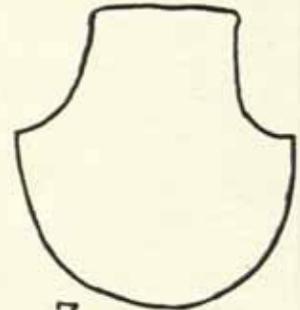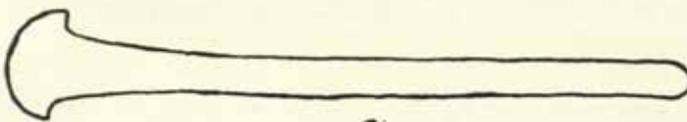
इतिहास-पूर्व काल के हथियार

१ पूर्व-पाषाण कालीन कुल्हाड़ी: होशंगाबाद
३ उत्तर-पाषाण कालीन चर्मकर्षकास्त्र, बुरधाना, सागर
५-७ ताम्रास्त्र, गुँगेरीया, बालाघाट

२ उत्तर-पाषाण कालीन कुल्हाड़ी: होशंगाबाद
४ लघु-पाषाणास्त्र; त्रिपुरी
६ चाँदी की वृषभाकृति, गुँगेरीया
८ ताम्रयुगीन सब्बल, गुँगेरीया
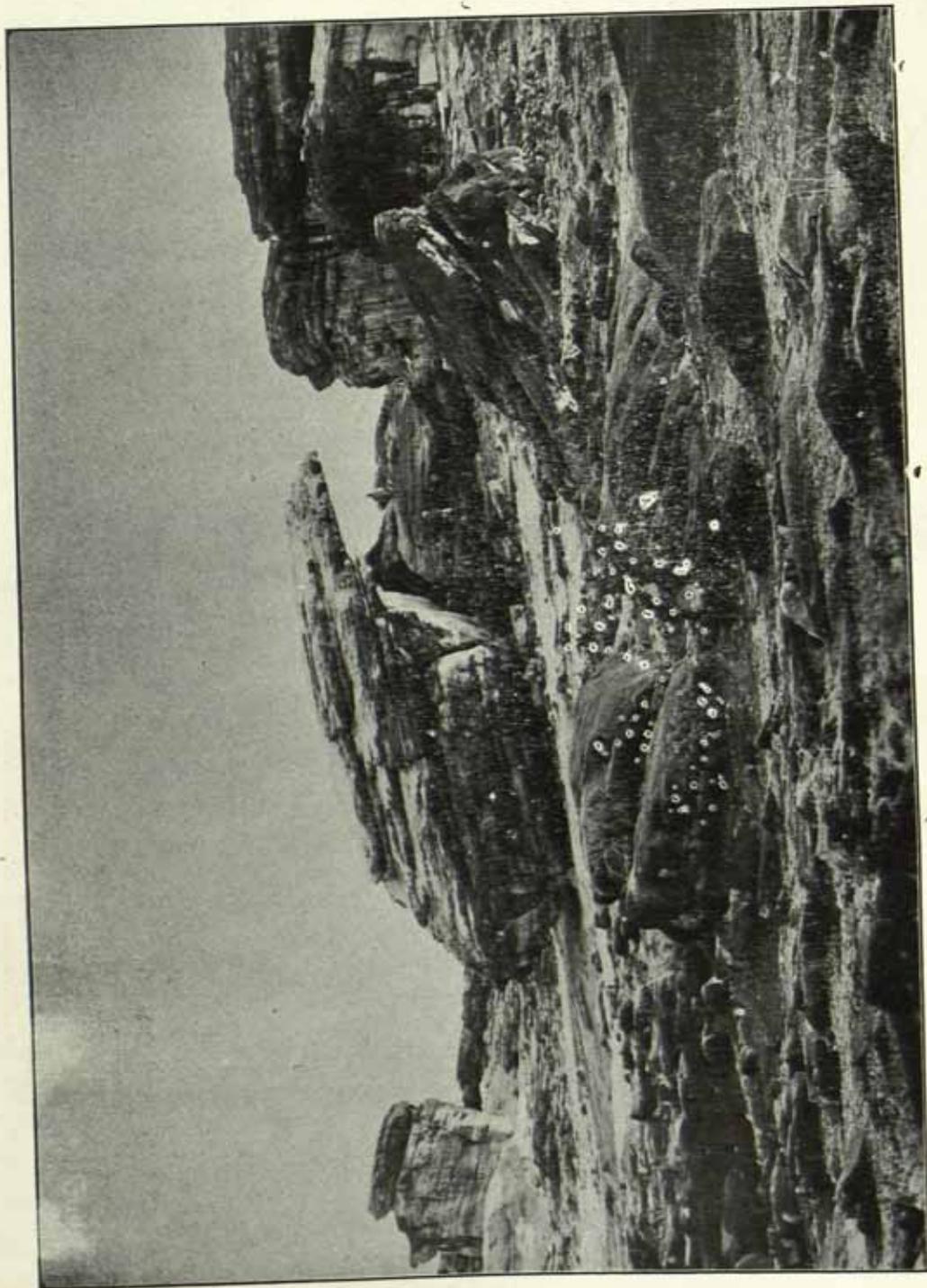
९ चित्रान्वित गह्वर : होशंगाबाद
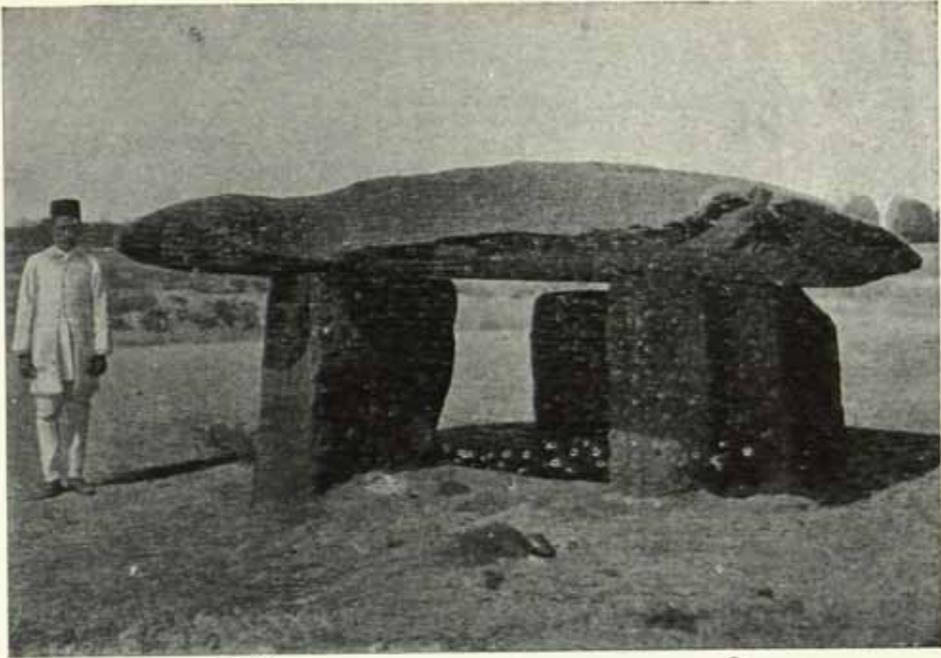
१० बृहत्-पाषाण-निर्मित शव-स्थान : पिंपलगाँव; भंडारा
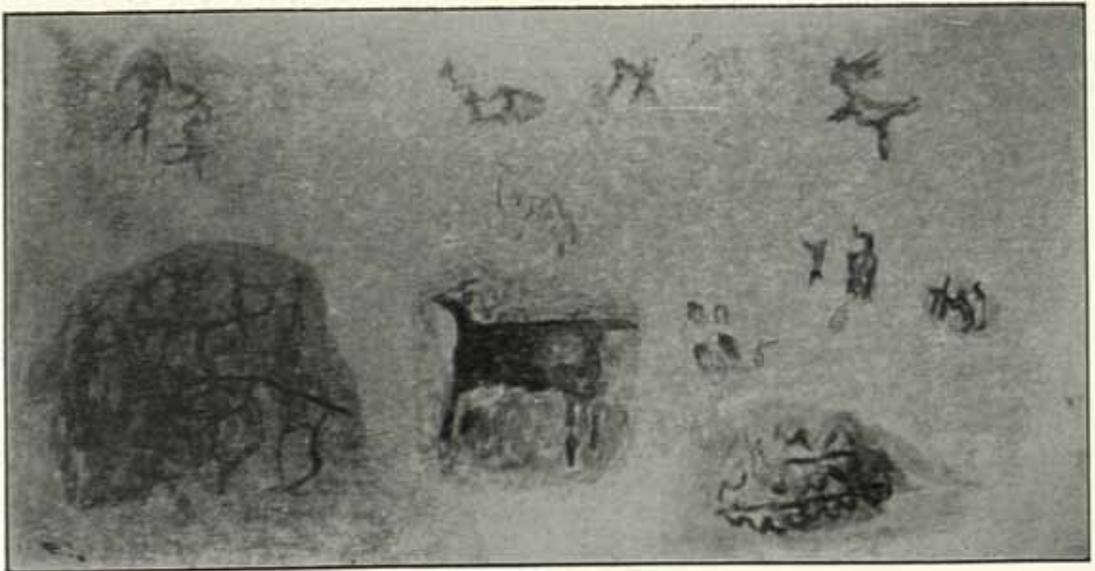
११ सिंघणपुर के गव्हरों में प्राप्त चित्रों के कुछ नमूने

मध्य प्रदेश में प्राप्त होनेवाले सिक्के

(ईसा से पूर्व ३०० से लेकर ई. स. ८०० तक के)

मौर्य काल

१२ आहत–मुद्रा
मौर्य काल

१३ एरण में प्राप्त
धर्मपाल का सिक्का

१४ त्रिपुरी गण–राज्य का
सिक्का

शातवाहन–काल

१५ सिरि सातकर्णी का सिक्का
त्रिपुरी

१६ शातकर्णी सिक्का
तन्हाला

१७ आपिलक का सिक्का
बालपुर

१८ रोमन सिक्का, चकरबेड़ा

१९ रोमन मृण्मय पदक : खोलापुर, अकोला

शातवाहनोत्तर–काल

२० ‘ ... यधन ’ का सिक्का, त्रिपुरी

गुप्त-काल

२१ चंद्रगुप्त की सुवर्ण-मुद्रा : हरदा

२२ चंद्रगुप्त की सुवर्ण-मुद्रा : सकौर

उत्पीड़ितांक मुद्रायें

२३ कुमार गुप्त की मुद्रा, खैरताल

२४-२५ नल भवदत्त वर्मन् की मुद्रायें
एडेंगा, बस्तर

२६ नल वराहराज की मुद्रा,
एडेंगा, बस्तर

२७ प्रसन्नमात्र की मुद्रा
चौगुना आकार

राष्ट्रकूट-काल

२८ इंडो-ससानियन सिक्का
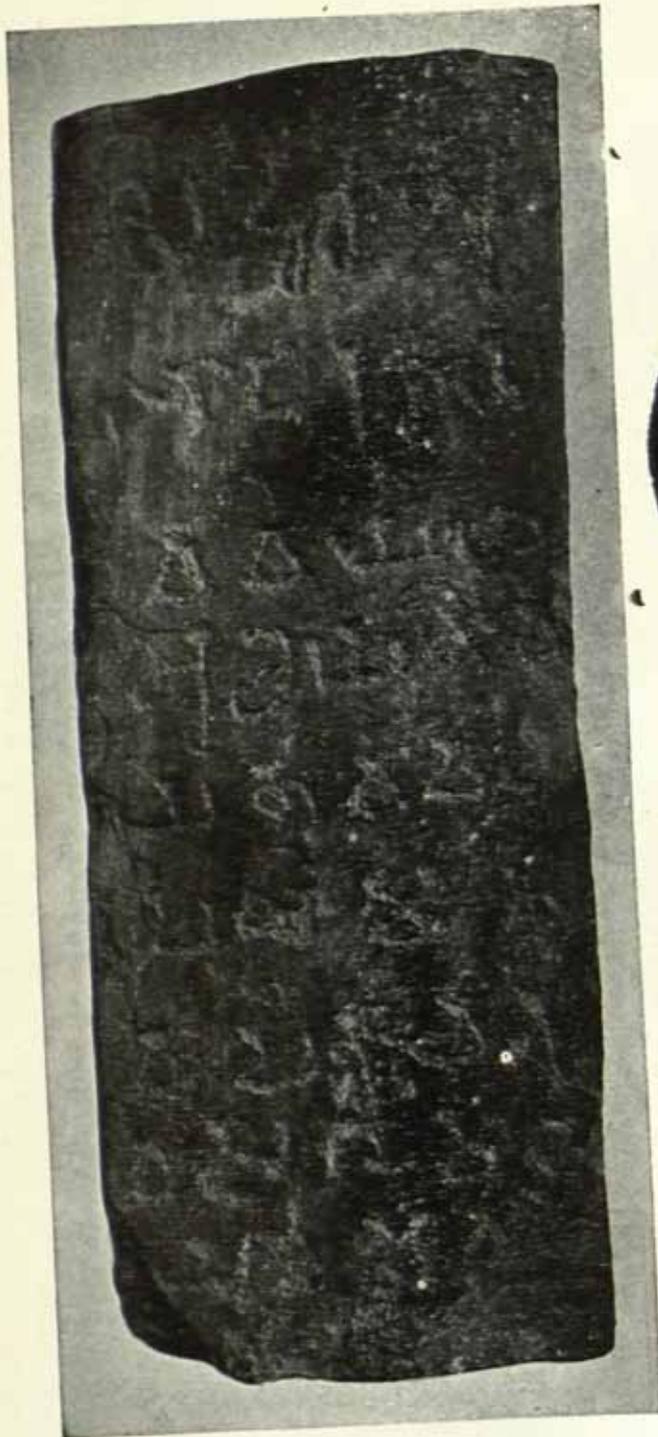
२९ सेमरसाल में प्राप्त शिलालेख
(दूसरी शताब्दी)

३० वाकाटक प्रवरसेन के
ताम्रपत्रों से संलग्न
ताम्रमुद्रा
(५ वीं शताब्दी)

पाठ

वाकाटक-ललामस्य
क्रमप्राप्त-नृपश्रियः
राज्ञः प्रवरसेनस्य
शासनं रिपुशासनम्
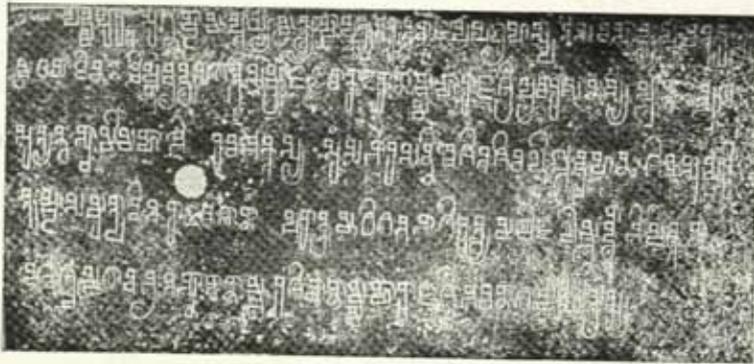
३१ वाकाटक प्रवरसेन का दुग ताम्रपत्र
५ वीं शताब्दी
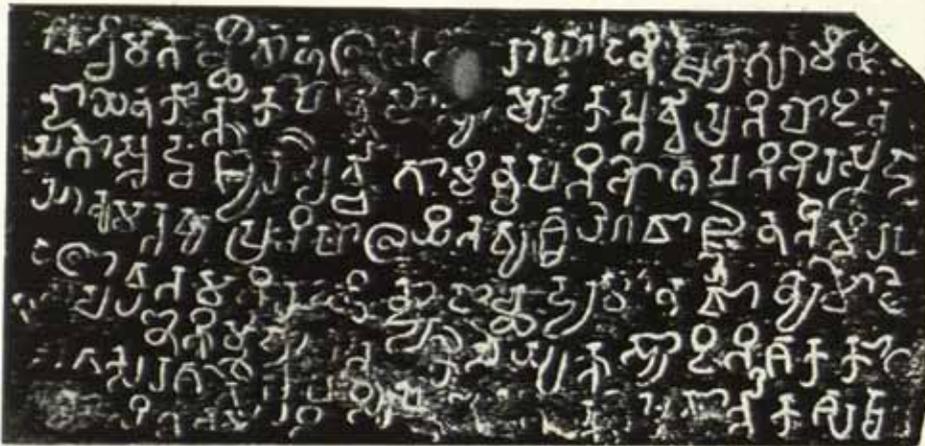
३२ नन्नराज युद्धासुर के पन्ननगर ताम्रपत्र का एक पत्र
शक संवत् ६१५

२३ बघोरा में प्राप्त शिला-लेख और चित्र

२४ यमुना
गुप्त कालीन मंदिर : तिगवाँ, जबलपूर

२५ कलचुरि शिल्प
पुरवा, जबलपुर से प्राप्त
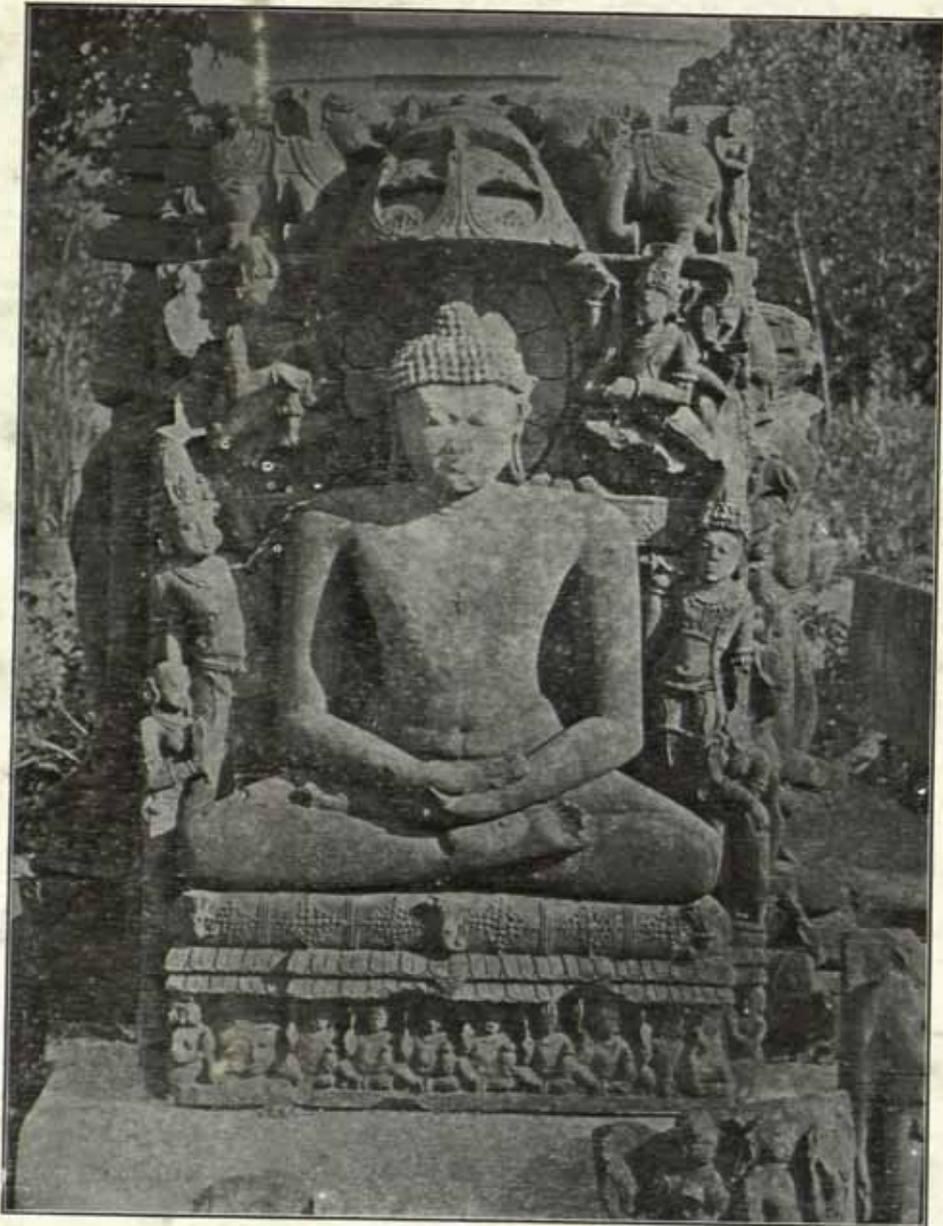
३६ जिन पार्श्वनाथ
कलचुरि शिल्प; जबलपुर में संरक्षित
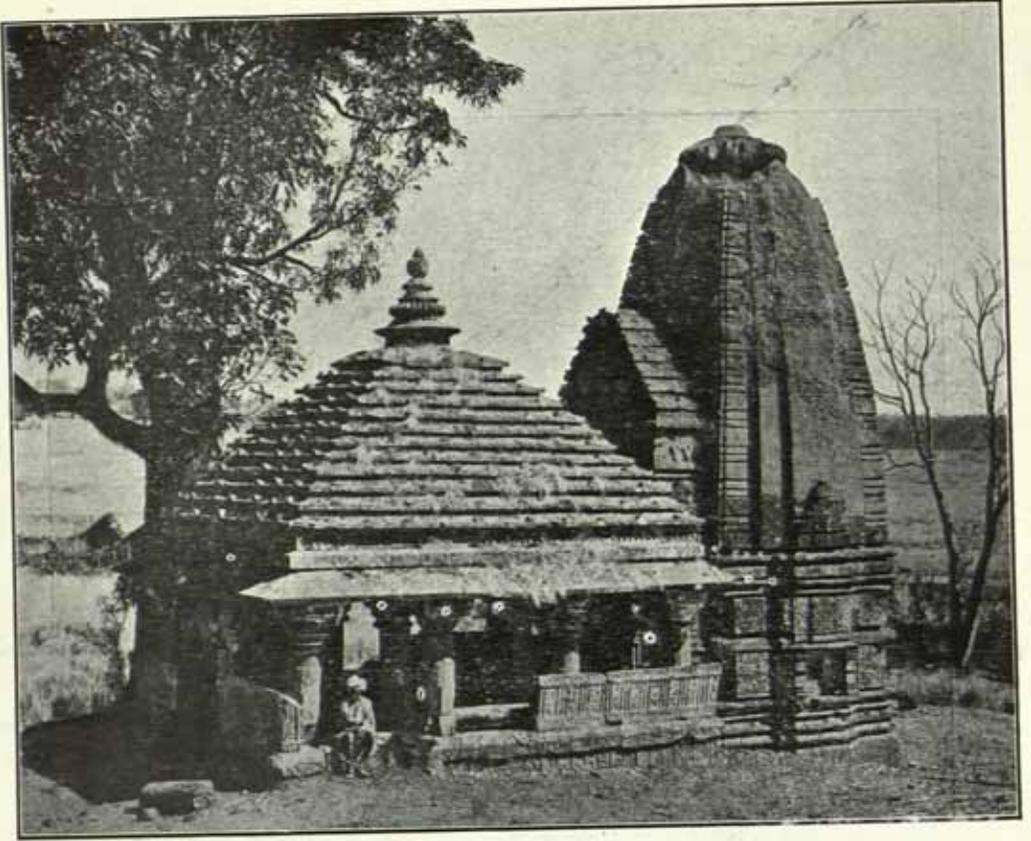
३७ पातालेश्वर देवालय : अमरकंटक

३८ विष्णु मंदिर, नारायणपुर, ज़िला रायपुर

कलचुरि-मुद्रा

३९ गांगेयदेव का सिक्का

४०-४१ जाजल्लदेव के सिक्के

४२-४३ रत्नदेव के सिक्के

४४-४५ पृथ्वीदेव के सिक्के

४६ प्रतापमल्ल का सिक्का
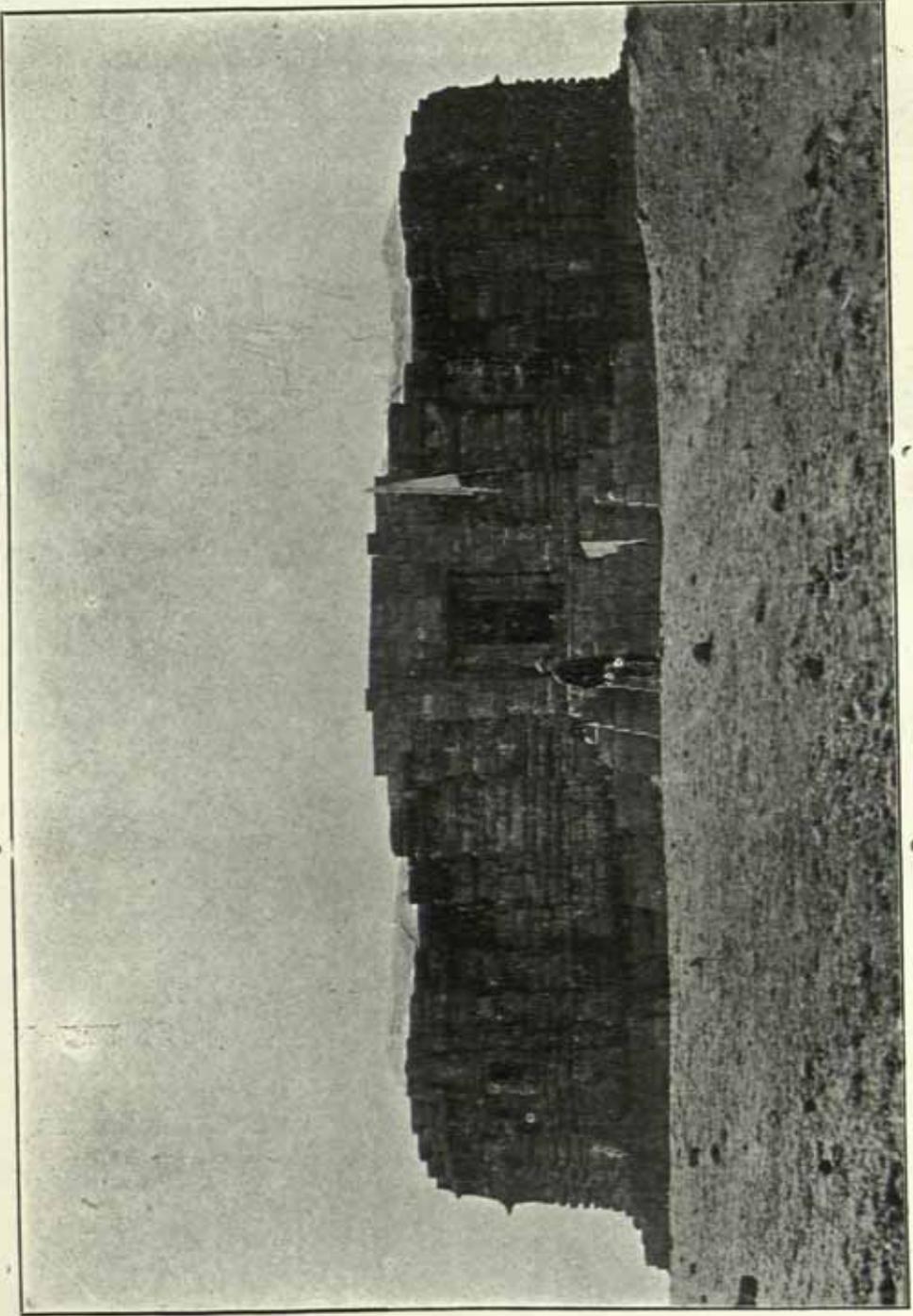
४७ आनंदेश्वर देवालय : लासुर, यादव-काल

४८ यादव रामचंद्र का काटा शिलालेख
शक सम्वत् १२२७

४९ यादव रामचंद्र का पद्मटंक
कलम्ब से प्राप्त

५० बाल केसरी की मुहर (Seal)
बालपुर में प्राप्त
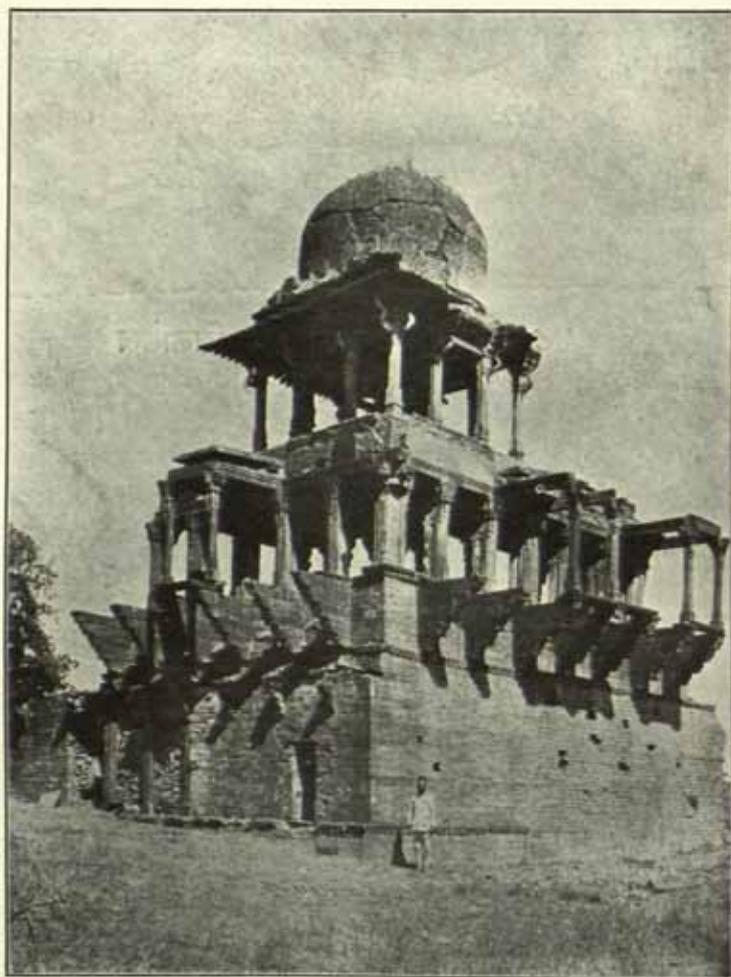
५१ मुसलमानी वास्तु-शिल्प : खिमलासा, सागर

By The Same Author

(i) महाराष्ट्रांतील प्राचीन ताम्रपट व शिलालेख
(Selected Inscriptions from Maharashtra) Rs. 3

(ii) Etched Beads in India Rs. 10

(iii) दक्षिणच्या मध्ययुगीन इतिहासाची साधनें (खंड ४ था) Rs. 5

(iv) Explorations at Karad Rs. 5

(v) Excavations at Brahmapuri Kolhapur : 1945 Rs. 30

(vi) Some Beads from Kondapur Rs. 12

(vii) मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा Rs. 6

(viii) Tripuri Excavation Report : 1952